बिमल मित्र का जन्म 18 मार्च 1912 को कलकत्ता के एक संभ्रांत परिवार में हुआ। 1938 में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम० ए० करने के पश्चात् सरकारी नौकरी में प्रवेश किया, लेकिन यह उन्हें स्वीकार नहीं हुई। 41 वर्ष की आयु में वह स्वतंत्र लेखन में लग गए।

प्रकृति से मिलनसार और मृदुभाषी विमल मित्र की हिन्दी में लगभग 35 रचनाओं के अनुवाद छप चुके हैं। उनके कई उपन्यासों पर सफल हिन्दी-बंगला फिल्में बन चुकी हैं। आपको कई कृतियों पर राजकीय पुरस्कार भी प्रदान किये जा चुके हैं।

शरत् और ताराशंकर वंद्योपाध्याय की भांति विमल मित्र बंगला के वर्तमान उपन्यासकारों में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। नारी मनोविज्ञान हो अथवा किशोर-मन का रेखांकन, वृद्धों का मानसिक संघर्ष हो या युवकों की जिजीविषा, विमल मित्र की लेखनी ने सबका सफलता से चित्रण किया है। मानव-मन के सूक्ष्म अध्ययन की इस अद्भुत क्षमता और प्रतिभा ने ही उनके उपन्यासों को अक्षुण्ण गरिमा प्रदान की हैं। उनकी इसी लम्बी लेखन परम्परा में 'अब किसकी बारी है' प्रस्तुत है।

अब किसकी बारी है ?

अब किसकी बारी है ?

विमल मित्र



राजपाल एण्ड सन्ज़

प्राक्कथन

आप मेरे लिए लिखते हैं,
मैं जनता के लिए लिखता हूं
—विमल मित्र

सुप्रसिद्ध बंगला उपन्यासकार विमलमित्र, महाप्रज्ञ साहित्य के पाठक / प्रशंसक हैं। महाप्रज्ञ साहित्य को पढ़कर उन्होंने कहा—'कवीन्द्र रवीन्द्र के बाद मुझ पर सर्वाधिक प्रभाव है महाप्रज्ञ-साहित्य का। यदि यह साहित्य मुझे पंद्रह वर्ष पूर्व मिलता तो मेरे उपन्यासों की दिशा ही कुछ और होती।' वे आचार्य श्री तुलसी के जन्म-दिवस (24 अक्टूबर, '87) पर अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति के लिए दिल्ली आए और उनके आने में माध्यम बने श्री कन्हैयालाल फूलफगर। उसी दिन रात्रि में युवाचार्यश्री के साथ हुई उनकी बातचीत के कुछ अंश भूमिका के रूप में प्रस्तुत हैं :

विमलमित्र : युवाचार्यश्री ! मैंने आपके साहित्य में एक कथा पढ़ी—प्रेमाल्दी की। मैंने एक समारोह में उसका प्रयोग भी कर दिया। कलकत्ता में मुझसे अनेक मित्रों ने पूछा—आपको यह कथा कहां से मिली ? मैंने उन्हें आपकी पुस्तक 'किसने कहा मन चंचल है' का नाम बता दिया। युवाचार्यश्री ! आपको वह कथा कहां से मिली ?

युवाचार्यश्री : हमने बहुत वर्षों पहले कहीं पढ़ी थी।

विमलमित्र : कितनी विचित्र बात है—दूसरों को हंसाने वाला स्वयं रो रहा है। दूसरों को सुखी बनानेवाला स्वय दु खी है।

युवाचार्यश्री : कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली मे 'प्रेक्षा मेडिटेशन एण्ड मेंटल टेन्शन' विषय पर एक सेमिनार था। एक सुप्रसिद्ध मनोचिकित्सक ने कहा—मैं मानसिक समस्याओं से बहुत पीड़ित हूं। हमें यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ—दूसरों की मानसिक समस्याओं का समाधान करनेवाला स्वय अपनी मानसिक समस्या से परेशान है।

विमलमित्र : मैं प्रायः संतुलित रहने की कोशिश करता हूं। जब कभी थक जाता हूं, आपकी पुस्तकें निकाल कर पढ़ना शुरू कर देता हूं। उससे बहुत शांति मिलती है। आप कथाओं का प्रयोग बहुत वेधक करते हैं। ना-कुछ-सी दिखाई देने वाली कथाओं को आप मर्मस्पर्शी रूप दे देते हैं। (प्रार्थना के स्वर में) मैं आज आपके मुख से एक कहानी सुनना चाहता हूं यदि आपको कोई कष्ट न हो तो।

युवाचार्यश्री : अवश्य! एक बार राजा भोज अपने अंतःपुर में बिना कोई सूचना दिये पहुंच गए। महारानी उस समय किसी से बात कर रही थी। राजा को देखते ही महारानी ने कहा—आओ मूर्ख!

विमलमित्र : ओह! राजा ने क्या जवाब दिया?

युवाचार्यश्री : महारानी के मुख से यह शब्द सुनकर राजा स्तब्ध रह गया। राजा बहुत विद्वान् था। उसने इस शब्द का रहस्य पकड़ने की कोशिश की, किंतु उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया। वह शीघ्र राजसभा में पहुंचा। सभासद आने लगे। उसने आने वाले प्रत्येक व्यक्ति से कहा—आओ मूर्ख! सभासद राजा के इस विचित्र कथन को सुनकर अपमानित-सा महसूस करते लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं सूझता। जब कालिदास आया तो राजा ने उसे भी कहा—आओ मूर्ख! कालिदास कब चुप रहने वाला था!

विमलमित्र : कालिदास ने क्या कहा?

युवाचार्यश्री : उसने उसी क्षण एक संस्कृत श्लोक रच डाला—

खादन्न गच्छामि हसन्न जल्पे
गतं न शोचामि कृतं न मन्ये
द्वाभ्यां तृतीयो न भवामि राजन्
किं कारणं भोज! भवामि मूर्खः॥

राजन्! मैं खाते हुए चलता नहीं हूं, मैं हंसते हुए बोलता नहीं हूं, मैं बीती हुई बात की चिंता नहीं करता हूं, किये हुए का अहंकार नहीं करता हूं। जहां दो बात कर रहे होते हैं वहां मैं बीच में नहीं जाता हूं। फिर बताइए राजन मैं किस कारण से मूर्ख हूं?

राजा को अपनी मूर्खता का तत्काल बोध हो गया।

विमलमित्र : मूर्खता की कमी तो अभी भी नहीं है। लेकिन उससे भी ज्यादा खतरनाक है मूढ़ता। दुनिया में मूढ़ता का ऐसा साम्राज्य छाया हुआ है, जागृति का उदात्त स्वरूप धुंधला बनता जा रहा है। मूर्खता को मिटाने के उपाय अनेक माध्यमों से हो रहे हैं किन्तु मूढ़ता को कम करने के प्रयास नहीं के बराबर हो रहे हैं।

युवाचार्यश्री : हमारी दुनिया का वातावरण ही कुछ ऐसा बन गया है कि वह व्यक्ति को जागने ही नहीं देती। इतनी मूर्च्छा में व्यक्ति जी रहा है, जिसकी कल्पना उसे स्वयं नहीं है। कोई-कोई व्यक्ति मूर्च्छा जैसी बेहोशी को तोड़ने का प्रयत्न करता है, लेकिन दूसरे व्यक्ति उसे बेहोश सिद्ध करने में लगे रहते हैं। मुझे एक व्यंग्य याद आ गया है—

एक व्यक्ति दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया है। उसे बेहोशी की हालत में हॉस्पिटल पहुंचाया गया। डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। वह मरा नहीं था। बेहोश था। उसके अवचेतन मन में डॉक्टर के ये शब्द पड़े। वह घबरा उठा। व्यक्ति की जिजीविषा अत्यन्त प्रबल होती है। मृत्यु के नाम से उसे कंपकंपी छूटने लगी। वह अपनी पूरी शक्ति को बटोर कर धीरे से बोला—डॉक्टर साहब! मैं मरा नहीं हूं, जिन्दा हूं। पास ही कंपाउन्डर खड़ा था। उसने डांटते हुए जोर से कहा—तू ज्यादा जानता है या डॉक्टर ज्यादा जानता है!

विमलमित्र : आपके साहित्य से मुझे एक नया सत्य मिला है। आपने एक जगह लिखा है—सुख और दुःख व्यक्ति के मन की कल्पना है। अनुकूल परिस्थिति आती है, व्यक्ति सुख का अनुभव करता है। प्रतिकूल परिस्थिति आती है, व्यक्ति दुःखी हो जाता है। सुख-दुःख की अवधारणा परिस्थितिजन्य बन गई है। पदार्थजन्य सुख कभी अबाध नहीं होता। सुख-दुःख से परे की स्थिति है प्रसन्नता। वह सुख का वास्तविक एवं अखूट स्रोत है। सुख और दुःख से परे प्रसन्नता एवं आनन्द का दर्शन जो आपने दिया है, वह मेरे लिए सर्वथा नवीन तथ्य है। आनन्दवाद की यह प्रस्थापना अशान्त विश्व को शान्ति का मार्ग दिखा सकती है। श्रीकृष्ण ने कुन्ती से कहा—तुम कुछ मांगो। कुन्ती ने बहुत सटीक उत्तर दिया। उसने कहा—मैं दुःख होने पर ही कुछ मांगूंगी। व्यक्ति सुख में मूढ़ बन जाता है। विलासी एवं ऐय्याश बन जाता है। दुःख में ही उसे प्रभु याद आते हैं। आनन्द की खोज सुखी व्यक्ति नहीं करता। दुःख में डूबा हुआ व्यक्ति ही आनन्द या प्रसन्नता के लिए प्रयत्नशील बनता है।

मैंने आपकी इस आनन्दवाद की अवधारणा का उपयोग भी किया है।

युवाचार्यश्री : आपको सब पढ़ते हैं।

विमलमित्र : आप मेरे लिए लिखते हैं। मैं जनता के लिए लिखता हूं।

युवाचार्यश्री : गम्भीर साहित्य का तो अभाव-सा हो रहा है।

विमलमित्र : वैसे साहित्य को पढ़ने वाले भी कम हो रहे हैं। पता नहीं क्या हो रहा है! पूरी दुनिया क्रिकेट के पीछे लग गयी है। जब क्रिकेट के मैच शुरू होते हैं, व्यक्ति खान-पान सब कुछ भूल जाता है।

युवाचार्यश्री : टी० वी०, क्रिकेट और सिनेमा का भारतीय मानस पर बुरा प्रभाव पड़ा है। गिरते हुए नैतिक मूल्यों के लिए ये कम जिम्मेदार नहीं हैं।

विमलमित्र : मैं अखबार तो थोड़ा-बहुत पढ़ लेता हूं। उसमें कुछ पंक्तियां अच्छी आ ही जाती हैं। उनसे चिन्तन का अवसर मिलता है। टी० वी० देखने वाला देखता ही चला जाता है, उसमें सोचने का अवकाश ही नहीं मिलता।

युवाचार्यश्री : टी० वी० ने व्यक्ति को व्यग्र एवं चंचल बना दिया। आज आदमी एक बिन्दु पर टिक ही नहीं सकता। मनोबल एवं आत्मबल की कमी सर्वत्र महसूस की जा रही है। इसके मूल में, व्यक्ति का किसी भी बिन्दु पर नहीं टिक पाना है।

विमलमित्र : मैंने कहीं पढ़ा है—भगवान् महावीर कई-कई दिनों तक एक आसन में स्थित होकर दिन-रात ध्यान करते थे।

युवाचार्यश्री : हां…। उन्होंने पन्द्रह दिन तक एक स्थान पर खड़े-खड़े ध्यान किया था।

विमलमित्र : क्या महावीर के समग्र जीवन और दर्शन के बारे में आपकी पुस्तक है?

युवाचार्यश्री : हां…।

विमलमित्र : मैं उसे पढ़ना चाहता हूं।

युवाचार्यश्री : 'श्रमण महावीर' ! पढ़कर क्या करेंगे?

विमलमित्र : मैं उसका बंगला भाषा में अनुवाद करूंगा। भारत में पढ़ने के प्रति रुझान केरल में सबसे अधिक है। केरल के अधिकांश नागरिक शिक्षित हैं, पढ़े-लिखे हैं। स्तरीय साहित्य के प्रति वहां की जनता में आकर्षण है। युवाचार्यश्री ! मेरी पुस्तकों की सबसे अधिक मांग केरल में है। मेरी अनेक पुस्तकों का मलयालम भाषा में अनुवाद हुआ है। मेरी अनुमति लिए बिना भी अनेक पुस्तकों के अनुवाद प्रकाशित हो गए। कुछ पुस्तकें चोरी कर दूसरे के नाम से छाप दी गयीं, अनेक पुस्तकों का मैटर चुरा लिया गया। अच्छी पुस्तकों का मैटर चोरी हुए बिना नहीं रहता। यह सोचकर हम उस ओर ध्यान ही नहीं देते हैं। बस अपना काम किये जाते हैं।

कन्हैयालाल फूलफगर : युवाचार्यश्री ! इन्हें बिना मांगे सब कुछ मिल जाता है। प्रकाशक इनके सामने एडवांस बुकिंग के लिए प्रयत्न करते रहते हैं। लेकिन इनके मन में न अधिक लालसा है, न आकांक्षा है। सीधा-सादा जीवन त्याग से अनुस्यूत है।

युवाचार्यश्री : हमारे राजस्थानी में एक छोटा-सा दोहा कहा जाता है—

त्याग किया आवे तुरत,
जे कोई वस्तु जरूर।

आस किया की आसिया
जाती देखो दूर।

त्याग करने से वस्तु तुरंत मिल जाती है। आशा-आकांक्षाओं से उसकी प्राप्ति में विलम्ब हो जाता है। त्यागी अकिंचन व्यक्ति को भारतीय दर्शन में बहुत मूल्य दिया गया।

हम अकिंचन है। न हमारे पास पैसे हैं, न मकान है, न खान-पान की चिन्ता है। पदयात्री है। फिर भी हम इतने विशाल मकानों में रहते हैं कि उनमें दुनिया का बड़े-से-बड़ा अरबपति भी नही रह पाता।

विमलमित्र : उसका मूल कारण अनाशंसा है। आपके कोई आकांक्षा या इच्छा नही है, लालसा नही है—इसलिए यह सब सम्भव बनता है। सामान्य व्यक्ति लालसा, माया, वासना आदि से मुक्त नही हो सकता। वह तो उनसे मुक्ति की कोशिश में प्रायः अधिक फंस जाता है।

युवाचार्यश्री : कुछ वर्ष पूर्व प्रेक्षा-ध्यान शिविर में बंगाल के एक व्यक्ति आये थे—मिस्टर दत्ता। दस दिन के शिविर के बाद मे उन्होंने इतना विकास किया कि सारे सांसारिक सुख फीके लगने लगे। साधना के बाद उन्होंने अपनी पत्नी से कहा—'माया! तुम महामाया हो। मैं तुम्हे लाया। अब तुम मेरे लिए रास्ता छोड़ दो।' बड़ी विनम्रता से उसे राजी कर साधना में लग गया। वह निरंतर दो वर्षों से प्रेक्षा-ध्यान की साधना में लगा हुआ है। उसकी साधना मे वर्तमान स्थिति किसी साधु के लिए भी ईर्ष्या का कारण बन सकती है। एक बार मैंने उनसे पूछा आप हिन्दी अच्छी तरह से नही समझते। प्रवचन आपकी समझ मे कैसे आता होगा? उन्होंने कहा—मैं कान से नहीं, हृदय से सुनता हूं। इसलिए मुझे आपके प्रवचन को समझने मे कोई कठिनाई नही होती।

विमलमित्र : जब कभी मैं लिखते-लिखते थकता हूं, आपकी पुस्तक हाथ मे ले लेता हूं। थोड़ी देर में लेखन के तनाव एवं थकान से राहत मिल जाती है। मैं निरंतर लेखन के लिए नया प्लाट सोचता रहता हू। इसलिए नींद भी नहीं के बराबर आती है। नींद का बुरा असर न पड़े ऐसा कोई सरल उपाय प्रेक्षा-ध्यान में है? जिसे मैं आसानी से कर सकू।

युवाचार्यश्री : सर्वेन्द्रिय संयम मुद्रा इस समस्या से शीघ्र मुक्ति दिलाती है। कितना भी तनाव हो, उलझन हो, भटकाव हो—इसका पांच मिनट प्रयोग किया जाये, व्यक्ति सर्वथा हल्कापन अनुभव करने लगता है। यह बहुत सीधा और लाभदायक प्रयोग है। (विमलमित्र युवाचार्यश्री से उस प्रयोग की विधि सीखते हैं।)

विमलमित्र : यह करना मेरे लिए अत्यन्त आसान है। मैंने आपका बहुत समय लिया है, इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूं।

[प्रेक्षा-ध्यान, जुलाई 1988 से साभार]

मिस्टर ग्रिफिथ बोले, "देखिए, न तो तमाम उपन्यासों को उपन्यास कहा जा सकता है और न तो सभी लेखक लेखक हैं और न ही सभी पाठकों को पाठक कहा जाएगा।"

"क्यों?" मैंने पूछा।

मिस्टर एडमंड ग्रिफिथ अमरीका के एक युवा उपन्यासकार हैं। यहां की पृष्ठभूमि पर एक बृहत् उपन्यास लिखने के मकसद से वे भारत आए हैं। उनके भारत-भ्रमण का पूरा खर्च उनके प्रकाशक ने उन्हें बतौर पेशगी दिया है। भारत के बारे में जितनी भी पुस्तकें अब तक छपी हैं उनमें से तकरीबन सभी वे पहले ही पढ़ चुके हैं। अबकी खुद अपनी आंखों से इस देश को देखने के खयाल से आये हैं। यहां के लोगों से मिलने-जुलने और खासकर यहां के बड़े-बुजुर्गों से बातचीत करने के मकसद से। उनका खास विषय है—पार्टिशन ऑफ़ इंडिया यानी देश का बंटवारा।

यह सब आज से चालीस साल पहले की बात है। राइट ऑनरेबल वाइस काउन्ट सिरिल रेडक्लिफ ने जिस देश का बंटवारा उसे बग़ैर देखे कर दिया था, उसका भी उल्लेख रहेगा उनके उपन्यास में। उसके पहले भारत के इतिहास, 1757 ई० के पलासी युद्ध, ईस्ट इंडिया कंपनी की तरफ़ से 1960 ई० के 28 अगस्त की दोपहर बारह बजे जोब चार्नक का कलकत्ता के बाबूघाट में पदार्पण की बातें रहेंगी। उसके बाद 1947 ई० के 15 अगस्त की बारह बजे रात के बाद ब्रिटिश राजसत्ता का लौट जाना—यही सब विषय होगा मिस्टर एडमंड ग्रिफिथ के उपन्यास की विषय-वस्तु।

मैंने पूछा, "आपने अपने उपन्यास का क्या नाम रखा है?"

मिस्टर ग्रिफिथ ने कहा, "द लॉस्ट कॉलोनी।" यानी अन्तिम उपनिवेश।

हम लोग इंडियन एयरलाइंस के लाउंज में बैठे थे। बीच-बीच में माइक्रोफोन से क्या-क्या घोषणा हो रही है, उसका एक भी अक्षर समझ में नहीं आ रहा है।

मैंने कहा, "आप चूंकि उपन्यास लिख रहे हैं तो उसमें बेशक कोई-न-कोई कहानी रहेगी।"

मिस्टर ग्रिफिथ बोले, "हां; बग़ैर कहानी का कहीं कोई उपन्यास हो सकता है? इतना जरूर है कि कहानी भारत के सम्बन्ध में ही होगी। उसमें हिं-

मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, "देखिए, न तो तमाम उपन्यासों को उपन्यास कहा जा सकता है और न तो सभी लेखक लेखक हैं और न ही सभी पाठकों को पाठक कहा जाएगा।"

"क्यों?" मैंने पूछा।

मिस्टर एडमंड ग्रिफ़िथ अमरीका के एक युवा उपन्यासकार हैं। यहां की पृष्ठभूमि पर एक वृहत् उपन्यास लिखने के मकसद से वे भारत आए हैं। उनके भारत-भ्रमण का पूरा खर्च उनके प्रकाशक ने उन्हें बतौर पेशगी दिया है। भारत के बारे में जितनी भी पुस्तकें अब तक छपी हैं उनमें से तकरीबन सभी वे पहले ही पढ़ चुके हैं। अबकी खुद अपनी आंखों से इस देश को देखने के खयाल से आये हैं। यहां के लोगों से मिलने-जुलने और खासकर यहां के बड़े-बुजुर्गों से बातचीत करने के मकसद से। उनका खास विषय है—पार्टिशन ऑफ़ इंडिया यानी देश का बंटवारा।

यह सब आज से चालीस साल पहले की बात है। राइट ऑनरेबल वाइस काउन्ट सिरिल रेडक्लिफ़ ने जिस देश का बंटवारा उसे बगैर देखे कर दिया था, उसका भी उल्लेख रहेगा उनके उपन्यास में। उसके पहले भारत के इतिहास, 1757 ई० के पलासी युद्ध, ईस्ट इंडिया कंपनी की तरफ़ से 1960 ई० के 28 अगस्त की दोपहर बारह बजे जोब चार्नक का कलकत्ता के बाबूघाट में पदार्पण की बातें रहेंगी। उसके बाद 1947 ई० के 15 अगस्त की बारह बजे रात के बाद ब्रिटिश राजसत्ता का लौट जाना—यही सब विषय होगा मिस्टर एडमंड ग्रिफ़िथ के उपन्यास की विषय-वस्तु।

मैंने पूछा, "आपने अपने उपन्यास का क्या नाम रखा है?"

मिस्टर ग्रिफिथ ने कहा, "द लास्ट कॉलोनी।" यानी अन्तिम उपनिवेश।

हम लोग इंडियन एयरलाइंस के लाउंज में बैठे थे। बीच-बीच में माइक्रोफोन से क्या-क्या घोषणा हो रही है, उसका एक भी अक्षर समझ में नहीं आ रहा है।

मैंने कहा, "आप चूंकि उपन्यास लिख रहे हैं तो उसमें बेशक कोई-न-कोई कहानी रहेगी।"

मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, "हां; बगैर कहानी का कहीं कोई उपन्यास हो सकता है? इतना जरूर है कि कहानी भारत के सम्बन्ध में ही होगी। उसमें हिन्दू, सिख,

मुसलमान, योरोपियन, एंग्लो इंडियन सभी लोग होंगे। सन् 1690 से शुरू कर 1947 ई०—तक़रीबन ढाई सौ साल के ब्रिटिश उपनिवेश के इतिहास के उतार-चढ़ाव का ब्योरा तो रहेगा ही, उसके साथ रहेगी एक लम्बी महत्त्वपूर्ण कहानी। उस कहानी को मैंने पहले ही गढ़ लिया है। अब सिर्फ़ इंडिया का मुआयना करने आया हूं।"

मैंने कहा, "तो फिर लिखने में कितने ही साल लग जाएंगे।"

मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, "सो तो लगेगा ही। कम-से-कम पांचेक साल तो लग ही जाएंगे। तरह-तरह की वजहों से और भी ज्यादा वक़्त लग सकता है। यह तो कोई मशीन का काम नहीं है, हाथ और दिमाग़ का काम है।"

मैंने कहा, "यहां के बंगाली लेखक पूजा-विशेषांकों के लिए साल में चार-पांच उपन्यास लिखते हैं।"

"क्या कह रहे हैं आप !"

मिस्टर ग्रिफ़थ मेरी बात सुनकर चिहुंक उठे।

"साल में चार-पांच उपन्यास ? वे सचमुच क्या उपन्यास हैं या लांग शॉट स्टोरी ?"

मैंने कहा, "वे न तो लांग शॉट स्टोरी हैं और न ही नॉवल। बल्कि कूड़ा-कचरा। ट्रैश।"

"ट्रैश ? तो फिर वे लिखते क्यों हैं ?"

"लिखते हैं पत्र-पत्रिकाओं की खुशामद-मिन्नतें कर। और जो लोग नामी-गिरामी लेखक हैं वे दबाव में आकर अपने नाम क़िराये पर लगाते हैं। उन पत्र-पत्रिकाओं को उस वक़्त ढेर सारे विज्ञापन भी मिलते हैं। इसकी वजह से पत्र-पत्रिकाओं के मालिकों को बहुत फ़ायदा होता है। दरअसल यह सब पैसे की बाज़ीगरी है।"

मिस्टर ग्रिफ़िथ मेरी बात सुनकर अवाक् हो गए। उनकी जबान से एक भी शब्द बाहर नहीं निकला।

मैंने कहा, "आप अपने उपन्यास में किस कहानी को रेखांकित कीजिएगा ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने कहा, "पार्टिशन ऑफ़ इंडिया को अहमियत दूंगा। जिस गांधी ने कहा था कि मेरी लाश पर देश का बंटवारा होगा, उन्होंने एकाएक देश-विभाजन को क्यों स्वीकार कर लिया ? इसके लिए ज़िम्मेदार कौन है ?"

"आपकी राय में ज़िम्मेदार कौन है ?" मैंने पूछा।

मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, "लॉर्ड माउन्ट बेटन। और सिर्फ़ लॉर्ड माउन्ट बेटन ही नहीं, उसकी पत्नी एडविना माउन्ट बेटन भी उतनी ही ज़िम्मेदार है। लेडी माउण्ट बेटन ने ही विधुर जवाहरलाल नेहरू का सिर फेर दिया था। जवाहरलाल नेहरू की जगह सुभाष बोस होते तो बात कुछ और ही होती।"

मैंने पूछा, "आपको यह सब कैसे और किससे मालूम हुआ ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, "वह एक आश्चर्यजनक घटना है। इसे आप को-इंसिडेन्स भी कह सकते हैं। मैं किसी काम से लीबिया गया था। वहां एक पार्टी में जाने पर अचानक मिसेज अहमद सुलताना से जान-पहचान हो गई। वे भारतीय महिला हैं। यह जानकर कि मैं उपन्यासकार हूं, वह खुद आगे बढ़कर आईं और अपना परिचय दिया। उसके बाद एक दिन अपने यहां डिनर पर आमंत्रित किया। बोलीं, आपसे ढेर सारी बातें करनी हैं।'

"उसके बाद ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, "शुरू में मैंने सोचा था, लीबिया की पृष्ठभूमि पर उपन्यास लिखूंगा। मगर मिसेज सुलताना से बातचीत करने के दौरान मैंने अपनी योजना बदल डाली। मिसेज सुलताना ने मुझसे एकाएक कहा, आपने मिस्टर बैशम के द्वारा लिखी गई इतिहास की पुस्तक 'द वंडर दैट वाज इंडिया' पढ़ी है ?

मैंने कहा, "नहीं।"

मिसेज सुलताना ने कहा, "मिस्टर बैशम हमेशा लंदन में ही रहे। 1950 ई० में एक स्पेशल पोस्ट पर कलकत्ता आए थे और उसी साल उनकी मौत हो गई। उनके जैसा इंडोलॉजिस्ट आज के जमाने में कोई नहीं है। उस किताब को पढ़िएगा तो फिर लीबिया के संबंध में किताब लिखने की आपको ख्वाहिश नहीं होगी।"

मैंने पूछा, "आप भारत में पैदा हुई हैं?"

मिसेज सुलताना ने कहा, "हां, पंजाब के गुरुदासपुर में।"

"पंजाब में पैदा हुईं तो फिर आप लीबिया कैसे आईं ?"

मिसेज सुलताना के पति मिस्टर हुसैन अहमद बगल में ही बैठे हुए थे। वे बोले, "मैं एक भारतीय इंजीनियर हूं। मैं भारत में ही नौकरी करता था। यहां एक खासी अच्छी नौकरी मिल गई। इसी वजह से परिवार के साथ लीबिया चला आया।"

मिसेज सुलताना तीन सुन्दर सन्तानों की मां हैं। पति भी अच्छे पद पर हैं। घर-द्वार करीने से सजा-संवार कर रखा है। खासी खुशहाल घर-गृहस्थी है, यह देखकर ही समझ गया। हालांकि वे लोग भारतीय हैं, भारत में ही पैदा हुए हैं फिर भी ऐसा लगा जैसे वे लोग अंग्रेजदां हैं। चाल-चलन, आहार-विहार और लिबास से वेस्टर्नाइज्ड। यानी वे लोग अंग्रेजी तौर-तरीके के पाबन्द हैं।

डिनर की समाप्ति के बाद कॉफी आई। मैं सोफे पर इत्मीनान से बैठकर बातें कर रहा था कि तभी एकाएक मिसेज सुलताना ने कहा, "हो सकता है आपको यह सुनकर आश्चर्य हो कि मैं आधी सिख और आधी मुसलिम हूं।"

मैंने अचकचाकर कहा, "इसके मायने ?"

मिसेज सुलताना ने कहा, "आपने पार्टिशन ऑफ़ इण्डिया का इतिहास पढ़ा होता तो सारा कुछ आपकी समझ में आ जाता। इण्डिया का बंटवारा किया लार्ड माउण्ट वेटन ने। मिस्टर सिरिल रेडक्लिफ़ ने अपनी जिन्दगी में, अपनी आंखों से कभी भारत को नहीं देखा था। लेकिन उसी पर जिम्मेदारी थोपी गई कि वह नक्शे पर छुरी चलाकर, इण्डिया का आपरेशन कर दो हिस्सों में बांट दे। इसका नतीजा यह हुआ कि किसी का रसोईघर भारत के हिस्से में आया और बैठक पाकिस्तान में। आप अगर कभी भारत जाइएगा तो अपनी आंखों से यह देख लीजिएगा। मेरी जन्मभूमि की भी यही हालत हुई।"

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने कहा, "उसके बाद ?"

"उसके बाद भारत में जो कुछ घटित हुआ इतिहास में इसके पहले दुनिया के किसी देश में कभी ऐसी घटना नहीं हुई थी। दुनिया में दो महायुद्ध हो चुके हैं। मगर उसमें भी इतनी मार-पीट, खून-खराबा नहीं हुआ है, इतने सारे लोग मारे नहीं गए हैं। कहा जाता है, चार्ल्स डार्विन ने पहले-पहल कहा था कि आदमी के पुरखे बन्दर थे। 1947 ई० में यह साबित हो गया कि बन्दर अब भी बन्दर ही है, आदमी नहीं हुआ है।"

लेकिन बन्दर क्या सचमुच ही आदमी से घटिया जीव हैं ? मुझे तो लगता है, बात बिल्कुल उल्टी ही है। बन्दर क्या बन्दर को जलाकर मारता है ? बन्दर क्या बन्दर का क़त्ल करता है ? बन्दर क्या बन्दर पर चाकू से वार करता है ?"

लेकिन आदमी ?

"आदमी हैवान हो जाए इसी ख़याल से ब्रिटिश सरकार मिस्टर एटली ने लार्ड माउण्ट बेटन और उसकी पत्नी को भारत भेजा कि भारत को दो हिस्से में बांटकर यहां के इंसान को हमेशा के लिए हैवान बना दो। जिस भारत में उपनिषद् की रचना हुई थी, जो भारत तथागत बुद्धदेव लार्ड चैतन्य, गुरु नानक, हज़रत मुहम्मद का पीठ-स्थान था, उस भारत के लोग स्वतन्त्र होंगे, स्वाधीन होंगे, यह चिन्ता उन्हें बरदाश्त नहीं हो रही थी। और उसी का अंजाम है कि मैं आधी सिख और आधी मुस्लिम हूं।"

यह कहकर मिसेज सुलताना चुप हो गईं। मिस्टर ग्रिफ़िथ ने पूछा, "कैसे ?"

यह एक अजीब ही दास्तान है कि कोई महिला एक ही साथ कैसे सिख और मुसलमान दोनों हो सकती है ! कभी दो, अलग-अलग धर्मों में आस्था रखने वाले लोग एक साथ अगल-बगल अमन-चैन से वास करते थे, एक-दूसरे से प्यार-मुहब्बत करते थे, जैसे एक-दूसरे के सगे-संबंधी हों। लेकिन एक-दूसरे के मजहब में दखलन्दाजी नहीं करते थे। सिख धर्म के अनुयायी, बैशाखी त्योहार में गुरुद्वारा जाकर पूजा-उपासना करते थे, मुसलमान शबे बरात के दिन मस्जिद में जाकर अजान देने के बाद सबको हलुए का प्रसाद बांटते थे। ऐसे मुल्क में एक मुसलमान

महिला कैसे आधा सिख हो सकती है ?

मिसेज सुलताना बोली, "हो सकती है।"

"कैसे ?"

मिसेज सुलताना ने कहा, "1947 ई० में यह असम्भव सम्भव में बदल गया था।"

"क्यों ?"

मिसेज सुलताना ने कहा, "आप लोगों ने इसे बर्दाश्त नहीं किया था, इसीलिए सम्भव हुआ था।"

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने कहा, "हम लोगों ने ? इसका मतलब ?"

"आप लोग कहने का तात्पर्य है, अमरीकी सरकार और आप लोगों के जिगरी दोस्त ब्रिटिश सरकार ने।"

कहते-कहते मिस्टर ग्रिफ़िथ चुप हो गए। उसके बाद बोले, "मैंने अफ्रीका पर उपन्यास लिखना चाहा था, उसके बदले अब भारत पर लिखना शुरू किया है। दर्शन सिंह और हसीना की कहानी।"

मिसेज सुलताना बोली, "वे लोग ही मेरे अब्बा और अम्मीजान थे। मेरे अब्बा सिख थे और अम्मी मुसलमान। मगर एक सिख से एक मुसलमान औरत की शादी कैसे हुई, यह एक अजीब ही वारदात है। मैं उसी वारदात का बयान करूंगी। आप उपन्यास का रूप दे सकते हैं। मगर इसके पहले मुल्क के बंटवारे का इतिहास अच्छी तरह पढ़ना होगा।"

ग्रिफ़िथ ने कहा, "कैसे जानकारी हासिल होगी ?"

मिसेज सुलताना ने कहा, "मुझे कैसे जानकारी हासिल हुई ? मैं तब पैदा नहीं हुई थी। मैंने जिस उपाय से जानकारी हासिल की है, आपको भी वैसे ही करना होगा। इस संबंध में हजारों किताबें लिखी जा चुकी हैं। अभी भारत की जनसंख्या सत्तर करोड़ है और उस समय हमारे अविभाजित भारत की जनसंख्या भी लगभग इतनी ही थी। हम लोगों के देश में कितने ही प्रकार की संस्कृतियां, धर्म और भाषाएं हैं। ऐसे देश का बंटवारा करना क्या आसान काम था ? आप लोगों के राइट आनरेबल सिरिल रेड क्लिफ़ नक्शे पर छुरी चलाकर, देश को दो टुकड़ों में बांटकर निश्चिन्त हो गए। लेकिन उन्होंने यह जानने की कोशिश नहीं की कि इस मुल्क के करोड़ों लोगों को आजादी के लिए क्या कीमत चुकानी पड़ी है।"

पूरे मुल्क में तब विस्थापितों के शिविर खड़े हो गए थे। जो लोग कभी राज-महलों में रहा करते थे, उन्हें वैसे शिविरों में आकर वास करना पड़ा जहां न तो

रोशनी थी और न ही शौचालय। जहां पीने के पानी के लिए घण्टों तक लाइन लगाकर खड़ा रहना पड़ता था।

उसी क़िस्म के कैम्प के सामने एक सिख की निगाह जब पुलिस के एक आदमी पर पड़ी तो वह दौड़ता हुआ उसके करीब पहुंचा। बोला, "सिपाही जी, मुझे एक बात बता सकते हैं ?"

सिपाही ने पूछा, "क्या ?"

सिख ने कहा, "बता सकते हैं कि मुझे अपनी सरकार से कहां मुलाक़ात हो सकती है ?"

सिपाही ने पूछा, "क्यों, तुम सरकार की खोज क्यों कर रहे हो ?"

सिख ने कहा, "मैं हिसाब का यह पर्चा सरकार को दूंगा।"

"किस चीज़ का हिसाब है ?"

सिपाही ने देखा, एक मैले कागज पर कुछ लिखा हुआ है।

सिख ने कहा, "इसमें मेरी मुकम्मल जायदाद का ब्योरा लिखा हुआ है। अपना रिहायशी मक़ान, खेत-खलिहान, दो भैंस, दो गाय। सारा कुछ अपने गांव में छोड़कर चला आया हूं। उसकी कुल क़ीमत है साढ़े चार हजार रुपये। सरकार ने कहा था, हरेक को अपनी छोड़कर आई हुई जायदाद का मुआवजा मिलेगा। इसी वजह से मैंने अपनी कुल सम्पत्ति का ब्योरा लिखकर रख लिया है। सरकार कहां मिलेगी, आप बता सकते हैं सिपाही जी ?"

एक दिन एक पंजाबी विस्थापितों की एक स्पेशल ट्रेन पर सवार होकर दिल्ली की तरफ़ आ रहा है। वह हर क्षण रो रहा है। उसकी रुलाई किसी भी तरह रुकने का नाम नहीं ले रही है। ट्रेन का मिलेटरी गार्ड उससे पूछता है, "तुम रो क्यों रहे हो सरदार जी ?"

सरदार जी ने कहा, "मेरा सारा कुछ तहस-नहस हो गया गार्ड साहब ! मैं बर्बाद हो गया !"

गार्ड साहब ने पूछा, "किन-किन चीजों से हाथ धोना पड़ा ?"

सरदार जी ने कहा, "किस चीज से हाथ नहीं धोना पड़ा है, यही पूछिए गार्ड साहब। मेरे बाल-बच्चे, बीवी, मक़ान, गाय-भैंस कुछ भी नहीं बचे। सबको आग में झोंककर जला दिया गया। मेरे पास अब कुछ नहीं है—सिवाय चन्द रुपयों और अपनी जान के।"

गार्ड साहब ने पूछा, "तुम्हारे पास कितने रुपए हैं ?"

सरदार जी ने कहा, "ज़्यादा नहीं, सिर्फ़ पांच लाख।"

रुपए की राशि के बारे में सुनकर गार्ड साहब चौंक पड़ा।

क्रोध-घृणा और रक्तपान का जो इतिहास उन दिनों दिखाई पड़ा था, उसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में सम्भवतः किसी भी देश को देखनी नहीं पड़ी है। चंगेज खां और नादिरशाह उसके सामने नगण्य हैं। वे लोग अगर इस बीसवीं सदी के आदमी होते तो वे भी इस हैवानियत को देखकर चकित हो जाते। उस इतिहास में इतनी निर्ममता, निष्ठुरता और खून की खरीद-बिक्री का सिलसिला चलता रहा है।

उन दिनों के बारे में मुझे कुछ भी नहीं मालूम, क्योंकि तब मैं वहां नहीं थी। मेरा जन्म नहीं हुआ था। मैं गुरुदासपुर के बारे में बताने जा रही हूं।

गुरुदासपुर नए हिन्दुस्तान की सरहद पर स्थित एक जगह है। लोग-बाग खेती-बारी कर जिन्दगी बसर करते हैं। जिसके पास जगह-जमीन है, वही बड़ा आदमी है। यहां के किसान खेतों में गेहूं, धान, चना और बाजरे उपजाते हैं। दुनिया में कहां क्या हो रहा है, कौन आदमी किस देश का राजा या राष्ट्रपति है, इस संबंध में वे माथा-पच्ची नहीं करते। सिर्फ इतना ही जानते हैं कि कितनी बारिश होने से गेहूं की फसल कितनी होती है और कितने क्विंटल पैदावार होगी तो उसके एवज में कितने पैसे मिलेंगे। इससे ज्यादा कोई सोचते नहीं और न ही सोचना चाहता है।

ऐसे ही माहौल में दर्शन सिंह अपनी खेतीबारी के काम-काज की देख-भाल कर रहा था। जब खेत में फ़सल पक जाती है तो बाहर से खेतिहर मजदूर मगाने पड़ते हैं। फसल कट जाने के बाद मजदूरों की कोई ज़रूरत नहीं पड़ती। वैसे में वे लोग वहां से चल देते हैं।

उस समय दोपहर ढल चुकी थी। दूर से दर्शन सिंह पर नजर पड़ी तो अजायब सिंह उसके करीब आया। बोला, "अब तक खेत पर ही क्यों हो भाई ?"

दर्शन सिंह बोला, "खेतिहार मजदूर किस तरह काम कर रहे हैं, यही देख रहा हूं।"

अजायब सिंह बोला, "अब ज्यादा देख-रेख मत करो भाई, घर चले जाओ।"

"क्यों ?"

अजायब सिंह बोला, "गांव में क्या-क्या हुआ है, तुम्हें मालूम नहीं ?"

दर्शन सिंह को कुछ भी पता नहीं है। बोला, "नहीं, मुझे कुछ भी सुनने को नहीं मिला है। गेहूं की दर में क्या गिरावट आ गई है ?"

अजायब सिंह ने उसे धिक्कारते हुए कहा, "अरे, तुम तो ऐसे हो, जिसे किसी खबर से कोई वास्ता ही नहीं। तुम तो बस खेती के नशे में ही मशगूल रहते हो। उधर कितना जबर्दस्त काण्ड हो गया !"

"क्या ?"

अजायब सिंह ने कहा, "अरे, अंग्रेज हमारे मुल्क को छोड़कर चले गए। अब हमारे मुल्क के राजा जवाहरलाल नेहरू हो गए।"

"राजा ? जवाहरलाल ? कौन-से जवाहरलाल ? हमारे गुरुदासपुर के सन्त जवाहरलाल ?"

अजायब सिंह ने कहा, "तुम जैसे उजबक से बातें करना बेकार हैं। अगर भला चाहते हो तो अभी तुरन्त घर चले जाओ। मुल्क में चारों तरफ़ खतरे का माहौल पैदा हो गया है।"

"किस बात का खतरा ?"

"अरे, तुमसे बातें करना ही फिज़ूल है। हमारा गांव किस रसातल में चला गया, इसका तुम्हें पता है ?"

"क्यों ? हमारे गांव में क्या हुआ ?"

अजायब सिंह तब अपने घर की तरफ़ जाने को क़दम बढ़ा चुका था। उसके सामने भी मुसीबत का पहाड़ है। उसे भी अपना घर-बार संभालना है। इस बुड्ढे के साथ खड़े-खड़े बातें करने का उसके पास वक़्त नहीं है। वह और कुछ बोले बग़ैर लम्बे क़दम रखता हुआ अपने घर की ओर चल दिया।

दर्शन सिंह वहां बहुत देर तक खड़ा रहा। बहुत देर तक आसमान की ओर ताकता रहा। बदली छाएगी या नहीं, यही देखता रहा। थोड़ी-सी बारिश और हो जाती तो गेहूं के पौधे लहलहा उठते।

एकाएक दर्शन सिंह ने देखा, बहुत दूर सड़क पर कुछ लोग तेज़ रफ़्तार से दौड़ रहे हैं। कहीं कुछ-न-कुछ ज़रूर हुआ है। वरना सभी इतनी घबराहट में क्यों होते ? बात क्या है ?

उसने चिल्लाकर पूछा, "भाइयो, क्या हुआ है ? तुम लोग भाग क्यों रहे हो ?"

एक व्यक्ति ने मुड़कर दर्शन सिंह की ओर देखा और भागते हुए कहा, "दर्शन सिंह, तुम अब भी खेती के काम-काज में मशगूल हो ? अरे, पूरे हिन्दुस्तान में आग की लपटें फैल गई हैं।"

"आग कहां लगी है ?"

"पूरे हिन्दुस्तान में।"

"यह क्या ! किसने आग लगा दी ?"

"अंग्रेजों के सिवा और लगाएगा ही कौन ?"

दर्शन सिंह हमेशा अदरक का व्यापारी रहा है, उसे जहाज़ से वास्ता ही क्या ? उसके पास उतना वक़्त ही कहां है ? अभी वह खेत-खलिहान की देख-भाल करे तो यही उसके लिए अच्छा है।

लोगों के हुजूम ने दौड़ लगाते हुए कहा, "भाग जाओ दर्शन सिंह, जल्द-से-जल्द भाग जाओ।"

दर्शन सिंह ने कहा, "साफ-साफ बताओ न, क्या हुआ ? हुआ क्या है ?"

उन लोगों ने दौड़ लगाते हुए कहा, "अगर जान बचानी है तो फौरन घर भाग जाओ। वरना तुम्हारा गला काट डालेंगे, प्राण ले लेंगे। पूरे हिंदुस्तान में गड़बड़ी का माहौल है।"

फिर भी दर्शन सिंह की समझ में कुछ नहीं आया।

पूछा, "किसने गड़बड़ी पैदा की ?"

"अंग्रेजों ने।"

"अंग्रेजों ने क्यों गड़बड़ी पैदा की ?"

"हिंदुस्तान-पाकिस्तान हो गया। देश को दो टुकड़ों में बांट दिया।"

"किसने देश को दो टुकड़ों में बांट दिया ?"

अब इस बेवकूफ से बातें करने में वक़्त जाया करना व्यर्थ समझ कर लोगों का हुजूम जिस ओर बढ़ रहा था, उसी ओर चल दिया।

फिर भी दर्शन सिंह समझ नहीं सका। उसने पूरी ज़िंदगी इसी गुरुदासपुर में बिता दी है। खेत-खलिहान के बारे में ही अपना सिर खपाता रहा है। किसी समय उसके मां-बाप थे। उनके मरने के बाद तमाम जगह-जमीन-जायदाद के इर्द-गिर्द ही उसका जीवन चक्कर काटता रहा है। भानजे और भानजिया बहुत दूर वास करते हैं। उनमें से कोई भी दर्शन सिंह की खोज-खबर नहीं रखता है, और न ही दर्शन सिंह उनसे कोई संबंध रखता है। उसकी ज़िंदगी तो आराम से ही गुज़र रही है। काम-काज के भार से शादी-ब्याह करने का उसे वक़्त ही नहीं मिला है। देखते-देखते उसने ज़िंदगी के बहुत सारे वर्ष अकेलेपन में ही बिता दिए हैं। बाक़ी ज़िंदगी भी इसी तरह बीत जाएगी। उसके बाद जब उसकी मौत होगी तो हो सकता है उसके भानजे और भानजिया इस जगह-जमीन और जायदाद पर अपना कब्जा जमाएं।

दर्शन सिंह अलबत्ता इन बातों पर बहुत ज्यादा सोचता-विचारता नहीं है। आने वाले वक़्त की बात भविष्य में सोची जाएगी। अभी जिस काम की ज़िम्मेदारी उसके कंधे पर पड़ी है, उसे वह मन लगाकर करता जाएगा। किसी दूसरी बात की ओर ध्यान न देना ही उसके लिए श्रेयस्कर है।

घर की तरफ जाते-जाते माथे के ऊपर का सूरज क्रमशः पश्चिम की ओर बढ़ने लगा। अब वह घर के पास जाकर दरवाज़े का ताला खोलकर अंदर घुसेगा। वहां जाकर वह पगड़ी उतारेगा और तौलिया लिए कुएं की तरफ़ जाएगा। उसके बाद कुए का ठंडा पानी सिर पर डालते ही उसकी सारी हरारत दूर हो जाएगी।

अकस्मात् कहीं से बहुत सारे लोगों की चिल्लाहट आकर उसके कानों से

टकराई—"पकड़ो, पकड़ो···।"

दर्शन सिंह ठिठककर खड़ा हो गया। कौन? कहां? किस तरह के लोग चिल्ला रहे हैं?

दर्शन सिंह ने एक वार चारों तरफ़ निगाह दौड़ाई। इस ओर झाड़ी-झुरमुट हैं और पीछे की तरफ़ खेत ही खेत हैं। दूसरी ओर पेड़ के वीच झाड़-झंखाड़ उग आए हैं। कहीं एक भी आदमी दिखाई नहीं पड़ा।

अचानक एक जनाना आवाज़ सुनाई पड़ी—"वचाओ, मुझे बचाओ।"

अब चुपचाप खड़ा नहीं रहा जा सकता है। दर्शन सिंह आवाज़ के केन्द्र को अपना लक्ष्य वनाकर आगे वढ़ने लगा।

अचानक एक आश्चर्यजनक घटना घटी।

एक लड़की दौड़ती हुई आई और दर्शन सिंह की वांहों में लिपट गई और कहने लगी, "मुझे बचा लो, मेरी जान वचा दो सरदार जी···।"

इस आकस्मिक घटना से दर्शन सिंह हतप्रभ जैसा हो गया है। मगर वह असली वात की जानकारी हासिल करे कि इसके पहले ही एक आदमी चाकू नचाता हुआ एकवारगी उसके रू-ब-रू खड़ा हो जाता है।

लड़की दर्शन सिंह के सीने से चिपक जाती है। दर्शन सिंह उसे अपनी बांहों में जकड़े है।

"उसको छोड़ दो, छोड़ दो उसे···"

लोगों के हुजूम ने चिल्ला कर अपने दावे की घोषणा की। वोले, "यह छोकरी मुसलमान की वेटी है। हम उसे क़त्ल करेंगे।"

दर्शन सिंह अकेला है और उसके सामने अनगिनत लोग हैं। वे लोग दर्शन सिंह के जाति-बिरादरी के आदमी हैं।

दर्शन सिंह ने लोगों से पूछा, "उसने क्या कसूर किया है?"

जवाव में उन लोगों ने कहा, "यह मुसलमान है।"

दर्शन सिंह ने कहा, "मुसलमान होना क्या कोई गुनाह है?"

उन लोगों ने कहा, "मुसलमानों ने हमारा खून किया है, मुसलमानों पर नज़र पड़ेगी तो हम भी उनका खून करेंगे।"

लड़की अव भी दर्शन सिंह के सीने में अपना मुंह छिपाए सुबक रही है।

दर्शन सिंह ने कहा, "जिन मुसलमानों ने तुम्हारे भाई-बिरादरी का खून किया है, तुम लोग उनकी हत्या करके वदला लो। इस लड़की ने कोई कसूर नहीं किया है।"

लोगों ने कहा, "वे लोग हमें कहां मिलेंगे? खून-खरावा करने के बाद भाग कर पाकिस्तान चले गए हैं। इस छोकरी को हम छोड़ेंगे नहीं। हम इसकी हत्या कर वदला लेंगे।"

दर्शन सिंह ने हाथ जोड़ कर कहा, "तुम लोग इसे छोड़ दो भाइयो ! इसने जब कोई कसूर नहीं किया है तो फिर बेवजह इसे क्यों सजा दोगे ? देख नहीं रहे कि यह कितनी कमसिन है ?"

न तो ये लोग दर्शन सिंह की बात सुनने को राजी हैं और न ही दर्शन सिंह उनकी बात मानने को तैयार है।

अन्ततः दर्शन सिंह ने कहा, "ठीक है, तुम लोग पहले मेरी हत्या कर दो, उसके बाद इसका खून करना। मेरी हत्या किए बगैर तुम लोग इसे मार नहीं सकते।"

झगड़े के दौरान कोई भी सूझ-बूझ से काम नहीं लेता है। लोहू के नशे के कारण अभी उन पर जुनून सवार हो गया है। चाहे जो हो उन्हें रक्त चाहिए। उसके बाद ही कुछ हो सकता है।

मिस्टर एडमंड ग्रिफिथ ने जरा रुककर फिर कहना शुरू किया : इसके पहले मैं न तो इंडिया आया था और न ही लीबिया गया था। मिसेज सुलताना से मुलाकात न हुई होती तो मुझे इस कहानी की जानकारी भी नहीं हुई होती। मैं जितना ही पुस्तक पढ़ने का सिलसिला आगे बढ़ाता जा रहा हूं, यहां के लोगों से जितना ही मिल-जुल रहा हूं, मेरे अचरज की सीमा उतनी ही बढ़ती जा रही है। कोई राजकीय सत्ता एक पराधीन देश पर इतना जोर-जुल्म कर सकता है, इसकी मैंने कभी कल्पना भी न की होगी।

उसके बाद जरा सुस्ता कर वे फिर से कहने लगे मुझे मालूम था, अमरीका ने वियतनाम पर अकथनीय जोर-जुल्म अत्याचार किया था। ग्रेट ब्रिटेन भी संभवतः साउथ अफ्रीका पर जोर-जुल्म और अत्याचार कर रहा है। सोचता था, उन अत्याचारों की कोई तुलना नहीं हो सकती। लेकिन ग्रेट ब्रिटेन ने भारत पर जो जोर-जुल्म और अत्याचार किया है, वह इतिहास के तमाम अत्याचारों को पीछे छोड़ गया है। जान-बूझकर, सोच-समझ कर ठंडे दिमाग से कोई इस तरह का अत्याचार कर सकता है, यह सोचना भी मुश्किल है। जलियावाला बाग में ओ० डायर ने जितना अत्याचार किया था वह अत्याचार इसके सामने कोई अहमियत नहीं रखता।

एक पर एक ट्रेन आती है और तलाशी लेने पर मिलिटरी वालों को पता चलता है कि उनमें एक भी आदमी जिंदा नहीं बचा है। सारे डिब्बे खून से लथपथ हैं। जहां कहीं भी गाड़ी रुकती है, लोग-बाग गाड़ी के अंदर आकर अपने सामने के आदमी का खून कर डालते हैं। इन कई दिनों के दरमियान सारा भारत जैसे लड़ाई

का मैदान हो गया है ।

मैंने पूछा, "इसके लिए आप किसे जिम्मेदार समझते हैं ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने कहा, "ब्रिटिश सरकार को।"

"क्यों ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने कहा, "बहुत दिन पहले जिस देश पर बंदूक के बल अपना अधिकार जमा कर जिन लोगों ने अपने देश को खुशहाल बनाया है, जिस देश पर अधिकार जमाकर खुद धनी-मानी बन कर बैठ गए, अपने देश का सरो-सामान बेच कर अपने देश के उद्योग-धंधे को समृद्ध कर इतना सारा रुपया-पैसा कमाया, उस देश को छोड़ कर आने में उन्हें तकलीफ़ का अहसास नहीं होगा ? कोई जमींदार रहता है तो वह आसानी से अपनी जमींदारी को छोड़ देता है ?

"इधर जब हिंदू-सिख-मुसलमानों के बीच इतनी मार-धाड़, खून-खराबा चल रहा था तो इस खबर को सुनकर किसे सबसे ज्यादा खुशी हुई, आप यह बता सकते हैं ?"

मुझे मालूम नहीं था कि सबसे ज्यादा खुशी किसे हुई थी ।

पूछा, "किसे ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने अपने सवाल का खुद ही जवाब दिया, "उस आदमी को जिसने इंडिया के महात्मा गांधी का नाम रखा था—दहाफ़ नैकेड फकीर । यानी अर्धनग्न भिखारी । उस आदमी का नाम है चर्चिल । इंडिया में जब करोड़ों लोग मर-कट रहे थे तब चर्चिल आनंद से फूला नहीं समा रहा था ।

मिस्टर ग्रिफ़िथ कहानी सुनाते-सुनाते खामोश हो गए ।

मैंने पूछा, "गुरुदासपुर के दर्शन सिंह का क्या हुआ ? उस मुसलमान लड़की को वह बचा सका ?"

"हां, बचा लिया ।"

"कैसे ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने कहा, "लोग-बाग जब उस लड़की का खून करने के लिए छुरे पर सान दे रहे थे तो उस वक़्त दर्शन सिंह ने कहा : भाइयो, मैं अकेला आदमी हूं । मेरे परिवार में कोई नहीं है । पत्नी, बाल-बच्चे या मां-बाप नहीं हैं । मैं सच-मुच ही तनहा आदमी हूं । मैं इससे शादी कर, इसे अपनी घरवाली बना कर अपने मकान में रखना चाहता हूं । आप लोग इसे छोड़ दें ।"

उसकी बात सुनकर लोग-बाग अवाक् हो गए । दर्शन सिंह का यह प्रस्ताव सुन कर उन्हें लगा जैसे वे आसमान से जमीन पर गिर पड़े हों ।

पूछा, "आप इससे शादी कीजिएगा ?"

"हां ।"

"मगर वह मुसलमान है और आप हैं सिख। आप उससे शादी कैसे कीजिएगा ?"

दर्शन सिंह बोला, "मैं इसे गुरुद्वारा ले जाकर सिख बना लूंगा। कितने ही लोग सिख से ईसाई बन गए हैं, कितने ही हिंदू मुसलमान बन चुके हैं और कितने ही मुसलमान हिंदू धर्म अपना चुके हैं। इसमें नुकसान ही क्या है भाइयो ?"

लेकिन इससे भी गुंडों का आक्रोश शांत नहीं हुआ। उन लोगों ने कहा, "इसकी जाति-बिरादरी के लोग हमारे कितने ही सिख भाइयों का खून कर पाकिस्तान भाग गए हैं। उसका हमें बदला नहीं लेना है ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "हमारे ग्रंथ साहिब में गुरु नानक ने बदला लेने को मना किया है। हजरत मुहम्मद ने भी बदला नहीं लेने को कहा है। हम लोगों के इस गुरुदासपुर में कितनी ही बार पादरी आए हैं और मुझसे ईसाई बनने को कहा है। उन्होंने मुझसे कहा था, अगर मैं ईसाई बन जाऊंगा तो मुझे ढेर सारे रुपये मिलेंगे। उन्होंने मुझे ढेर सारे रुपयों का लोभ दिया था।"

उसके बाद जरा रुककर दर्शन सिंह ने पुन: कहा, "तुम लोग इसे छोड़ दो भाइयो !"

"मगर हमारी मेहनत ? हमारी मेहनत की मजदूरी ?"

"मेहनत की मजदूरी ? मतलब ?"

उन लोगों ने कहा, "मुसलमानों ने हमारा बेइन्तहा नुकसान किया है, उसकी क्षतिपूर्ति कौन करेगा ?"

"रुपये-पैसे से नुकसान की क्षतिपूर्ति हो सकती है ?" दर्शन सिंह ने कहा, "लेकिन चूंकि तुम लोग कह रहे हो इसलिए तुम लोगों की जो भी मांग होगी, उसकी मैं पूर्ति करूंगा। तुम लोग जितने भी रुपये मांगोगे, मैं दूंगा। यह रहा मेरा वादा। तुम लोग इसे जान से मत मारो। बस, इतनी मेहरबानी करो इस पर।"

एक आदमी बोला, "हमें पांच सौ रुपया चाहिए।"

"ठीक है, मैं उतनी ही रकम तुम लोगों को दूंगा।"

दर्शन सिंह इतनी आसानी से रुपया देने को राजी हो जाएगा, ऐसा उन लोगों ने नहीं सोचा था। जब देखा कि एक ही बात पर दर्शन सिंह पांच सौ रुपया देने को राजी हो गया तो उन लोगों ने कहा, "नहीं, पांच सौ रुपया से काम नहीं चलेगा, एक हजार रुपया देना होगा।"

"ठीक है, एक हजार दे दूंगा।"

दर्शन सिंह उसी वक्त उस लड़की को अपने साथ लिए रुपया लाने घर की तरफ जाने लगा।

मगर दुबारा बाधा आकर हाजिर हो गई।

लोगों ने कहा, "नहीं, हमें डेढ़ हजार रुपया चाहिए।"

दर्शन सिंह ने कहा, "ठीक है, मैं डेढ़ हजार रुपया ही लाकर तुम लोगों को देता हूं। ज़रा रुककर इन्तज़ार करो।"

लड़की तब दर्शन सिंह के कलेजे से चिपकी, जान जाने के खौफ़ से थर-थर कांप रही थी।

लड़की को अपने साथ लिए, घर की ओर जाते हुए दर्शन सिंह उसे सांत्वना देने लगा, "डरने की क्या बात है? डरो मत, मैं तुम्हें उन लोगों के हाथ में सौंपने नहीं जा रहा हूं—किसी भी हालत में नहीं।"

लड़की को अभयदान करते हुए दर्शन सिंह ने अपने मक़ान के बाहरी दरवाज़े का ताला खोला और अन्दर घुसा। लड़की भी अन्दर घुस पड़ी।

उसके बाद लोहे के एक सन्दूक को खोल उससे पंद्रह सौ रुपया बाहर निकाला। रुपया निकालने के बाद सन्दूक के ढक्कन को बन्द कर दिया।

उसके पश्चात् घर से निकलने के पहले बोला, "मैं यह रुपया उन लोगों को देकर आता हूं। तुम घर में रहना डर की कोई बात नहीं है।"

यह कहकर बाहर से ताला बन्द कर अपने खलिहान की ओर चल दिया।

जाने के दौरान दुबारा घर के अन्दर की लड़की से कहा, "तुम डरना मत, समझीं? मैंने दरवाज़े पर ताला लगा दिया है। उन लोगों को रुपया देकर मैं तुरन्त वापस आ जाऊंगा।"

लड़की ने अन्दर से कहा, "अच्छा, ठीक है। ज़रा जल्दी वापस चले आइएगा।"

दर्शन सिंह बोला, "मैं जाकर तुरन्त ही लौट आऊंगा।"

इतना कहकर बग़ैर देर किए चला गया। लड़की तब घर के चारों तरफ़ आंखें दौड़ा रही थी। अंधेरे में कुछ भी साफ़-साफ़ नहीं दिख रहा है। खिड़की से बाहर की ओर ताकने की कोशिश की। वहां भी सब कुछ धुंधलेपन में सिमटा हुआ है। उसके मन के अन्दर जिस तरह का धुंधलापन सिमटा हुआ है, ठीक वैसा ही। वह कहां आ गई, किसके घर में! घर में कोई आदमी क्यों नहीं है? फिर इस आदमी का अपना सगा कोई नहीं है क्या? वह क्या उसी के जैसा तनहा है?

अगल-बग़ल में और भी दो-चार मक़ान हैं। किसी भी कमरे में बत्ती नहीं जल रही है। आदमी न हों तो रोशनी जलाएगा ही कौन?

उसे अपने अब्बाजान और अम्मीजान की याद आने लगी। बड़ा भाई भी उसे बेहद प्यार करता था। दुश्मनों ने उन सबों का खून कर डाला है।

अम्मी कहती, "अब तेरी शादी करा दूंगी हसीना। तेरे भाई साहब ने लाहौर से ख़त भेजा है। लिखा है, वह रुपया भेजेगा। रुपया मिलते ही तेरी शादी करा दूंगी।"

हसीना कहती, "शादी? मैं शादी नहीं करूंगी अम्मी।"

"शादी क्यों नहीं करेगी ? उम्र होने ही सबका शादी-ब्याह होता है। मेरी भी तो शादी हुई है। और चूंकि शादी हुई थी इसीलिए तू पैदा हुई। शादी होगी तो तुझे भी एक दिन बच्चा होगा। तब तू भी मेरी ही तरह अम्मा बन जाएगी।"

हसीना कहती, "नहीं अम्मी, मैं शादी नहीं करूंगी।"

यह कहकर हसीना अम्मा की गोद में मुंह छिपाकर रोने लगती। उसकी रुलाई का एकमात्र कारण यही था कि वह सोचती, शादी होते ही उसे अब्बा और अम्मा को छोड़ ससुराल जाना पड़ेगा।

यह सब बहुत पहले की बात है। उन दिनों उसे अपना यह गांव कितना अच्छा लगता ! उसकी कितनी सहेलियां थीं। वे किस जात के हैं, यह जानने की ज़रूरत नहीं पड़ती। दोस्त-मित्र और सखी-सहेलियों की जात-पात से क्या लेना-देना ? सभी एक साथ गांव के स्कूल में जाते। अब्बाजान गांव के ज़मींदार के यहां खेतिहर मजदूर का काम करता। शाम के वक्त खेत-खलिहान का काम खत्म कर घर आता और चाय पीता। हसीना भी लपककर अब्बाजान की गोद में सिमट जाती। कहती, "अब्बाजान, मुझे चाय दो।"

अब्बाजान कहता, "नहीं-नहीं, तुम चना खाओ। बच्चे चाय नहीं पीते।"

"बच्चे क्यों नहीं चाय पीते अब्बाजान ? तुम क्यों चाय पी रहे हो ?"

अब्बाजान कहता, "मैं तो बूढ़ा आदमी हूं बिटिया, मैं क्या बच्चा हूं ? तुम चना खाओ।"

उसके बाद हसीना एक दिन बड़ी हुई। उसकी उम्र बढ़ गई। उसका बड़ा भाई लाहौर चला गया, नौकरी करने के लिए। वहां से बड़ा भाई अब्बाजान को रुपया भेजता। उससे उन लोगों की घर-गृहस्थी अच्छी तरह चलने लगी। हसीना के लिए नया सलवार और कुरता खरीदा गया। जवानी आते ही हसीना के रंग-रूप में निखार आ गया। इसके बाद हसीना की शादी का सवाल पैदा हुआ। लोग-बाग राह-बाट में उसकी तरफ़ घूरने लगे।

लेकिन उसी दरमियान उन लोगों के गुरदासपुर जिले में एक कांड शुरू हो गया। उस समय शाम होते ही लोगों ने घर के बाहर रहना बन्द कर दिया। अब्बाजान और अम्मी के चेहरे का रंग उतर गया।

हसीना अम्मा से पूछती, "क्या हुआ है अम्मी ? तुम लोगों को क्या हुआ ?"

अम्मा कहती, "बहुत ही बुरी खबर है हसीना। अब से तुम्हें होशियार रहना होगा। वक़्त अच्छा नहीं जा रहा है।"

"वक़्त अच्छा क्यों नहीं जा रहा है अम्मी ?"

उसकी इस बात का उत्तर कौन देगा ? या उत्तर ही क्या देगा ? यही वजह है कि उसकी किसी बात का कोई कुछ उत्तर नहीं देता था। लेकिन

बहुत दिनों तक छिपी नहीं रह सकी। लाहौर से उसके बड़े भाई ने खत लिखा है कि वे लोग लाहौर चले आएं।

"उसने आने के बारे में क्यों लिखा है अम्मी ?"

"लिखा है, पाकिस्तान बनने जा रहा है। वहां से सिख और हिन्दू दिल्ली की ओर रवाना हो रहे हैं। पंजाब से भी उसके भाई-बिरादरी के लोगों ने लाहौर कूच करना शुरू कर दिया है। खून-खराबा चल रहा है।"

इसीलिए अब्बाजान भी पाकिस्तान जाने की जोर-शोर से तैयारियां करने में जुट गए। अगर क़िस्मत अच्छी होगी तो वे लोग फिर भारत लौट आएंगे। दोनों देश की सरकारों ने भी उन्हें आने-जाने की तमाम सुविधाएं दी हैं। स्पेशल ट्रेन का इन्तजाम किया गया है। किसी को एक भी पैसा नहीं देना पड़ेगा और न टिकट ही खरीदनी होगा। एक बारगी मुफ़्त। एकदम फ्री यातायात की सहूलियत। ऐसा मौक़ा, हो सकता है, भविष्य में न मिले। अतः देर मत करो, अभी तुरन्त पाकिस्तान रवाना हो जाओ।

जिस दिन वे रवाना होंगे उसके एक दिन पहले की रात की घटना :

पोटलियां-गठरियां बंध चुकी हैं। वज़नदार सामानों को छोड़ दिया गया। खाट, बिस्तर, हांड़ी-कलशी, झाड़ू, बक्से-पेटियां वग़ैरह पड़ी रहीं। इसके अलावा मसाला पीसने का लोढ़ा-सिलबट्टा वग़ैरह भी पड़े रहे। उन सामानों को रहने दो। दुबारा जब सभी लोग भारत लौटकर चले आएंगे तो उन चीज़ों की ज़रूरत पड़ेगी। अड़ोस-पड़ोस में जितने भी मुसलमान हैं सभी एक साथ पाकिस्तान चले जाएंगे। उसके बाद किसी दिन एक ही साथ फिर भारत लौट आएंगे।

मगर दुर्घटना उसी रात घटित हुई। हसीना तब सो रही थी। और केवल हसीना नहीं बल्कि मुहल्ले के तमाम लोग नींद के आगोश में लिपटे हुए थे। दिन-भर खेत में काम करते-करते थक जाने से गहरी नींद आएगी ही।

एकाएक अम्मा के द्वारा झकझोरने पर हसीना की नींद गायब हो गई : "अरी हसीना, उठ-उठ, बाहर चल। घर में आग लग गई है। चल, चल···।"

नींद टूटते ही उसकी आंखों के सामने का सारा कुछ धुंधला हो गया। चारों तरफ आग की लाल-लाल लपटें लहक रही हैं। उस आग से सारा कुछ लाल-जैसा हो गया। हसीना को अपने साथ ले उसकी अम्मा बाहर निकल आई। अब्बाजान भी आगे-आगे दौड़कर भागे जा रहे हैं।

आस-पास के मकानों से भी कितने ही लोग बाहर निकल कर दौड़ रहे हैं। आग की रोशनी में सारा कुछ लाल-लाल दिख रहा है। एकाएक दूसरी तरफ से कुछ लोग आकर चिल्लाने लगे—"मारो-मारो ! साले भाग रहे हैं ! सालों को मारो।"

शुरू में किसी चीज़ की चोट से अम्मा ज़मीन पर गिर पड़ी। तत्क्षण हसीना

भी छिटककर कहां गिर पड़ी, उसे याद नहीं है। उस वक्त की किसी बात की उसे याद नहीं रही। सिर्फ़ उस आदमी की चीखें सुनाई पड़ने लगीं। दिल दहलानेवाली चीखें।

जब उसे होश आया तो उसने खुद को एक झाड़ी में लेटे हुए पाया। उसके बाद सुबह हुई, दिन का उजाला फैला। हसीना ने चारों तरफ़ आंखें दौड़ाईं और तब उसे अपनी सही हालत का अहसास हुआ। उसने महसूस किया कि अगर वह झाड़ी के बाहर निकलेगी तो लोग उसकी गरदन काट डालेंगे। थोड़े से फ़ासले पर ही उसे अपनी अम्मा का जिस्म दो टुकड़ों में बंटा हुआ दिखाई पड़ा। खून से लथपथ होकर वह जिस्म सुर्ख़ दिख रहा है। उससे कुछ आगे और भी कुछेक खून से लथपथ टुकड़ों में बंटे लोगों के लोथड़े बिखरे हुए हैं और आसमान से चीलों का एक झुंड नीचे उतरकर उन्हें नोच-खसोट रहा है।

हसीना ने जब देखा, उसके आगे-पीछे दाएं-बाएं कोई नहीं है तो वह छिपे स्थान से निकलकर बाहर आई। लेकिन निकलकर वह जाएगी कहां ? किसके पास जाएगी ? अब तो उसका अपना कोई सगा-संबंधी नहीं है। ऐसी हालत में उसने सामने की ओर दौड़ना शुरू किया।

आदमी के दुर्भाग्य के कारण जब संकट गहराने लगता है तो सूझ-बूझ भी उसके मस्तिष्क से दूर हो जाती है।

भागते-भागते जब वह बहुत दूर चली आई तो अचानक सिखों के एक झुंड की उस पर नज़र पड़ी। हसीना पर आंखें जाते ही वे लोग आनन्द से उन्मत्त होकर चिल्ला उठे—"पकड़ो-पकड़ो, इस लड़की को पकड़ लो।"

वे लोग जितनी तेज़ी से दौड़ रहे हैं, हसीना भी उतनी ही तेज़ रफ़्तार से भाग रही है। और ठीक उस मौक़े पर दर्शन सिंह ने उसे पकड़ लिया। हसीना को लगा जैसे अल्लाह का एक फ़रिश्ता उसकी रक्षा के लिए सशरीर आकर हाज़िर हो गया है।

अचानक सदर दरवाज़े का ताला खोलने की आवाज़ सुनकर हसीना भय से सिहर उठी।

लेकिन नहीं, कोई दूसरा आदमी नहीं, बल्कि दर्शन सिंह है। दर्शन सिंह गुण्डों की देय राशि चुकाकर घर लौट आया है।

बोला, "अब डरने की कोई बात नहीं। रुपया मिलते ही वे लोग चले गए हैं।"

उसके बाद ज़रा रुककर पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ? मैं तुम्हें किस नाम से पुकारूं ?"

हसीना ने कहा, "मेरा नाम हसीना है।"

दर्शन सिंह ने कहा, "तुम्हें अवश्य ही ज़ोरों की भूख-प्यास लगी होगी।"

हसीना ने सिर हिलाकर हामी भरी।

अन्दर जाकर दर्शन सिंह ने रोशनी जलाई। इस कमरे में एक बत्ती ले आया, दूसरी को बग़लवाले कमरे में रख दिया। घर में दही था ही। दही से अपने हाथ से मट्ठा तैयार किया। हसीना के सामने एक गिलास रखा और दूसरे को खुद अपने लिए। हसीना का गिलास उसे थमाते हुए कहा, "इसे पी लो।"

उसके बाद अपने गिलास को मुंह लगाकर पीने लगा। गिलास से घूंट लेते-लेते दर्शन सिंह बोला, "मेरे घर में कोई नहीं है—न मां-बाप या भाई-बहन। मेरा अपना कोई नहीं है।"

हसीना बोली, "मेरा भी अपना कोई नहीं है।"

"क्यों, तुम्हारे मां-बाप, भाई-बहन— ये लोग कहां हैं?"

हसीना ने कहा, "सबों को गुण्डों ने जलाकर मार दिया। सिर्फ़ मेरा एक भाई लाहौर में है। वह लाहौर में नौकरी करता है।"

दर्शन सिंह बोला, "ठीक है, तुम्हारे लिए डरने की कोई बात नहीं। तुम मेरे यहां रहो। कोई तुम से कुछ नहीं कहेगा। मुझ से पंद्रह सौ रुपये पाकर हरामजादे गुण्डे खुश हैं। मुझे भी खुशी है।"

इसके बाद बोला, "अभी मुझे रोटी सेंकनी है, सब्जी पकानी है। उसके बाद हम लोग खाना खाएंगे। तुम्हें बेहद भूख लगी है, यह मैं समझता हूं।"

हसीना ने कहा, "मैं रोटी बनाना जानती हूं। अम्मी से मैंने रोटी बनाना सीखा था।"

दर्शन सिंह ने कहा, "नहीं-नहीं, तुम्हें कष्ट नहीं करना है। आज का दिन तुमने बहुत परेशानी और तकलीफ़ में गुज़ारा है। मैं अकेले ही रोटी-सब्जी बना लूंगा। तुम बिस्तर पर जाकर लेट रहो। खाना पक जाएगा तो मैं तुम्हें जगा दूंगा। मुझे रोटी बनाने की आदत है।"

इतिहास सीधे पथ पर चलते-चलते सहसा किस ओर मुड़ जाता है, इसकी कल्पना जिस तरह कोई नहीं कर पाया है, उसी तरह मनुष्य का जीवन हुआ करता है। जो दर्शन सिंह अपनी जगह-जमीन, खेती-बारी के काम-काज में अकेले खटकर अपनी रोजी-रोटी कमाता था, जीवन में अचानक दुर्योग की घड़ियों में कहीं से यह हसीना आकर उपस्थित हो गई। एक सिख है और दूसरी मुसलमान। जब भारत के सिखों और मुसलमानों में खून-खराबा और दंगा-फसाद चल रहा था, जब एक-दूसरे से रश्क करता था, एक दूसरे को आग की लपटों में झोंककर मार रहा था, ठीक उसी समय भारत के एक गांव में अचानक एक अनब्याही मुसलमान लड़की को एक

अल्लाह मित्र के घर में शरण मिली।

यह भी इतिहास का एक अभूतपूर्व व्यंग्य है।

1947 ई० के 15 अगस्त को एक पराधीन देश को दो टुकड़ों में बांटकर एक अदृश्य और अनदेखे षड्यन्त्र के तहत स्वतन्त्र बनाया गया। इसके बाद तुम लोग चाहे जितने भी स्वतन्त्र रहने की कोशिश करो, दोनों देशों के बीच हमेशा झड़प होती रहेगी और इस झड़प के सुयोग से लाभ उठाते हुए हम तुम लोगों के पैसे से मालदार बनते जाएंगे। तुम दोनों के मुल्कों के लिए हमीं हथियारों की आपूर्ति करेंगे और हमारी जेबें दिन-ब-दिन गरम होती जाएंगी। तब तुम लोग हमारे दरवाज़े पर आकर धरना धरोगे—बन्दूक, बम, हवाई जहाज, टैंक और फ़ाइटर बंबरों के लिए। हम तरह-तरह के बहाने बनाकर दोनों देशों को छिपे तौर यह सब चीज़ें बेचेंगे। कभी कहेंगे हम इस दल में हैं और कभी कहेंगे उस दल में हैं।

यह 1947 ई० की छह तारीख की बात है। शिमला के शान्तिपूर्ण विश्राम-गृह में माउण्ट बेटन तल्लीन होकर अखबार पर नज़र दौड़ा रहे थे। चारों तरफ़ खून-खराबा, दंगा-फसाद होने की खबर पढ़कर उनके होंठों पर मुसकराहट खेल रही थी।

और ठीक उसी समय दिल्ली से टेलीफोन आया।

"मैं वी० पी० हूं योर ऑनर।"

"वी० पी० मेनन? क्या बात है?"

वी० पी० मेनन ने कहा, "आप तुरन्त चले आएं।"

माउण्ट बेटन ने कहा, "अभी मैं कैसे जा सकता हूं? मैं बाद में किसी दिन जाऊंगा।"

वी० पी० ने कहा, "नहीं योर एक्सेलेंसी, अगर आप आज नहीं आ सकते तो फिर बाद में आपको नहीं आना है। चौबीस घण्टे के दरमियान आप आ जाएं तो खैरियत है वरना अब इस बीच न आएंगे तो फिर आपको नहीं आना है।"

माउण्ट बेटन ने पूछा, "क्यों, क्या हुआ है?"

वी० पी० ने कहा, "इंडिया की हालत शोचनीय है। इंडिया बर्बादी के मोड़ पर चला आया है।"

"क्यों?"

"दिल्ली की हालत बदतर हो गई है! अभी वे लोग चिल्ला-चिल्लाकर नारे लगा रहे हैं: हंस के लिया पाकिस्तान, लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान।"

दिल्ली मुगलकाल से हमेशा मुसलमानों का शहर रहा। दिल्ली के नौकर-चाकर, ख़ोंप-ख़ानसामा बावर्ची वगैरह मुसलमान ही थे। 1947 ई० में भी यही बात थी।

"मगर अभी तो मैं वायसराय नहीं—बल्कि खुला अमन्नाय हूं। मैं तो मात्र

गवर्नर जेनरल हूं। मेरे हाथ में कोई ताक़त नहीं है। मैं जाकर क्या करूंगा ?"

वी० पी० ने कहा, "नेहरू जी और सरदार पटेल ने जो कुछ करने को कहा, मैं वही कर रहा हूं। उन्होंने ही कहा है कि टेलीफ़ोन कर दिल्ली बुलवा लूं।"

गवर्नर जेनरल ने कहा, "ठीक है, मैं आ रहा हूं।"

और ठीक छह सितम्बर 1947 में ही गवर्नर जेनरल के महल में मीटिंग शुरू हुई। घड़ी में तब तीसरे पहर के पांच बज रहे थे। सामने माउण्ट ब्रेटन और उनके निकट ही दो व्यक्ति—प्राइम मिनिस्टर जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल—शिक्षक के सामने अपराधी छात्र की तरह मुंह लटकाए बैठे हैं।

नेहरू ने कहा, "समझ में नहीं आ रहा कि हम ऐसे हालात में क्या करें। आप हमारी रक्षा करें।"

माउण्ट बेटन ने कहा, "यह आप क्या कह रहे हैं ! इतना निराश क्यों हो रहे हैं ? आप प्राइम मिनिस्टर हैं। आपकी बात सुनकर लोग क्या कहेंगे ?"

जवाहरलाल नेहरू ने कहा, "हमें मालूम नहीं कि किस तरह देश चलाया जाता है। आप लोगों ने हमें जिन्दगी-भर जेल में ठूंसकर रखा था। हमें देश पर शासन करने की तालीम नहीं मिली है।"

सरदार पटेल ने भी यही कहा। बोले, "हां, जवाहरलाल ने ठीक ही कहा है। शासन के मामले में हम बिलकुल अनाड़ी हैं।"

माउण्ट बेटन ने कहा, "मुझसे यह कहा तो कोई बात नहीं, लेकिन किसी बाहरी आदमी से यह हर्गिज न कहें।"

जवाहरलाल ने कहा, "नहीं, किसी बाहरी आदमी को यह मालूम नहीं होगा। आप हमारी इस विपत्ति से रक्षा करें।"

गवर्नर जेनरल ने कहा, "आप सचमुच ही यह बात कह रहे हैं ?"

जवाहरलाल नेहरू बोले, "हां, सचमुच ही कह रहा हूं।"

सरदार पटेल ने जवाहरलाल नेहरू की हां में हां मिलाते हुए कहा, "हां; आप हमारी रक्षा करें।"

माउण्ट बेटन ने कहा, "तो ठीक है। आप लोग इस काम की ज़िम्मेदारी उठाने का अनुरोध मुझसे करें।"

जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल दोनों ने कहा, "हम अनुरोध करते हैं कि हमारे देश का शासन भार आप ही संभालें।"

माउण्ट बेटन ने कहा, "मैं शुरू में एक अल्पकालीन समिति बनाना चाहता हूं। उसी के हाथ में मैं देश का शासन-भार सौंप दूंगा। मैं उसका चेयरमैन रहूंगा और मैं जिन-जिन लोगों का नाम बताऊंगा वे इस कमिटी के मेम्बर होंगे। आप लोगों को यह मंजूर है ?"

जवाहरलाल ने कहा, "हमें मंजूर है। मेरे सभी मिनिस्टर आपके आदेश का

पालन करेंगे।"

"मुझे उन लोगों की जरूरत नहीं है। मेरी कमिटी में सिविल एवियेशन के डायरेक्टर, रेलवे के डायरेक्टर और इण्डियन मेडिकल सर्विस के सबसे बड़े अफसर रहेंगे। मेरी पत्नी रेडक्रॉस की कार्यभारी अधिकारी होंगी। और इस कमिटी के सिक्रेटरी के तौर पर काम करेंगे जेनरल एर्मकीन शाम। इसके अलावा इन तमाम कागज़ात को अंग्रेज टाइपिस्ट ही टाइप करेंगे। आप लोग यह काम करने का मुझसे अनुरोध करें।"

दोनों व्यक्तियों ने कहा, "हम आपसे यही अनुरोध करते हैं।"

"ठीक है। मैं आप लोगों का अनुरोध स्वीकारता हूं। अब प्राइम मिनिस्टर मेरे दाहिने तरफ की कुरसी पर बैठ जाएं और डिप्टी प्राइम मिनिस्टर बाएं तरफ़ की कुरसी पर। मैं जो कुछ कहूंगा आप लोगों को मान लेना होगा। मेरी बात पर अगर आप लोग कोई बहस करेंगे तो मैं नहीं मानूंगा। हम लोगों के हाथ में अब ज्यादा वक्त नहीं है। आप लोगों को यदि स्वीकार हो तो मैं जो कुछ कह रहा हूं, वही कीजिए।"

जवाहरलाल नेहरू गवर्नर के दाएं और सरदार पटेल उनके बाएं बैठ गए। उन लोगों से ऊंचे आसन पर मात्र एक अंग्रेज रहा—वह अंग्रेज जो भारतीयों का हमेशा-हमेशा का शत्रु है।

माउण्ट बेटन बोले, "फिर आज शाम को ही हम लोगों की एमरजेंसी कमिटी की बैठक होगी। आज शाम सात बजे। लेकिन इस समाचार को गोपनीय रखना होगा। दुनिया के किसी भी आदमी को मालूम नहीं होना चाहिए।"

और इसके बाद जो कुछ हुआ, जैसा कुछ हुआ, वैसा भारत में कभी नहीं हुआ था। इतने बरसों से जिन अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए निरन्तर संघर्ष चलता रहा, इतने बरसों से जिन अंग्रेजों की जेल में स्वदेशी सेनागण बन्दियों की जिन्दगी गुजारते रहे, इतने बरसों से भारतीय जनता जिन विलायती कपड़ों को जलाने की मुहिम चलाते रहे, जिन अंग्रेजों को भगाने के लिए महात्मा गांधी भारत छोड़ो आन्दोलन करते रहे, उन्हीं अंग्रेजों की सन्तान माउण्ट बेटन के मातहत रहकर देश के दो नेता—जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल देश का शासन करने लगे।

इतिहास देवता का यह भी एक सकरुण परिहास है!

एक दिन जब पाकिस्तान से उखड़े हुए लोगों का काफ़िला अपना सब कुछ गवांकर भारत वापस आने के लिए जी-जान से कोशिश कर रहा था और भारत से लाखों

लोग विस्थापित होकर और सारा कुछ गंवाकर पाकिस्तान पहुंचकर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रयत्नशील थे, वहीं दूसरी ओर पंजाब प्रदेश के एक छोटे से गांव में एक किसान के घर में नया स्वर्ग उतर आया था।

हसीना हर रोज सवेरे आंख खुलते ही मवेशियों के खटाल में आकर हाजिर होती है। दर्शन सिंह के पास दो भैंसें हैं। उनकी देख-रेख के लिए जो आदमी था, उसे हसीना ने काम से हटा दिया है। उसे रखेगी तो खाना और वेतन देना पड़ेगा। वह कब किस चीज की चोरी कर ले, कोई ठीक नहीं। दुष्ट गाय से सूना खटाल ही अच्छा !

बग़ल में ही नदी है। नदी जाकर नहाने में हसीना को ज्यादा वक्त नहीं लगता। नहा-धोकर दूध गरम कर लेती है और दर्शन सिंह को दे आती है।

दर्शन सिंह को झकझोरकर जगा देती है।

कहती है, "अब तक सोये हुए हो ? खलिहान की तरफ़ कब जाओगे ?"

दर्शन सिंह झट से जग जाता है। हसीना के आने के बाद से दर्शन सिंह आराम से सोता है। पहले सोने के वक्त उसे अपने हाथों से सभी दरवाज़े और खिड़कियां बन्द करनी पड़ती थीं। घर के अन्दर दर्शन सिंह के सन्दूक में अनगिनत रुपये-पैसे हैं। यह बात सबको मालूम है। उन रुपयों की सुरक्षा के बारे में सोचते रहने के कारण उसको नींद नहीं आती थी। कहीं ज़रा-सा भी खट्-खट् होता तो दर्शन सिंह को शक़ होता था कि घर में चोर घुस आया है।

मगर अब इस बात का डर नहीं है। हसीना ही उस पर निगरानी रखती है। सोने के पहले वह अपने आंगन का ताला बन्द कर देती है। सभी कमरों के दरवाज़े वह अपने हाथ से बन्द कर आती है। उसके बाद जब सोने आती है तो दर्शन सिंह को जगा हुआ पाती है।

कहती है, "तुम अब तक जगे हुए हो ?"

दर्शन सिंह कहता है, "जगा हुआ क्यों नहीं रहूंगा ? तुम अब तक सोयी नहीं हो और मैं सो रहूं ? ऐसा कहीं होता है ?"

हसीना कहती है, "तुम तो बूढ़े आदमी हो। दिन-भर खेत-खलिहान में खटते हो। सोओगे नहीं तो तुम्हारी सेहत बिगड़ जाएगी।"

दर्शन सिंह कहता है, "जानती हो हसीना, तुम जब से मेरे घर आई हो, मेरी उम्र कम हो गई है।"

हसीना कहती है, "नहीं-नहीं, तुम मर्द हो, तुम्हारी ज़िन्दगी क़ीमती है। मैं ठहरी औरत, मेरी ज़िन्दगी की क़ीमत ही क्या ? मेरी ज़िन्दगी कानी कौड़ी के बराबर है। उन लोगों ने मुझे एक तरह से मार ही डाला था। तुमने मुझे बचाया, इसी वजह से अब तक ज़िन्दा हूं। वरना वे लोग मेरा क़त्ल कर डालते।"

दर्शन सिंह कहता है, "जानती हो हसीना, अभी मुझे क्या अहसास होता है ?"

"क्या ?"

"लगता है, पिछले जन्म मे मैंने बहुत ही पुण्य किया है, इसीलिए तुम मेरे घर आई हो।"

हसीना कहती है, "नहीं-नहीं, मैंने ही शायद पिछले जन्म में पुण्य किया होगा, इसीलिए तुम्हारे जैसे आदमी के घर में मुझे शरण मिली।"

उसके बाद बातें करते-करते कब दोनों नीद में खो जाते हैं, किसी को पता भी नहीं चलता। कभी-कदा दर्शन सिंह सो जाता है तो हसीना सोच-विचारों में खो जाती है। तब उसे अब्बाजान और अम्मी की यादें आती हैं। याद आता है कि कैसे वह अम्मी के आगोश में मुंह छिपाकर सोती थी। सुबह होते ही अम्मा पुकारती, "ऐ हसीना, उठ-उठ, बहुत बेला हो चुकी है। उठ-उठ···।"

उसके बाद उसे याद आता अम्मा का लाड़-प्यार। अब्बाजान और अम्मी के सामने हसीना का हठ।

हसीना कहती, "मुझे एक घोड़ा खरीद दो अब्बा।"

"घोड़ा ? घोड़ा लेकर तू क्या करेगी ?"

हसीना कहती, "मैं घोड़े पर सवार होकर मदरसा जाऊंगी। हमारे मुहल्ले की मुन्नी के पास कितना अच्छा घोड़ा है। मुन्नी घोड़े की सवारी करती है।"

अब्बाजान कहता, "वे लोग बड़े आदमी हैं बिटिया ! उन लोगों से हमारी कोई तुलना हो सकती है ? हमारे पास पैसा कहां है कि घोड़ा खरीदें। वे लोग जमींदार हैं, पैसे वाले हैं। हम गरीब हैं बेटी !"

उसी समय हसीना को समझ मे आया था कि गरीब और अमीर में क्या फर्क है। साथ ही यह भी समझी थी कि वे लोग गरीब हैं। इसीलिए वह जिस दिन दर्शन सिंह के घर आयी थी, उसी दिन समझ गयी थी कि उसका उद्धार करने वाला दर्शन सिंह भी एक अमीर आदमी है। उसके घर में भैंस हैं, उसके पास पांच एकड़ जमीन है और सन्दूक रुपयों से भरा हुआ है। दो कमरों वाला ईंट का एक पक्का मकान भी है। इसके अलावा आदमी को चाहिए ही क्या !

हसीना को दर्शन सिंह दूसरे दिन ही बाजार ले गया था। सुनार की दुकान में हसीना के लिए पचास रुपये में चांदी का एक गहना खरीद दिया था।

हसीना शरमा गयी थी। बोली थी, "मेरी खातिर आपने ढेर सारे रुपये बर्बाद कर दिये।"

दर्शन सिंह ने कहा था, "बर्बाद कर दिया, यह क्यों कह रही हो हसीना ? मेरा रुपया सन्दूक मे पड़ा-पड़ा सड़ रहा था। तुमने गहना पहन लिया तो पैसे का सदुपयोग हो गया। सगे-सम्बन्धी के तौर पर तुम्हारे सिवा मेरा है ही कौन !"

और सिर्फ़ गहना ही नहीं, शलवार और कुरता भी खरीद दिया था हसीना को। हसीना तो अपने साथ बदन पर पहने कपड़े के अलावा और कुछ लेकर नहीं आयी थी। इसके अलावा उसके शरीर को इतना अत्याचार सहना पड़ा है, जिसकी कोई सीमा नहीं।

बाज़ार में तब भी बाहर के आंधी-तूफ़ान की निशानी थी। मुसलमानों की दुकानें लोगों ने जला डाली हैं। वहां तब भी मलबे का ढेर था। कई महीने पहले वहां चहल-पहल मची रहती थी। मुसलमान दुकानदारों के चले जाने से दूसरे-दूसरे दुकानदारों के भाग्य का सितारा चमक उठा है। मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए उन्होंने सरो-सामान की क़ीमत तीन-चार गुनी अधिक बढ़ा दी है। सो बढ़ाए, कोई बात नहीं। हसीना के लिए दर्शन सिंह सब कुछ कर सकता है।

दर्शन सिंह ने कहा, "क़ीमत में इतनी बढ़ोत्तरी क्यों हो गयी भाई ?"

दुकानदार भरसक दर्शनसिंह को पहचानता है। बोला, "माल मिल रहा है, यही गनीमत समझो सरदार जी। मुल्क की जो हालत है, इसके चलते दो दिन के बाद कुछ मिल पाएगा नहीं, इसमें सन्देह है। खबर सुनने को नहीं मिली ?"

"कौन-सी खबर ?"

"तुम भैया खेती-बारी के काम में ही मशगूल रहोगे तो हाल-चाल मालूम हो तो कैसे ? दिल्ली शहर में जबर्दस्त मार-काट चल रही है। अब मुसलमान लोग कहते हैं—'हंस के लिया पाकिस्तान, लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान। दिल्ली में बाईस हज़ार हिन्दुओं को क़त्ल कर दिया गया है—बाज़ार-दुकानें बन्द हैं। कोई भी वहां बाज़ार में खरीद-फ़रोख्त नहीं कर पा रहा है। लोग भूखों मर रहे हैं। माल की आमदनी रुक गयी है। गाड़ियों का चलना भी बन्द हो गया है। पहले आदमी जाएगा या माल ?

उसके बाद हसीना पर नज़र पड़ी तो दुकानदार ने पूछा, "यह लड़की कौन है सरदार जी ?"

"यह···।"

दर्शन सिंह कुछ कहे कि इसके पहले ही दुकानदार समझ गया। बोला, "ओह, बात मुझे सुनने को मिली है। यह वही लड़की है ? लोगों ने बताया था। इसे तुमने डेढ़ हज़ार रुपये में खरीदा है ? लड़की तो खूबसूरत है।"

अब यहां रुकना ठीक नहीं। रुकने से तरह-तरह की बातें सुननी पड़ेंगी। दर्शन सिंह उस लड़की के साथ अपने गरीबखाने में चला आया।

रास्ते-भर दर्शन सिंह हसीना को समझाते हुए आया, "तुम बुरा मत मानना हसीना। ये लोग भले आदमी नहीं हैं। सब-के-सब बदतमीज़ हैं। जानती हो, इस गांव में कोई किसी की तरक्की पसन्द नहीं करता। तुम चूंकि देखने में हसीन और खूबसूरत हो इसलिए वे लोग मुझसे रश्क करते हैं। सारे लोग नमकहराम की

औलाद हैं।"

घर आने के बाद दर्शन सिंह ने दुबारा पूछा, "तुमने बुरा तो नहीं माना ?"

हसीना ने कहा, "मेरी वजह से सरदार जी तुम्हें बेहद तकलीफ़ उठानी पड़ती है।"

दर्शन सिंह ने कहा, "मत रोओ। उन्हें यह मालूम नहीं कि तुम्हारे आने से मेरी जिन्दगी में कितना बदलाव आ गया है। मेरा यह मकान, खेती-बारी, धन-दौलत वग़ैरह इतने दिनों तक कोई मानी नहीं रखते थे। तुम मेरे घर में आयीं तो मेरे अंधेरे घर में चारों तरफ़ रोशनी के फूल खिल उठे।"

हसीना आग में जलकर ख़ाक हो चुकी होती मगर उसके बदले उसे शाहज़ादी का लाड़-प्यार और मुहब्बत मिल रही है। यह ख़ुदा की कैसी मर्ज़ी है ! दर्शन सिंह जब खेती-बारी के काम से बाहर चला जाता है तो खाना पकाने के दौरान ख़ुदा की याद करते-करते हसीना की आंखों में ख़ुशी के आंसू दमक उठते हैं।

दर्शन सिंह अकसर पूछता है, "तुम भाग तो नहीं जाओगी हसीना ?"

हसीना कहती है, "भाग क्यों जाऊंगी ?"

दर्शन सिंह कहता है, "मुझे बीच-बीच में डर लगता है इसीलिए···।"

हसीना पूछती है, "तुम्हें डर क्यों लगता है ?"

दर्शन सिंह कहता है, "डर नहीं लगेगा ?"

"डर क्यों लगेगा ?"

"घर में धन-दौलत होने पर जिस तरह लोगों को चोर-डाकुओं का डर लगता है उसी तरह घर में ख़ूबसूरत औरत हो तो गुण्डों और लफंगों का डर लगता है। यह बात तुम क्यों नहीं समझती ?"

"तुम मुझे बेहद प्यार करते हो सरदार जी, इसीलिए तुम्हें डर लगता है।"

"तुमने कैसे जाना कि मैं तुम्हें बेहद प्यार करता हूं ?"

हसीना मुसकराकर कहती है, "औरतों की समझ में सारा कुछ आ जाता है।"

ऐसे में दर्शन सिंह हसीना को और अधिक लाड़-प्यार करने लगता है और प्यार करते हुए कहता है, "सचमुच, तुम कभी भागकर जाओगी तो नहीं ?"

"क्यों, मैं किस दुख के कारण भाग जाऊंगी ? तुम क्या मुझे तकलीफ़ देते हो ?"

"मगर तुम मुसलमान हो और मैं सिख।"

हसीना कहती है, "मुहब्बत की भला क्या कोई जात या मजहब होता है ?"

यह सुनकर दर्शन सिंह को कृतार्थता का बोध होता है। कहता है, "तुम सच कह रही हो, मुहब्बत का कोई मजहब नहीं होता ?"

"नहीं जी, नहीं। एक ही बात कितनी बार दुहराऊं ? अब तुम सो रहो। मैं

तुम्हारा पैर दाब देती हूं।"

प्यार करने के पहले ही दर्शन सिंह उसके हाथों को कसकर पकड़ लेता है और उसे अपनी ओर खींच लेता है।

लेकिन तब दर्शन सिंह और हसीना नहीं जानते थे कि कितना भयावह भवितव्य अनदेखे भविष्य के अंधेरे में खड़ा होकर उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

वह घटना बाद में बताऊंगा।

सिर्फ़ दर्शन सिंह या हसीना ही नहीं, या यों कहें कि सिर्फ़ हिन्दुओं, सिखों, मुसलमानों, बौद्धों और ईसाइयों के लिए ही नहीं, बल्कि तमाम भारत के लिए वह एक अकल्पनीय दिन था—15 अगस्त, 1947 का वह दिन।

उस समय किसे मालूम था कि वह दिन इतिहास के पन्ने में हमेशा के लिए इतना विषाक्त, वीभत्स और विपण्ण दिन के तौर पर रेखांकित किया जाएगा? भारत के लोग अपने प्रत्येक कार्य के संपादन में तिथि और नक्षत्र का बराबर पालन करते आए हैं। उनका शादी-विवाह, अन्नप्रासन, यात्रा, पूजा-पर्व सारा कुछ पंचांग के अनुसार अनुष्ठित होता है। इनमें नाम-मात्र के व्यतिक्रम की संभावना नहीं है। भारत देश में लॉर्ड माउन्ट बेटन ने एक दिन पत्रकारों का सम्मेलन बुलाया।

माउन्ट बेटन को हर पत्रकार के सवालों का जवाब देना पड़ा।

एक पत्रकार ने पूछा, "ब्रिटिश राज्य क्या अब की सचमुच ही भारत को आज़ादी देकर चला जाएगा?"

माउन्टबेटन ने कहा, "इंगलैण्ड के प्रधानमंत्री एटली ने मुझे यही दायित्व सौंपकर भारत भेजा है। मैं यथाशक्ति उस दायित्व का पालन करूंगा।"

"वे लोग क्या सचमुच भारत को दो हिस्सों में बांट देंगे?"

"ज़रूरत पड़ने पर ऐसा भी किया जा सकता है। लेकिन इसका निर्णय भारत का पार्लियामेन्ट करेगा, भारत के नेतागण और जन-गण-विधाता करेंगे।"

इतना विशाल पत्रकार-सम्मेलन इसके पहले कभी नहीं हुआ था। भारत के तमाम समाचार-पत्रों के संपादक दलबद्ध होकर आए हैं। वे लोग एक के बाद दूसरा प्रश्न उछाल रहे हैं। पत्रकारों के सभी प्रश्नों का उत्तर आज वे बिना किसी लाग-लपेट के देंगे।

बोले, "इतिहास के एक अचल आदेश के पालन का भार मुझ पर पड़ा है। चाहे जैसे भी हो मुझे उस कर्त्तव्य का पालन करना ही होगा।"

अचानक एक व्यक्ति ने सवाल किया, "आपने सत्ता-हस्तांतरण का दिन और समय तय कर लिया है?"

"हां ।"

संपूर्ण सभागार ने निर्वाक् हो, आश्चर्य के साथ यह उत्तर सुना।

और तत्क्षण सारी दुनिया अधीरता के साथ उस तारीख की घोषणा की प्रतीक्षा करने लगी। कलकत्ता के नामी ज्योतिषी स्वामी मदनानन्द पंचांग देखने लगे। पचांग में कहीं किसी शुभ दिन का उल्लेख नहीं है। फिर कब सत्ता-हस्तान्तरित की जाएगी ? कब आजादी दी जाएगी ?

3 जून 1947 ईस्वी की शाम सात बजे के बाद नई दिल्ली की आकाशवाणी से लॉर्ड माउन्टबेटन का भाषण प्रसारित हुआ। उसके बाद जवाहरलाल नेहरू का भाषण। उसके बाद मुहम्मद अली जिन्ना बोले। उन्होंने अपने भाषण के अन्त में कहा 'पाकिस्तान जिन्दाबाद'।

महात्मा गांधी लॉर्ड माउन्ट बेटन के राजभवन पहुंचे। उन्होंने लॉर्ड माउन्ट बेटन से पूछा, "आपने यह क्या किया ?"

माउन्टबेटन बोले, "आप तो यही चाहते थे।"

"मैं भारत को दो हिस्सों में बांटना चाहता था ? आप यह क्या कह रहे हैं !"

माउन्टबेटन ने कहा, "आपने ही कहा था, भारत की जनता जो चाहेगी, वही होगा। जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल और जिन्ना ही तो जनता के द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि हैं। उनकी बात ही जनता की बात है। वे लोग भारत के बंटवारे के लिए सहमत हो गए। आपने जो कहा था, मैंने वही किया। फिर आप असहमति क्यों प्रकट कर रहे हैं ?"

इसके बाद बात का सिलसिला आगे नहीं बढ़ा।

उस दिन भारत में जो सबसे दुखी आदमी था वह लार्ड माउन्टबेटन के राजभवन से धीरे-धीरे कदम रखता हुआ नीचे उतरा। हां, उन्हीं के कथनानुसार काम किया है लार्ड माउन्टबेटन ने। उन्हीं की बात पर भारत का दो हिस्सों में बंटवारा किया गया है। जवाहरलाल नेहरू तो जनता के द्वारा चुने गए प्रतिनिधि हैं। गांधी जी जैसा बैरिस्टर अपनी ही दलील से पराजित होकर उस दिन लौट आया। आज वे निःस्व, निस्संग और असहाय हैं। आज उनका कोई अपना नहीं है। आज वे एकाकी हैं। आज से उन्हें दुर्गम पथ पर अकेले ही चलना पड़ेगा। उसके प्रिय शिष्य जवाहरलाल ने उनका परित्याग कर दिया है। आज उनका इस दुनिया में अपना कोई नहीं है।

"कब ?"

पत्रकारों के सम्मेलन में माउन्टबेटन से दुबारा सवाल किया गया, "कब ? बताइए, किस तारीख को सत्ता हस्तान्तरित की जाएगी ?"

माउन्टबेटन ने कहा, "15 अगस्त, 1947 में।"

दूसरे दिन ऑल इंडिया के प्रसारण से पूरी दुनिया का कुछ भाग आतंक से और

कुछ आनन्द से सिहर उठा। 15 अगस्त, 1947। मतलब यह कि लगभग तीन महीने के दरमियान ही।

यह समाचार कलकत्ता के एक ज्योतिषी के कान में पहुंचा। उनका नाम है स्वामी मदनानन्द। तत्क्षण वे पंचांग खोलकर देखने लगे। सर्वनाश ! यह तो बिलकुल अशुभ प्रलयकारी दिवस है। 14 अगस्त से 15 अगस्त के बीच सभी अशुभ ग्रहों का समावेश है और यह समय भारत के लिए अत्यन्त प्रतिकूल है। शनि, शुक्र और बृहस्पति मकर लग्न के कर्मस्थान के नवम में रहेंगे। उस पर राहु की दृष्टि है। इन लोगों ने यह क्या किया ! स्वामी जी जीवन-भर योग तत्त्व और मंत्र की ही साधना करते रहे हैं। वे एक बारगी घबरा उठे।

उसी क्षण वे लार्ड माउन्टबेटन को एक लम्बी चिट्ठी लिखने लगे—दुहाई है लाट साहब आपकी ! 15 अगस्त को भारत को सत्ता हस्तान्तरित न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो कुग्रहों के प्रकोप से भारत का सर्वनाश हो जाएगा। वह एक अभिशापित दिवस है। बाढ़, खून हत्या, भ्रातृद्रोह और अकाल की चपेट में आकर नवजात भारत तबाह हो जाएगा। सत्ता-हस्तान्तरण के लिए आप किसी दूसरी तिथि का निर्वाचन करें। आप भारत की रक्षा करें, दुहाई है आपकी !

मिस्टर ग्रिफ़िथ कहानी कहते-कहते चुप हो गए।

मैंने पूछा, "इसके बाद दर्शन सिंह और हसीना का क्या हुआ ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, "उन्हीं की कहानी से संबंधित है मेरा यह उपन्यास। मगर यह सिर्फ़ दर्शन सिंह और हसीना की ही कहानी नहीं है। देश-काल के बाद ही पात्र-पात्री का स्थान होता है। देश-काल को छोड़ देने से उनका अलग से कोई अस्तित्व नहीं है। वरना ठीक उसी वक्त उस मुल्क की मुसलमान औरत होकर हसीना एक संगीहीन सिख के घर आश्रय की खोज में आती ही क्यों ? कोई दूसरा समय होता तो यह असंभव संभव में परिणत नहीं होता। यही वजह है कि इतनी सारी फालतू बातें कहनी पड़ रही हैं। इन बातों को कहे बग़ैर उन लोगों की कहानी का वास्तविक मूल्यांकन नहीं हो सकेगा।"

मैंने कहा, "बेशक यह सही बात है। लेकिन हमारे बंगाल प्रदेश के लोग आज भी कोरे ही हैं। किताब थोड़ी मोटी हो जाए तो वे उसे एक साबुत ईंट कहते हैं।"

मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, "दर्शन सिंह और हसीना के जीवन क्योंकि देश के बंटवारे की त्रासदी से जुड़े हुए हैं इसीलिए माउन्टबेटन, गांधी. नेहरू, पटेल और जिन्ना की कहानी का उल्लेख करना पड़ा। यों कहें कि दर्शन सिंह और हसीना दोनों भारत के बंटवारे के शिकार हैं।"

उस दिन दर्शन और-और दिनों की तरह अपनी खेती-बारी का काम देखने गया। हसीना घर में अकेली थी। एकाएक दूर से बाजे की आवाज कान में आयी। लगता है, दूर कहीं कुछ लोग गा-बजा रहे हैं।

हसीना ने खिड़की में झांककर बाहर की ओर आंखें दौड़ाईं—सिखों का एक दल आगे-आगे एक घोड़े को चलाते हुए उसी के घर की तरफ आ रहा है। घोड़े के पूरे जिस्म पर मखमली झालर टंगी हुई है। उस पर फूलों के हार के जैसे घुंघरू हैं। घोड़े के चलने के साथ-साथ घुंघरू टुन-टुन बज रहे हैं। उस घोड़े के गिर्द बहुत सारे लोग रंगीन पगड़ियां पहने, सज-धजकर, बांसुरी बजाते हुए आ रहे हैं।

हसीना पर नजर पड़ने पर दल का मुखिया आगे बढ़कर आया। हसीना से पूछा, "दर्शन सिंह घर पर हैं ?"

हसीना ने डरते हुए कहा, "नहीं।"

"नहीं ? वह कहां गया ?"

"खेत पर।"

एक आदमी से तत्काल कहा गया कि वह जाकर दर्शन सिंह को उसके खेत से बुला लाए।

हसीना को डर जैसा महसूस होने लगा।

ये लोग उसे क्या घर से भगा देंगे ? मुसलमान औरत को घर में रखने के कारण ये लोग क्या उसे सजा देनेवाले हैं ?

मखमली लिबास से सजा-संवरा घोड़ा जिस तरह खड़ा था, उसी तरह खड़ा रहा। लेकिन जो लोग बांसुरी बजा रहे थे, वे बांसुरी बजाने में मशगूल रहे। उन लोगों का क्या इरादा है, हसीना की समझ में नहीं आया।

दर्शन सिंह के खेत-खलिहान अधिक दूर नहीं हैं।

खबर पाते ही दर्शन सिंह दौड़ा-दौड़ा आया। जो आदमी सबके सामने एक मोटा ग्रंथ अपने हाथों में थामे था, दर्शन सिंह ने झुककर उसे प्रणाम किया।

"क्या हुक्म है ग्रंथी साहब ?"

तभी पता चल गया कि वह सिख-संप्रदाय का पवित्र ग्रंथ 'ग्रंथ साहिब' है।

मुख्य ग्रंथी ने पूछा, "तुम्हारे घर में जो महिला है, वह क्या मुसलमान है ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "हां गुरुजी।"

गुरुजी ने कहा, "तुम्हें उससे शादी करनी होगी।"

"शादी ?"

दर्शन सिंह उस समय भावावेश, आनन्द और आतंक से कांपने लगा था। इस तरह की अप्रत्याशित घटना के लिए वह मानसिक तौर पर प्रस्तुत नहीं था।

बोला, "कब ?"

"अभी तुरन्त।"

"तुरन्त ?"

"हां, अभी तुरन्त। हम अपने साथ ग्रंथ साहिब लेकर आए हैं। तुम्हें अभी तुरन्त शादी करनी है—तुम्हारे ही घर के अन्दर।"

"मुझे अपने इसी घर में ? मगर मैं अभी तो खेत पर से आ रहा हूं। मैं तैयार नहीं हूं।"

ग्रंथी बोले, "तैयारियां करने की जरूरत ही क्या है ? हम सब कुछ अपने साथ ले आए हैं। हम तुम्हारी शादी कराने के बाद ही जाएंगे।"

इसके बाद दर्शन सिंह के पीछे-पीछे ग्रंथी ने घर के अन्दर प्रवेश किया। उनके हाथ में उस वक्त भी ग्रंथ साहिब था।

हसीना ने इसके एक दिन पहले खरीदी हुई साड़ी को पहन लिया। मगर उसका भय तब भी दूर नहीं हुआ था। वह थर-थर कांप रही थी।

दर्शन सिंह ने अपने माथे पर लाल रंग की पगड़ी धारणा की। उसके चेहरे पर खुशियां दमक रही थीं।

हसीना अपने पति से सटकर फर्श पर बैठ गई।

ग्रंथी ने उन दोनों को पवित्र वैवाहिक जीवन के दायित्वों से अवगत कराया। उसके बाद पवित्र ग्रंथ साहिब से गुरु वाणी का पाठ किया। वहां जो-जो लोग खड़े थे उन्होंने भी उन श्लोकों को दुहराया।

जब पाठ समाप्त हो गया तो दर्शन सिंह उठकर खड़ा हो गया।

ग्रंथी ने कहा, "अब इस दुपट्टे का एक छोर तुम पकड़ो।"

दर्शन सिंह ने आदेश का पालन किया।

अब हसीना की बारी है। उसने दुपट्टे के दूसरे छोर को पकड़ा।

इसी प्रकार हसीना ने भी चार बार दर्शन सिंह का अनुसरण किया। जब इसी तरह चार बार परिक्रमा हो चुकी तो शास्त्रानुसार विवाह का कार्य संपन्न हो गया।

अब दर्शन सिंह और हसीना सिख धर्म के अनुसार पति और पत्नी हैं। अब उसके बीच कोई बाधा नहीं, कोई ईश्वरीय शक्ति नहीं है जो उन्हें अलग कर सके। अब वे सुख-स्वच्छन्दता के साथ घर-गृहस्थी चलाएं, ग्रंथी ने उन्हें यह आशीर्वाद दिया।

मैंने पूछा, "फिर ?"

मिस्टर एडमंड ग्रिफ़िथ बोले, "इतिहास और ईश्वर इन दोनों में कौन बड़ा है—आप बता सकते हैं ?"

मैं इसका क्या जवाब दूं ! उनके चेहरे की ओर ताकता हुआ खामोश रहा। मिस्टर ग्रिफिथ ने कहा, "मैं न तो हिंदू हूं, न मुसलमान और न ही सिख। आपकी निगाह में मैं विधर्मी हूं। कहा जा सकता है कि मैं अपने धर्म का भी ठीक से पालन नहीं करता। मेरे लिए साहित्य ही असली धर्म है। साहित्य ही मेरे लिए सब कुछ है। मैं अपने साहित्य के नजरिये से ही दुनिया के तमाम लोगों की विवेचना करता हूं। इसलिए आप कह सकते हैं कि इतिहास ही मेरा ईश्वर और धर्म है। और यही वजह है कि मैं इतिहास को ही सदा श्रद्धा की दृष्टि से देखता आया हूं। इतिहास ने ही किसी दिन चंगेज खां और उसके बाद नेपोलियन की सृष्टि की थी। लोगों का यह कहना गलत है कि चंगेज खां या नेपोलियन ने ही इतिहास की सृष्टि की थी।"

लेकिन सच क्या यही है ? वरना इतिहास का उद्देश्य क्या है ? ऐसी कौन-सी आवश्यकता थी कि उसने माउण्ट बेटन की सृष्टि की ? माउण्ट बेटन ने भारत को आजादी न दी होती तो भारत क्या आजाद नहीं होता ?

या फिर यह बताएं कि एडलफ हिटलर की सृष्टि के पीछे इतिहास का कौन-सा उद्देश्य था ? किसने उसे जर्मनी का चांसलर बनाया ? क्यों बनाया ?

और गांधी ? एम०के० गांधी को ही किसने महात्मा गांधी के रूप में बदला ? यह भी क्या इतिहास का ही कारनामा है ?

मुझे इन बातों पर हैरानी होती है। कहां दक्षिण अफ्रीका का जोहान्सबर्ग और कहां यह इण्डिया। किसी दिन रेवरेण्ड पोलक साहब ने बैरिस्टर गांधी को रेलगाड़ी पर बिठाने के दौरान एक पुस्तक उपहार-स्वरूप भेंट की थी।

कहा था, "इस पुस्तक को आप रास्ते में पढ़िएगा मिस्टर गांधी।"

"कौन-सी पुस्तक है ?"

रेवरेण्ड पोलक ने कहा, "जॉन रस्किन की रचना—'अनटू दिस लास्ट'।"

उसे पढ़ने के दौरान मिस्टर गांधी को उस रात नींद नहीं आई। रात-भर जगते हुए पुस्तक को पढ़कर खत्म करते में भोर हो गई। उस पुस्तक को पढ़ने पर ही गांधीजी को पता चला कि किसी की जेब में अगर एक पैसा आकर समाता है तो मानना होगा कि किसी एक-दूसरे की जेब का एक पैसा कम हो गया है। इसका अहसास होते ही बैरिस्टर एम० के० गांधी रातों-रात महात्मा गांधी हो गए।

और उन्हीं के हाथ में भारत की स्वतंत्रता का भार पड़ा। इतिहास का यह एक बहुत बड़ा मेल है।

माउण्ट बेटन के राजभवन से निकलने के बाद गांधीजी ने एक लंबी सांस ली। उनके शिष्य नेहरू और पटेल ने देश के बटवारे को मान लिया !

जबकि वे कितने दृढ़ निश्चय के साथ माउण्ट बेटन से कह आए थे कि उनकी लाश पर ही पाकिस्तान का निर्माण होगा। उनके शिष्यों ने ही उनसे दगा

विश्वासघात किया ? क्या इसी का नाम इतिहास है ?

उस दिन प्रार्थना-सभा में महात्मा गांधी क्या कहेंगे, माउण्ट वेटन भी खुद इस संबंध में बेचैनी महसूस कर रहे थे। गांधीजी के कथनानुसार उन्होंने कोई काम नहीं किया। बल्कि उल्टा ही किया। भारत को तोड़कर दो भागों में बांट दिया। इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी, इसे जानने को वे बहुत ही उत्सुक थे। एक तरफ़ वे, नेहरू, पटेल तथा जिन्ना हैं और दूसरी तरफ निःसंग, हताशा-विद्ध महात्मा गांधी। उन्होंने समझा था, अब गांधीजी अवश्य ही कांग्रेस से अलग हो जाएंगे।

और केवल माउण्ट वेटन नहीं, बल्कि दुनिया के तमाम लोग उत्कंठा से यह सुनने की प्रतीक्षा कर रहे थे कि आज की प्रार्थना-सभा में महात्मा गांधी क्या बोलेंगे।

देश-विभाजन की तिथि निश्चित हो गई है। नेहरू, पटेल और जिन्ना ने इसे बेझिझक स्वीकार कर लिया है।

लेकिन गांधीजी ? मिस्टर गांधी क्या कहेंगे, यह जानने को ब्रिटिश पार्लियामेंट के सभी लोग उत्सुक हैं।

एक दूसरे से पूछ रहा है—अब गांधी क्या करेंगे ? गांधी क्या उनका विरोध करेंगे ? इतने दिनों से चले आ रहे गुरु-शिष्य के रिश्ते में दरार पड़ जाएगी ?

उस दिन गांधीजी की प्रार्थना-सभा में हरिजनों के अलावा भी बहुत सारे लोग इकट्ठे हुए थे। सभी को यह जानने की उत्सुकता थी कि गांधी जी क्या कहेंगे।

उस दिन उन्होंने उसी मंच पर बैठकर कहा—"माउण्ट वेटन पर खामख्वाह दोष मढ़ने से कोई फ़ायदा नहीं। माउण्ट वेटन तो ब्रिटिश राज्य का प्रतिनिधि है। अगर दोष किसी का है तो वह हम लोगों का है, आप लोगों का है। आप लोग खुद से सवाल करें कि क्यों ऐसा हुआ ? सुनिए, आप लोगों का मन क्या कहता है, क्या चाहता है ? मुझसे आप लोग इसके उत्तर की अपेक्षा न करें।"

यह खबर सुनकर लार्ड माउण्ट वेटन चाय की चुस्कियां लेने लगे। नेहरू ने भी स्वस्ति की सांस ली।

पटेल ने मन ही मन कहा, "खैर, जान बची ! बापू ने मेरे सिर पर दोष नहीं मढ़ा।"

लेकिन उसने, जिसे आप इतिहास कहते हैं, क्या किया ?

इतिहास या ईश्वर—चाहे आप उसे जिस नाम से पुकारें, उसने गांधी जी को अशांत बना दिया। देश के बंटवारे पर उनकी चुप्पी धारण करने की कार्रवाई को भारत के करोड़ों मनुष्य किसी भी दिन क्षमा नहीं करेंगे—इसका अहसास उन्हें उसी दिन हो गया।

और इसी वजह से दर्शन सिंह और हसीना बीबी का दांपत्य जीवन सर्वदा के

लिए रेगिस्तान में बदल गया।

उस दिन सवेरे आंख खुलते ही दर्शन सिंह ने हसीना से कहा, "जानती हो हसीना, रात मे मैंने बड़ा ही बुरा सपना देखा।"

हसीना बीबी ने पूछा, "क्या सपना देखा ?"

"देखा," दर्शन सिंह बोला, "तुम मुझे छोड़कर भाग गई हो।"

हसीना ने 'हो-हो' कर हंसते हुए कहा, "लगता है, अब भी तुम्हारा पागलपन दूर नहीं हुआ है।"

"सच, तुम कभी मुझे छोड़कर भाग तो नहीं जाओगी !"

दर्शन सिंह की बात पर हसीना मुसकराकर कहती, "तुम सचमुच ही पागल हो गए हो। मैं तुम्हें छोड़कर कभी भाग सकती हूं ? तुम्हीं मेरे सब कुछ हो। मैंने ग्रंथसाहिब को छूकर तुमसे शादी की है।"

इस पर दर्शन सिंह के मन को थोड़ी-सी शांति मिलती। बात तो वाकई सही है, जिसे उसने पंद्रह सौ रुपये में खरीदा है, जिसके लिए ढेर सारे रुपये खर्च कर सलवार-कमीज और जेवरात खरीदे हैं, वह क्या उसे छोड़कर भाग जाएगी ? ऐसा कहीं होता है ऐसा कहीं हो सकता है ? ऐसा होना क्या संभव है ?

दर्शन सिंह कहता, "सपना झूठा होता है—ठीक कह रहा हूं न ?"

हसीना कहती, "हां जी, हां, सपना झूठा ही हुआ करता है। चूंकि तुम मुझसे बहुत मुहब्बत करते हो इसीलिए तुम्हारे अंदर मुझे खो देने का भय बना रहता है। मुहब्बत करने से ऐसा ही होता है।"

दर्शन सिंह भी सोचता, प्यार करने से ही शायद मन की गहराई में खो देने का भय जगता है।

कहता, "तुम भी तो मुझे बेहद प्यार करती हो। फिर तुम भी क्या वैसा ही सपना देखती हो ?"

हसीना कहती, "हां-हां, मैं भी सपना देखती हूं कि तुम मुझे छोड़कर कहीं भाग गए हो।"

"सच ? तुम सचमुच ऐसा सपना देखती हो ?"

"सच्ची ! मगर मैं जानती हूं कि सपने झूठे होते हैं। इसलिए यह सब सोचकर मैं अपना दिमाग खराब नहीं करती। तुमने मेरे लिए जो कुछ किया है उसे मैं भूल सकती हूं भला ? अगर ऐसा करूंगी तो मुझसे बढ़कर नमकहराम कौन होगा ?"

जरा रुककर फिर कहती है, "इसके अलावा…।"

शर्म के कारण हसीना और कुछ नहीं कह पाती है।

दर्शन सिंह बार-बार आग्रह करता है, "कहो न, और क्या कहना चाहती थी ?"

"तुम तो जानते नहीं…।"

"क्या नहीं जानता ?"

हसीना भागकर दूसरा काम करने चली जाती है। कहती है, "बाद में किसी दिन बताऊंगी।"

दर्शन सिंह इसके बाद कुछ नहीं कहता। हसीना को अभी घर-गृहस्थी के बहुत सारे काम करने को बाकी हैं। दो भैंसों को दुहना है। दूध दुहने के बाद चूल्हा जलाकर अपने मर्द के लिए चाय बनानी है। चाय-नाश्ते के बाद उसका मर्द खेत पर जाएगा। अभी वक्त बर्बाद करने की उसे फुर्सत नहीं है। उसके बाद खटाल का काम खत्म कर खाना पकाना है। फिर उस खाने की वस्तु को खेत पर भेजना है। खेत से मजदूर दर्शन सिंह का खाना लेने आएगा।

अभी तो वे लोग दो जने ही हैं। लेकिन कई महीने बाद घर में एक नया मेहमान आने वाला है। उस समय उनकी संख्या बढ़कर तीन हो जाएगी। तब हसीना का काम और बढ़ जाएगा। उसे अकेले ही दूध दुहना होगा, खाना पकाना होगा, मेहमान की सेवा करनी होगी। उसके बाद घर-द्वार साफ़-सुथरा करने, कपड़े की धुलाई वग़ैरह के काम से निबटना होगा। बहुत देर तक सोये-बैठे रहने से हसीना का काम कहीं चल सकता है ?

अभी एक उत्सव का समय है।

एक दिन गुरुद्वारा के ग्रंथी सुर्खजिंदर सिंह ग्रंथ-साहिब खोलकर भजन-कीर्तन कर रहे थे। उनका स्वर लाउडस्पीकर से बाहर निकल चारों तरफ़ गूंजता हुआ लोगों के कान में पहुंच रहा था।

शहर का उनींदापन तब बिलकुल दूर नहीं हुआ था। नींद के बीच ही आस-पास के लोग भजन सुन रहे थे।

दिल्ली के गवर्नर जेनरल के राजभवन के तमाम लोग व्यस्तता में डूबे हुए हैं। सुबह होने के बहुत पहले ही वहां सुबह हो चुकी है। लेफ्टिनेण्ट कर्नल हबीबुल्ला 1945 ई० की लड़ाई में ब्रिटिश राज्य के लिए इटली में जी-जान से लड़ा था। और सिर्फ़ इटली ही नहीं बल्कि अफ्रीका के रेगिस्तान में भी जी-जान से लड़ा था। बर्मा में भी माउण्ट बेटन के अधीन काम किया था। उसी लेफ्टिनेंट कर्नल के लिए वह एक बहुत बड़ी समस्या का दिन था। इतने दिनों से वह अंग्रेजों की तरफ से लड़ाई करता रहा है, आज वे ही अंग्रेज भारत छोड़कर चले जा रहे हैं। उसका हमेशा का सपना पाकिस्तान रहा है—आज उसी पाकिस्तान के जन्म के क्षणों में यही समस्या यातना बनकर उसे डंसने लगी। इंगलैण्ड में बैठे-बैठे भी वह अपने पैतृक जन्म स्थान लखनऊ के बारे में सोचता और लखनऊ का ही सपना देखा करता था।

उसी हबीबुल्ला ने पहले ही तय कर लिया था कि वह नवजात पाकिस्तान चला जाएगा और अपनी मां को भी अपने साथ ले जाएगा।

उस दिन अलस्सुबह ही वह लखनऊ के लिए रवाना हो गया। हबीबुल्ला साहब ने सात दिनों की छुट्टी ली है। उसके अब्बाजान कभी लखनऊ यूनिवर्सिटी के वाइसचांसलर थे। हबीबुल्ला का परिवार रईस और खानदानी रहा है।

घर पहुंचकर खाना-पीना खत्म करने के बाद हबीबुल्ला साहब अपने बाप की गाड़ी लेकर सड़क पर निकल पड़ा। किसी दिन इसी देश की मिट्टी में ही उनके पुरखे पैदा हुए थे, किसी दिन उनके पुरखों ने इस देश की धरती की पवित्रता की रक्षा के निमित्त 1857 के सिपाही विद्रोह के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी थी। उसी पुराने देश को आखिरी बार देखने के इरादे से शहर के हर कोने का चक्कर काटने लगा।

उसके बाद वापस आकर अपनी मां से कहा, "मम्मी, तुम मेरे साथ पाकिस्तान चले चलो। तुम तो जिंदगी का सारा कुछ देख चुकी हो। लेकिन मेरे साथ बात उल्टी ही है। मुझे अब भी बहुत कुछ देखना-सुनना है। चलो, हम लोग जिन्ना साहब के पाकिस्तान चले जाएं। जिंदगी की आखिरी घड़ी में अपने सबसे अज़ीज़ लीडर के मुल्क में चलो। भारत में मुसलमानों के लिए कोई जगह नहीं है, यह जान लो।"

उन दिनों उसकी मां काफी उम्रदार हो चुकी थी। बोली, "नहीं बेटे, हम लोग ज़माने पहले किसी दिन यहां आए थे। यह भारत ही हम लोगों की जन्मभूमि हो चुकी है। हम लोगों का यही मुल्क है। यहां की धरती को छोड़ मैं कहां किस अनजाने मुल्क को जाऊंगी ?"

हबीबुल्लाह बोला, "यहां के बनिस्बत वह जगह काफी अच्छी है अम्मी। हम लोगों के लिए जैसी दिल्ली तुम्हारे लिए वैसी ही कराची। तुम अच्छी तरह सोच-कर देख लो अम्मी।"

अम्मी बोली, "अरे, हम लोग दो सौ साल से ज्यादा वक्त से यहां रह रहे हैं। मैं तुम्हारा पॉलिटिक्स वग़ैरह नहीं समझती। सिपाही विद्रोह के वक्त हमने जिनके खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, बाद में उनकी तरफ से ही जर्मनी के खिलाफ लड़ाई लड़ने गए। हम जैसे थे वैसे ही हैं। हम यहीं पैदा हुए हैं और हमारे पुरखों की कब्रें यहीं की धरती पर हैं। किसी दिन यहीं की मिट्टी में मुझे भी दफनाया जाएगा। यही वजह है, मेरे न जाने का। तू चला जा, तेरी बहन और बहनोई चले जाएं, सभी चले जाएं, मगर मैं मौत के पहले यहां से कहीं नहीं जाऊंगी।"

हबीबुल्लाह ने कहा, "यहां रहने से हिंदू अगर तुम्हें जबरन हिंदू बना लें तो ?"

"अगर बनाएंगे तो बनाएं। तो भी मुझे अपने पुरखों की ज़मीन में रहने का मौक़ा मिलेगा।"

हसीना के साथ भी यही हुआ। सिखों के धर्म गुरु ने दर्शन सिंह से उसकी

शादी कराकर उसे जबरन सिख बना दिया है। इससे उसकी हानि ही क्या हुई ? उसे तो अपने जन्मस्थान में ही रहने का मौका मिला है। दर्शन सिंह की धर्मपत्नी बनने का अधिकार प्राप्त हुआ है। उसे और चाहिए ही क्या ! अब बाक़ी ही क्या रहा उसके लिए पाने को !

सुखजिंदर सिंह को जब पता चला कि दर्शन सिंह के लड़की पैदा हुई है तो उसने दर्शन सिंह को पवित्र ग्रंथ-साहिब का स्पर्श करने को कहा।

दर्शन सिंह ने अकस्मात् ग्रंथ-साहिब से एक पन्ना खोला। सहसा जिस पन्ने पर जाकर उसका हाथ थम गया, उस पन्ने का पहला अक्षर 'त' था। दर्शन सिंह ने उसी अक्षर को मिलाकर लड़की का नाम 'तनवीर' रखा। तनवीर का अर्थ है आसमान की करामात। आकाश का विस्मय।

दर्शन सिंह ने हसीना से पूछा, "लड़की का नाम तुम्हें पसन्द आया ?"

"बेहद पसन्द आया।" हसीना ने कहा।

अब हसीना को चाहिए ही क्या ! वह अब मां बन गई है। जिस लड़की को किसी दिन ठौर नहीं मिल रहा था, जिसका अपना कोई नहीं था, अब वह स्त्री हो गई है, अब एक लड़की की मां बन गई है। यह क्या कोई कम बात है !

उसने लाड़ से तनवीर को चूम लिया।

सच, तनवीर आसमान की करामात है।

आसमान की करामात के सिवा उसकी तनवीर और हो ही क्या सकती है ? विस्मय से भरे आकाश ने ही उसकी तनवीर को भेजा है। तनवीर उसके मन के आकाश का चांद है, आकाश का चांद ही तनवीर बनकर उसकी गोद में आया है। उसके सुख की कोई इयत्ता है ?

दर्शन सिंह के सुख की कोई इयत्ता नहीं, कोई सीमा-रेखा नहीं। उसने कभी कल्पना नहीं की थी कि एक दिन उसकी शादी होगी, उसकी गृहस्थी बस जाएगी और उसे इतने सुख का अहसास होगा।

मगर कौन जाने, दर्शन सिंह की उस दिन की बात सुनकर इतिहास-विधाता को हंसी आई या उसकी भृकुटि तन गई ! शायद भृकुटि ही तन गई अन्यथा···।

पर वह बात अभी रहे।

लीबिया में फर्श पर बैठी मिसेज सुलताना बोलीं, "आप क्या यह सोच सकते हैं मिस्टर ग्रिफ़िथ, कि वह तनवीर आज की मैं हूं—यानी आज की यह मिसेज सुलताना ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, "यह क्या! सिख लड़की तनवीर किस तरह मिसेज सुलताना हो गई?"

मिसेज सुलताना ने कहा, "इसलिए तो कहा था, मैं आधी सिख और आधी मुसलमान हूं।"

मिस्टर ग्रिफिथ ने पूछा, "यह कैसे हुआ?"

"इसीलिए तो मैं आपको भारत जाने कह रही हू।" मिसेज सुलताना ने कहा, "लीबिया के संबंध में इतिहास लिखकर क्या होगा? ईस्ट एशिया या वेस्ट एशिया के बारे में इतिहास लिखकर क्या होगा? आप साउथ-ईस्ट एशिया जाइए। उस देश के संबंध में उपन्यास लिखिए। उपन्यास का इतना उपादान आपको और कहीं नहीं मिलेगा। खासतौर पर पार्टिशन और पार्टिशन के बाद का इतिहास।"

भारत के मुसलमानों का उन दिनों जो नेता था वह था मुहम्मद अली जिन्ना। उसके बारे में भले ही कुछ कहें, लेकिन यह सच है कि उसके जैसे आश्चर्यजनक नेता के विषय में मुसलिम धर्मावलंबी भी कल्पना नहीं कर पाते थे। मुहम्मद अली जिन्ना के मुसलमान होने का कारण यही था कि उनके मां-बाप मुसलमान थे। वह शराब पीता था। वर्जित मांस का भक्षण करता था। हर रोज सुबह दाढ़ी बनाता था और नियमानुसार हर शुक्रवार को मसजिद जाने के प्रति उदासीन रहता था। उसके राजनीतिक शत्रु गांधी कुरान की जितनी आयतें जबानी बोल सकते थे, वह बोल नहीं पाता था। फिर भी वही था भारत के बहुसंख्यक मुसलमानों का सर्वमान्य नेता।

मिस्टर जिन्ना का कोई मित्र नहीं था, पर उसके शागिर्दों की तादाद अनगिनत थी। वे लोग उसे पिता की तरह रक्षक समझते हुए श्रद्धा और भक्ति-भाव से देखते। कानून की पुस्तक और अखबार उसकी अति आवश्यक वस्तुएं थे। वह दुनिया भर के अखबारों को गौर से पढ़ता। जरूरत के पृष्ठों को काटकर रख लेता। उन कतरनों के ढेर उसकी अलमारी में ठुसे रहते। अक्सर उन पर धूल की परतें बिछी रहतीं।

उसके दुश्मनों की संख्या भी कोई कम न थी। वे उसके चरित्र के दोषों के हर पहलू को उजागर करने में लगे रहते। परन्तु उसके दोस्त और दुश्मन दोनों इस संबंध में एक-सी राय रखते कि उसके अन्दर तीव्र इच्छा शक्ति है। इस मामले में उसका मुकाबला कोई भी नहीं कर सकता था।

और जवाहरलाल नेहरू?

कश्मीर के कट्टरपन्थी ब्राह्मण वंश के होने के बावजूद वे सोलह वर्ष की उम्र में इंगलैण्ड गए। कैम्ब्रिज में नीत्शे और चौसर का अध्ययन किया। कहा जा सकता है कि वहां जाकर अध्ययन करते-करते वे ऐसे साहब हो गए कि जब लौटकर देश आए तो उनके परिवार को यह देखकर हैरानी हुई कि उनमें लेश-मात्र

शादी कराकर उसे जबरन सिख बना दिया है। इससे उसकी हानि ही क्या हुई ? उसे तो अपने जन्मस्थान में ही रहने का मौका मिला है। दर्शन सिंह की धर्मपत्नी बनने का अधिकार प्राप्त हुआ है। उसे और चाहिए ही क्या ! अब बाक़ी ही क्या रहा उसके लिए पाने को !

सुखजिंदर सिंह को जब पता चला कि दर्शन सिंह के लड़की पैदा हुई है तो उसने दर्शन सिंह को पवित्र ग्रंथ-साहिब का स्पर्श करने को कहा।

दर्शन सिंह ने अकस्मात् ग्रंथ-साहिब से एक पन्ना खोला। सहसा जिस पन्ने पर जाकर उसका हाथ थम गया, उस पन्ने का पहला अक्षर 'त' था। दर्शन सिंह ने उसी अक्षर को मिलाकर लड़की का नाम 'तनवीर' रखा। तनवीर का अर्थ है आसमान की करामात। आकाश का विस्मय।

दर्शन सिंह ने हसीना से पूछा, "लड़की का नाम तुम्हें पसन्द आया ?"

"बेहद पसन्द आया।" हसीना ने कहा।

अब हसीना को चाहिए ही क्या ! वह अब मां बन गई है। जिस लड़की को किसी दिन ठौर नहीं मिल रहा था, जिसका अपना कोई नहीं था, अब वह स्त्री हो गई है, अब एक लड़की की मां बन गई है। यह क्या कोई कम बात है !

उसने लाड़ से तनवीर को चूम लिया।

सच, तनवीर आसमान की करामात है।

आसमान की करामात के सिवा उसकी तनवीर और हो ही क्या सकती है ? विस्मय से भरे आकाश ने ही उसकी तनवीर को भेजा है। तनवीर उसके मन के आकाश का चांद है, आकाश का चांद ही तनवीर बनकर उसकी गोद में आया है। उसके सुख की कोई इयत्ता है ?

दर्शन सिंह के सुख की कोई इयत्ता नहीं, कोई सीमा-रेखा नहीं। उसने कभी कल्पना नहीं की थी कि एक दिन उसकी शादी होगी, उसकी गृहस्थी बस जाएगी और उसे इतने सुख का अहसास होगा।

मगर कौन जाने, दर्शन सिंह की उस दिन की बात सुनकर इतिहास-विधाता को हंसी आई या उसकी भृकुटि तन गई ! शायद भृकुटि ही तन गई अन्यथा'''।

पर वह बात अभी रहे।

लीबिया में फर्श पर बैठी मिसेज सुलताना बोलीं, "आप क्या यह सोच सकते हैं मिस्टर ग्रिफ़िथ, कि वह तनवीर आज की मैं हूं—यानी आज की यह मिसेज सुलताना ?"

मिस्टर ग्रिफिथ बोले, "यह क्या! सिख लड़की तनवीर किस तरह मिसेज सुलताना हो गई?"

मिसेज सुलताना ने कहा, "इसलिए तो कहा था, मैं आधी सिख और आधी मुसलमान हूं।"

मिस्टर ग्रिफिथ ने पूछा, "यह कैसे हुआ?"

"इसीलिए तो मैं आपको भारत जाने कह रही हूं।" मिसेज सुलताना ने कहा, "सोवियत के संबंध में इतिहास लिखकर क्या होगा? ईस्ट एशिया या वेस्ट एशिया के बारे में इतिहास लिखकर क्या होगा? आप साउथ-ईस्ट एशिया जाइए। उस देश के संबंध में उपन्यास लिखिए। उपन्यास का उतना उपादान आपको और कहीं नहीं मिलेगा। खासतौर पर पार्टिशन और पार्टिशन के बाद का इतिहास।"

भारत के मुसलमानों का उन दिनों जो नेता था वह था मुहम्मद अली जिन्ना। उसके बारे में भले ही कुछ कहें, लेकिन यह सच है कि उसके जैसे आश्चर्यजनक नेता के विषय में मुसलिम धर्मावलंबी भी कल्पना नहीं कर पाते थे। मुहम्मद अली जिन्ना के मुसलमान होने का कारण यही था कि उसके मां-बाप मुसलमान थे। वह शराब पीता था। वर्जित मांस का भक्षण करता था। हर रोज सुबह दाढ़ी बनाता था और नियमानुसार हर शुक्रवार को मसजिद जाने के प्रति उदासीन रहता था। उसके राजनीतिक शत्रु गांधी कुरान की जितनी आयतें जबानी बोल सकते थे, वह बोल नहीं पाता था। फिर भी वही था भारत के बहुसंख्यक मुसलमानों का सर्वमान्य नेता।

मिस्टर जिन्ना का कोई मित्र नहीं था, पर उसके शागिर्दों की तादाद अन-गिनत थी। वे लोग उसे पिता की तरह रक्षक समझते हुए श्रद्धा और भक्ति-भाव से देखते। कानून की पुस्तक और अखबार उसकी अति आवश्यक वस्तुएं थे। वह दुनिया भर के अखबारों को गौर से पढ़ता। जरूरत के पृष्ठों को काटकर रख लेता। उन कतरनों के ढेर उसकी अलमारी में ठुंसे रहते। अकसर उन पर धूल की परतें बिछी रहतीं।

उसके दुश्मनों की संख्या भी कोई कम न थी। वे उसके चरित्र के दोषों के हर पहलू को उजागर करने में लगे रहते। परन्तु उसके दोस्त और दुश्मन दोनों इस संबंध में एक-सी राय रखते कि उसके अन्दर तीव्र इच्छा शक्ति है। इस मामले में उसका मुकाबला कोई भी नहीं कर सकता था।

और जवाहरलाल नेहरू?

कश्मीर के कट्टरपन्थी ब्राह्मण वंश के होने के बावजूद वे सोलह वर्ष की उम्र में इंगलैण्ड गए। कैम्ब्रिज में नीत्से और चौसर का अध्ययन किया। कहा जा सकता है कि वहां जाकर अध्ययन करते-करते वे ऐसे साहब हो गए कि जब लौट-कर देश आए तो उनके परिवार को यह देखकर हैरानी हुई कि उनमें लेश-मात्र

भी भारतीयता नहीं है।

लेकिन इलाहाबाद आने पर उनकी ग़लतफ़हमी दूर हो गई। इलाहाबाद ब्रिटिश क्लब का मेम्बर बनने की उन्होंने कोशिश की परन्तु उन्हें कामयाबी हासिल नहीं हुई। उन्होंने आश्चर्यचकित होकर देखा, वहां सफ़ेद चमड़े वालों का अप्रतिहित अधिकार है। चाहे वह गरीब हो या मध्यवित्त लेकिन उनके लिए कोई वैधानिक अड़चन नहीं है। आपत्ति है तो केवल उन्हीं के लिए। क्योंकि उनके जैसे शिक्षित व्यक्ति काले नीग्रो के अलावा और कुछ नहीं हैं।

उसी समय से उनके चिन्तन का एक मात्र लक्ष्य भारत की स्वतन्त्रता हो गया। भारत को स्वतन्त्र किए बिना उनका अपमान दूर नहीं होगा, उस अपमान की मैल मिटेगी नहीं।

उसी दिन से जवाहरलाल देश के सिपाही बन गए और गांधी जी का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया।

माउन्ट बेटन जब वाइसराय नियुक्त होकर भारत आए तो शुरू में गांधी जी को ही निमंत्रित कर उनके सामने प्रस्ताव रखा।

बोले, "अब हम भारत छोड़कर चले जाना चाहते हैं।"

गांधी जी ने कहा, "चले जाइए। मैंने इसीलिए 1942 में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन किया था।"

माउन्ट बेटन ने कहा, "मगर सिर्फ़ चले जाने से ही काम नहीं चलेगा। हम चाहते हैं कि हमारे जाने के बाद आप लोगों में मार-काट खून-खराबा का दौर न चले।"

गांधी जी ने कहा, "ऐसा क्यों होगा। आप लोग सदा 'डिवाइड एण्ड रूल' पालिसी अमल में लाते रहे हैं और इसी वजह से यहां इतनी मार-काट होती रही है। आप लोगों के चले जाने के बाद यह सब नहीं होगा।"

माउन्ट बेटन ने कहा, "मगर मुहम्मद अली जिन्ना तो पाकिस्तान की मांग करते हैं।"

गांधी जी ने कहा, "तो फिर मुसलमानों के हाथ में ही देश चलाने की जिम्मेदारी सौंप जाइए। हमें कोई ऐतराज नहीं है। मिस्टर जिन्ना को ही देश का प्रेसिडेंट या प्राइम मिनिस्टर बनने दें। हम उन्हें ही राजा मान लेंगे।"

"और अगर आपकी कांग्रेस इसका विरोध करे तो ?"

गांधी जी ने कहा, "मैं कांग्रेस का संस्थापक नहीं हूं और न साधारण मेम्बर ही। मैं अपनी बात बता सकता हूं। कृपया आप भारत को टुकड़ों में नहीं बांटे। इससे आप लोगों के चले जाने पर भी, हो सकता है, आप लोगों को सुविधा हो। मगर आप भारत की जनता के बारे में एक बार सोचकर देखें। यहां के आम लोगों के बारे में सोच-विचार कर मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि देश का बंटवारा नहीं

र वे चाचा के पास आए भी थे और उनके घर पर कुछ दिन टिके

पर दर्शन सिंह ने उनकी भरपूर आवभगत की थी। दर्शन सिंह से
ा था, उसने उनके लिए किया है। प्रेमजिन्दर मिठाई खाना बेहद
ग्रौर करतार सिंह मास। दर्शन सिंह ने उन्हें भरपूर खिलाया है।
नके लिए क़ीमती कपड़े खरीद कर ले आया है।
उन्हें और क्या चाहिए, बताओ।"
ने अपने चाचा से कुछ मांगा है, उन्हें मिला है। चाचा ने उनकी
नहीं रहने दी है।
नो और बड़े हुए। उस समय भी कितनी ही चीजें खरीदकर
पास भेज दी हैं। फुटबॉल और क्रिकेट का बैट खरीदकर भेज
उन्होंने चाचा से जो कुछ मांगा है, उन्हें मिलता रहा है। किसी भी
ह ने कंजूसी नहीं की है।
। कैसे उस दुनिया में एकाएक बदलाव आ गया! दोनों भाई
ाज में लगकर अलग हो गये। विश्व में अचानक जर्मनी और
न गई और इसके फलस्वरूप भारत में अकाल पड़ गया।
ज्यादा खुदगर्ज हो गए। सम्मिलित परिवार टूट कर टुकड़ों
ही मां के पेट से जनमे भाइयों में आपस में तकरार होने लगी।
ब खत्म होने पर सेना के बहुत सारे लोग कार्यमुक्त होकर
व लौट आए और वहां जमीन-जायदाद खरीदकर सरदार
रेजिमेंट के जवानों ने आकर देखा, जिनके पास रहकर इतने
ते आए हैं, वे ही मुल्क में लोगों की नजरों में दुश्मन बन गए
इस देश से छोड़ अपने देश जा रहे हैं। संपूर्ण भारत को तोड़
ड़कर छोटा बना देना चाहते हैं। मुसलमान सारा कुछ छोड़-
फ़ कूच कर रहे हैं और उस तरफ़ से हिन्दुओं और सिखों ने
 और आना शुरू कर दिया है।
की याद आई।
दिन अचानक आने पर देखा, उसके चाचा ने शादी कर ली
जानकारी नहीं थी। दरवाजा खोलते ही किसी ने कहा,

ड़ते ही प्रेमजिन्दर अवाक् रह गया। चाचा के घर में तो
यह कौन है?
"मैं दर्शन सिंह का भतीजा हूं।"
ाबर भेजी गई। खबर मिलते ही दर्शन सिंह आ गया।

यही वजह है कि जिस दिन माउन्ट बेटन से पाकिस्तान के संबंध में बातचीत शुरू हुई, उस दिन जिन्ना साहब ने कहा था, "आपको जो कुछ करना है जल्द से ज़ल्द करें। आप जितनी देर करेंगे, हमारी कोशिशें उतनी ही नाकाम होती जाएंगी।"

यह बात जिन्ना साहब के जीवन के लिए नग्न सत्य थी।

क्योंकि पाकिस्तान की स्थापना होने के दो-तीन महीने बाद ही उनका हृदय-रोग और अधिक जटिल हो गया। और केवल जिन्ना का हृदय रोग ही नहीं, बल्कि इस पूरे उप महादेश भर में उखड़े हुए लोगों के कारण भीषण जटिलता का माहौल पैदा हो गया।

दर्शन सिंह के जीवन के सुख की पराकाष्ठा इतिहास-पुरुष संभवतः बर्दाश्त नहीं कर सका। उसके तीन पुश्त में वैसा कोई नहीं था, जिसे वह अपना कह सके। लेकिन एक दिन अचानक कुछ लोग उसके जीवन में आकर हाज़िर हो गए।

बहुत दिनों से दर्शन सिंह के दो भतीजों के मन में बड़ा ही दुःख था। प्रेमजिंदर सिंह और करतार सिंह सोचते थे, एक दिन उन्हें दर्शन सिंह की ज़मीन-जायदाद मिलेगी। दर्शन सिंह ने जिस दिन हसीना से शादी कर ली उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे उनके माथे पर बिजली आकर गिर पड़ी हो।

यह समाचार मिलते ही प्रेमजिन्दर सिंह दौड़ा-दौड़ा अपने भाई करतार सिंह के घर पहुंचा।

करतार सिंह को यह समाचार पहले ही मिल चुका है। प्रेमजिन्दर सिंह ने अपने बड़े भाई से पूछा, "अब क्या होगा ?"

करतार सिंह बोला, "मैं वकील साहब के पास गया था। जाकर उन्हें सारा कुछ बताया।"

"वकील ने क्या कहा ?"

"वकील साहब ने एक हफ़्ते के बाद बुलाया है।"

पहले भाइयों में परस्पर कोई खास हेल-मेल न था। दोनों अलग-अलग दो गांव में रहते थे। दोनों को पैसे की तंगी रहती थी। हालांकि उनका जन्म और लालन-पालन एक ही घर में हुआ था। जब वे कुछ बड़े हुए तो दर्शन सिंह के भाई का देहान्त हो गया। अपने भाई की मृत्यु की खबर पाकर दर्शन सिंह वहां गया था।

दर्शन सिंह ने दोनों को सांत्वना दी थी, "अरे मैं तो अभी ज़िन्दा हूं। मेरे रहते तुम लोगों के लिए भय की क्या बात है ? तुम लोग दुखी मत होओ। मुझे बीवी और बाल-बच्चे नहीं हैं, तुम लोग ही मेरे सगे हो। मेरे रहते तुम लोगों को कोई तकलीफ़ न होगी। चलो, तुम लोग चलकर मेरे साथ रहो।"

दो-चार बार वे चाचा के पास आए भी थे और उनके घर पर कुछ दिन टिके भी थे।

उनके आने पर दर्शन सिंह ने उनकी भरपूर आवभगत की थी। दर्शन सिंह से जो कुछ बन सकता था, उसने उनके लिए किया है। प्रेमजिन्दर मिठाई खाना बेहद पसन्द करता था और करतार सिंह मांस। दर्शन सिंह ने उन्हें भरपूर खिलाया है। बाजार जाकर उनके लिए क़ीमती कपड़े खरीद कर ले आया है।

कहा था, "तुम्हें और क्या चाहिए, बताओ।"

दोनों भाइयों ने अपने चाचा से कुछ मांगा है, उन्हें मिला है। चाचा ने उनकी कोई इच्छा अधूरी नहीं रहने दी है।

इसके बाद दोनों और बड़े हुए। उस समय भी कितनी ही चीजें खरीदकर दर्शन सिंह ने उनके पास भेज दी हैं। फुटबॉल और क्रिकेट का बैट खरीदकर भेज दिया है। उन्होंने अपने चाचा से जो कुछ मांगा है, उन्हें मिलता रहा है। किसी भी मामले में दर्शन सिंह ने कंजूसी नहीं की है।

लेकिन न जाने कैसे उस दुनिया में एकाएक बदलाव आ गया ! दोनों भाई अलग-अलग काम-काज में लगकर अलग हो गये। विश्व में अचानक जर्मनी और इंगलैण्ड में लड़ाई ठन गई और इसके फलस्वरूप भारत में अकाल पड़ गया। भारत के लोग और ज्यादा खुदगर्ज हो गए। सम्मिलित परिवार टूट कर टुकड़ों में बंटा गया। एक ही मां के पेट से जनमे भाइयों में आपस में तकरार होने लगी। उसके बाद लड़ाई जब खत्म होने पर सेना के बहुत सारे लोग कार्यमुक्त होकर अपने मुल्क और गांव लौट आए और वहां जमीन-जायदाद खरीदकर सरदार कहलाने लगे। सिख रेजिमेंट के जवानों ने आकर देखा, जिनके पास रहकर इतने दिनों तक वे काम करते आए हैं, वे ही मुल्क के लोगों की नजरों में दुश्मन बन गए हैं। अचानक वे उन्हें इस देश से छोड़ अपने देश जा रहे हैं। संपूर्ण भारत को तोड़ कर, उसे टुकड़ों में बांटकर छोटा बना देना चाहते हैं। मुसलमान सारा कुछ छोड़कर पाकिस्तान की तरफ कूच कर रहे हैं और उस तरफ से हिन्दुओं और सिखों ने इस पार के भारत की ओर आना शुरू कर दिया है।

उस समय चाचा की याद आई।

प्रेमजिन्दर ने एक दिन अचानक आने पर देखा, उसके चाचा ने शादी कर ली है। इस बात की उसे जानकारी नहीं थी। दरवाजा खोलते ही किसी ने कहा, "किससे मिलना है ?"

हसीना पर नजर पड़ते ही प्रेमजिन्दर अवाक् रह गया। चाचा के घर में तो कोई औरत न थी। फिर यह कौन है ?

प्रेमजिन्दर ने कहा, "मैं दर्शन सिंह का भतीजा हूं।"

फौरन खेत पर खबर भेजी गई। खबर मिलते ही दर्शन सिंह आ गया।

प्रेमजिन्दर को देखकर दर्शन सिंह बेहद ख़ुश हुआ। घर के बारे में पूछताछ की—यह कैसा है, वह कैसा है। यही सब बातें। भतीजे को खिलाने के लिए बकरा कटवाया। दो-चार दिन तक भरपूर खान-पान का दौर चला। लेकिन वह चाचा के घर में ज्यादा दिनों तक नहीं टिका। प्रेमजिन्दर चला गया।

वापस आकर वह सीधे अपने बड़े भाई घर पहुंचा।

बोला, "भाई साहब, चाचा ने शादी की है।"

"शादी की है ?"

प्रेमजिन्दर बोला, "हां भाई सा'ब, चाचा के एक लड़की भी हुई है।"

"शादी कहां हुई ? हमें तो कोई ख़बर न दी !"

प्रेमजिन्दर बोला, "ख़बर भेजेंगे तो कैसे ? चाचा ने मुसलमान लड़की से शादी की है। पन्द्रह सौ रुपये में लड़की खरीदकर उससे शादी की है। एक लड़की भी हुई है। उसका नाम तनवीर रखा है।"

करतार सिंह उन दिनों मोटर के एक कारखाने में काम करता था। सब कुछ सुनने के बाद दूसरे दिन ही वकील के घर पहुंचा। यह ख़बर तो सब कुछ मटियामेट कर देने वाली है।

बोला, "आप कोई रास्ता निकालें वकील साहब ! चाचा के पास बहुत जगह-जमीन है। हमीं उसके असली वारिस हैं। शादी कर ली है तो फिर हम वारिस नहीं रह पाएंगे। अब क्या किया जाए ?"

वकील ने पेशगी के तौर पर कुछ रुपये भी लिये। बोला, "एक हफ़्ते के बाद आओ। उस समय कोई रास्ता निकाल दूंगा।"

प्रेमजिन्दर और करतार को अब देर बर्दाश्त नहीं हो रही है। ठीक सात दिन के बाद ही वे वकील के यहां आ धमके।

वकील साहब ने पहले ही सारी बातों की तहकीकात कर ली थी।

पूछा, "तुम्हारे चाचा दर्शन सिंह ने शादी की है, इसका कोई सबूत तुम लोगों के पास है ?"

करतार सिंह बोला, "हां हुज़ूर, सबूत गुरुदासपुर के गुरुद्वारे में है। वहां जाकर हमने सारी बातों की छानबीन की है। यह देखिए हुज़ूर इसमें नाम, शादी की तारीख वग़ैरह लिखा हुआ है।"

"तुम्हारे चाचा ने जिस लड़की से शादी की है उसका नाम हसीना बीवी है ?"

"हां हुज़ूर ! यह देखिए, इसमें शादी की तारीख भी लिखी हुई है।

सारा कुछ देखने के बाद वकील बोला, "ठीक है, सारा कुछ ठीक हो जाएगा। तुम लोग फ़िक्र मत करो।"

"ठीक हो जाएगा हुज़ूर !"

"हां, मैं कह रहा हूं न, कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। तुम लोग किसी तरह की चिन्ता मत करो।"

बात बिलकुल सही है। माउन्ट बेटन से जब दोनों देशों के नेताओं का करारनामा हुआ तो उसी समय क़ानून की एक धारा जोड़ दी गई थी कि यदि कोई हिन्दू या सिख या अन्य धर्मावलंबी या अल्पसंख्यक संप्रदाय का व्यक्ति संबद्ध देश में अटका हुआ रह जाए तो जब तक उसके सगे-संबंधी का पता न चले तब तक सरकारी विस्थापित-शिविर में, संबद्ध सरकार को ही उसके खर्च, देख-रेख और भरण-पोषण का भार उठाना पड़ेगा। और, सगे संबंधी का पता चलते ही उसकी सम्मति से संबद्ध देश को अवगत कराना होगा और सरकारी खर्च पर ही उसे उसके सगे-संबंधी के पास भेजना पड़ेगा।

यही है क़ानून। इसी कानून के रहने के कारण सरकार द्वारा संचालित विस्थापित शिविर में लाखों-लाख खोये हुए स्त्री-पुरुष अनिश्चित काल से रह रहे थे।

लिहाजा इसी क़ानून के तहत हसीना बीबी को पाकिस्तान भेजा जा सकता है। इससे ही प्रेमजिन्दर सिंह और करतार सिंह के दिल का मक़सद मुकम्मल हो सकता है।

वकील साहब ने पूछा, "पाकिस्तान में तुम्हारी चाची का कोई सगा-संबंधी है?"

उन लोगों ने कहा, "हां हुजूर, है।"

"कौन है?"

"चाची का बड़ा भाई।"

"उसके बड़े भाई का नाम जानते हो?"

"बड़े भाई का नाम है असगर अली।"

"पता मालूम है?"

"इसका हम इन्तजाम कर चुके हैं।"

वकील ने असगर अली का नाम पता लिख लिया और कहा, "अब तुम लोगों के लिए डर की कोई बात नहीं है। मैं तुम लोगों का सारा कुछ सही रास्ते पर ला दूंगा।"

करतार सिंह और प्रेमजिन्दर ने और कुछ रुपये जमा कर दिए। वकील साहब को भी तो खर्च वग़ैरह करना है। इसके अलावा अगर कोई वकील का दरवाजा खटखटाता है तो उसे छुटकारा नहीं मिलता। उसको तबाह होना ही पड़ता है। प्रेमजिन्दर और करतार तो रुपये का जाल बिछाने को तैयार ही है। उन्हें अपना सारा कुछ लुटा देने पर भी यदि चाचा की जगह-ज़मीन की मिल्कियत हासिल हो जाती है तो फिर उन्हें आपत्ति ही क्या हो सकती है?

दर्शन सिंह के भतीजों की तक़दीर अच्छी है कि उन्हें एक अच्छा और ईमानदार वकील मिल गया है। इसके कारण कई महीने के दरमियान ही उनके पक्ष में फ़ैसला हो गया।

इसके साथ ही उनका काम भी पूरा हो गया।

उस दिन सुबह ही पुलिस आकर दर्शन सिंह का दरवाज़ा खटखटाने लगी।

अन्दर से दर्शन सिंह ने पूछा, "कौन है ?"

"दरवाज़ा खोलो। पुलिस आई है।"

दरवाज़ा खोलते ही दर्शन सिंह अचंभे में आ गया। दो-तीन पुलिस के आदमी खड़े हैं। वे अपने साथ अदालत का परवाना ले आए हैं।

"आपने मुसलमान औरत को अपने घर में छिपा कर रखा है ?"

"मैं ? मैंने मुसलमान औरत को घर में छिपाकर रखा है, आप लोगों से यह किसने कहा ?"

पुलिस बोली, "हां, इस परवाने में सारा कुछ लिखा हुआ है। लीजिए, देखिए।"

दर्शन सिंह निरक्षर है। वह परवाना पढ़कर क्या समझेगा ?

बोला, "मैंने मुसलमान लड़की से शादी की है और उसे अपनी घरनी बना लिया है।"

"नहीं, आपका काम ग़ैरक़ानूनी है। हम उसे ले जाने के लिए आए हैं। आप अपनी घरवाली को बुलाइए वरना हम उसे जबर्दस्ती ले जाएंगे। अपनी बीवी को बुलाइए···।"

हसीना अब तक अन्दर से सब कुछ सुन रही थी। अब वह अपनी लड़की को गोद में लिये बाहर आकर खड़ी हुई।

दर्शन सिंह बोला, "यह मेरी औरत है और वह मेरी लड़की तनवीर।"

पुलिस ने उस बात पर ध्यान नहीं दिया। हसीना की तरफ़ देखकर बोली, "चलिए-चलिए, सरकारी बुलावा है।"

दर्शन सिंह ने कहा, "नहीं, वह नहीं जायेगी। वह मेरी शादी-शुदा बीवी है।"

"ऐसी हालत में हम जबरन हसीना बीवी को ले जाएंगे।"

अब हसीना सुबक-सुबक कर रोने लगी। रोते-रोते बोली, "मैं नहीं जाऊंगी सिपाही जी दर्शन सिंह ने शादी कर मुझे अपनी बीवी बनाया है। यह तनवीर मेरी बेटी है, मैं उसकी मां हूं। मुझे पकड़कर मत ले जाइए सिपाही जी।"

मगर क़ानून, क़ानून है। क़ानून के जाल से कोई आदमी बाहर नहीं निकल सकता है। इस मामले में वह निर्मम है। निर्मम, निष्ठुर निर्विकार।

"नहीं, जाना ही पड़ेगा। हुक्म की तामील करनी ही होगी। हम लोग आपको छोड़ नहीं सकते।"

इस पर हसीना का धीरज जवाब दे बैठा। एकाएक उसने तनवीर को अपनी गोद में उठाकर दर्शन सिंह की गोद में रख दिया और सिपाही जी के पैरों को पकड़ लिया। पहले की तरह ही रोती हुई बोली, "मुझे छोड़ दें सिपाही जी ! मैं दर्शन सिंह की बीवी हूं, तनवीर की मां हूं।"

हसीना की रुलाई सुन मुहल्ले के कुछ लोग आकर इकट्ठे हो गए।

"क्या हुआ सिंह साहब ? क्या हुआ ?"

दर्शन सिंह बोला, "यह देखो भाई, पुलिस के आदमी मेरी ब्याहता बीवी को यह सब थमाकर कचहरी ले जा रहे हैं। उनका कहना है, वह मुसलमान औरत है। उसे वे लोग पाकिस्तान भेज देंगे।"

उन लोगों ने कहा, "ऐसा कैसे हो सकता है ? तुमने तो उससे शादी की है भाई। अब वह सिख लड़की है। उसे हिन्दुस्तान में रहने का हक है। उसे किस कानून से ले जाएंगे ?"

सिपाहियों ने कहा, "ऐसा कानून है। यह देखो कचहरी का हुक्मनामा।"

उन लोगों ने परवाने को देखा। मगर किसी की समझ में कुछ भी नहीं आया। वे लोग इतने शिक्षित नहीं हैं।

उन लोगों ने कहा, "तुम गुरुद्वारा जाओ सिंह जी। जाकर सुखजिन्दर सिंह जी को सब कुछ बताओ। वे तुम्हें रिहाई का रास्ता बता देंगे।"

दर्शन सिंह तनवीर को गोद में उठाकर झटपट गुरुद्वारा की ओर चल पड़ा। मुहल्ले के कितने ही लोग दर्शन सिंह के साथ-साथ चल दिए। सुखजिन्दर सिंह और उसके सहकर्मी जो कहेंगे, वही होगा। सरकार उन लोगों से बड़ी नहीं है।

हसीना बीवी अब भी सिपाही के पैर पकड़कर रो रही है, रो रही है। कहती है, "अब मैं मुसलमान नहीं हूं सिपाही जी। अब मैं सिख हो गई हूं। मुझे छोड़ दो, मुझे रिहा कर दो।"

मगर कौन किसकी सुनता है ! जिसके पास हुक्मनामा है, उन्हें किसी की भी परवाह नहीं। वे लोग हसीना को उसी हालत में पकड़कर ले गए। उसने कितनी ही चिरौरियां कीं मगर पुलिस के आदमी उसकी बात क्यों मानने लगे ? वे लोग उसे जीप पर बिठाकर चल दिए।

रास्ते-भर हसीना फफक-फफककर रोती रही—अपने दर्शन सिंह, अपनी तनवीर और घर-संसार के लिए। उसके बाद वे लोग उसे पकड़कर कितनी दूर ले गए उसका पता नहीं चला। उसके बाद जितने दिनों तक वह सरकारी विस्थापित कैंप में थी, उसके दिन रोते-रोते ही बीते हैं।

दूसरे-दूसरे विस्थापित उसकी रुलाई सुन उसके पास आते, पूछते, "तुम इतना क्यों रो रही हो ? तुम्हारे रोने का क्या कारण है ? पुलिस के आदमी तुम्हें पाकिस्तान भेज देंगे। पाकिस्तान ही तो हमारा असली मुल्क है। वहां पहुंचने पर

देखना तुम्हें कितना आराम और सुख मिलता है। वहां तुम अपने रिश्तेदार के पास रहोगी। तुम्हें वहां कोई तकलीफ़ नहीं होगी।"

तो भी हसीना की रुलाई रुकने का नाम नहीं लेती। कहती, "लेकिन मेरी तनवीर का क्या होगा? उसके बिना मेरा मन ज़रा भी नहीं लगता। वह मेरे हाथ के अलावा किसी और के हाथ से खाना नहीं खाती है।"

हसीना जितने दिनों तक वहां रही, उसने किसी वक़्त खाना नहीं खाया। उसे सिर्फ़ उस गांव और दर्शनसिंह के मकान की याद आती। वहां अब भैंस कौन दुहता है, कौन जाने! कौन तनवीर को चाय बनाकर देता होगा? कौन उसे खाना खिलाता होगा? तनवीर तो अपनी मां के अलावा किसी और के साथ खाना नहीं खाती है। रात के समय मां के साथ लेटे बग़ैर तनवीर को नींद नहीं आती है। कौन उसे थपकियां देकर सुलाएगा? अब वह किसके पास सोती होगी?

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने कहा, "ब्रिटिश सरकार भारत को जो टुकड़ों में बांटकर चली गई। भारत की भलाई के लिए नहीं बल्कि अपनी सुख-सुविधा के लिए ऐसा कर गई। 'डिवाइड एंड रूल'—यानी फूट डालो और राज्य करो—रणनीति को अपना कर वे इतने दिनों तक शासन करते आए थे। जब देखा उन्हें बोरिया-बस्ता समेट-कर चले जाना है तो सोचा, देश को इस तरह तोड़ दें—यानी टुकड़ों में बांट दें जिससे कि भारत के लोग कभी अपनी कमर सीधी कर खड़े न हो सकें और हमेशा के लिए हम पर निर्भर करने को लाचार हो जाएं। इसके अलावा हिन्द महासागर तो हमारे हाथ में ही रहा। उसके चारों तरफ़ के इलाके हमारे ही अधिकार में रहे। वहां हैं मैडागास्कर दियागो ग्रोसिया, मारीशस और सेसेलस। वे सब हमारे ही अधीन हैं। बीच में है इस्राइल। उस कांटे को हमने बहुत दिन पहले बिछा दिया है। उस कांटे से ही हम कांटा निकालेंगे। पाकिस्तान से भारत की हमेशा झड़प होती रहेगी तो हमारा उद्देश्य पूरा होता रहेगा। वे सब विकासशील देश हैं। वे लोग तोप, बन्दूक और लड़ाकू विमानों के लिए हमारे दरवाज़े खटखटाएंगे और उस मौके से फ़ायदा उठाते हुए हम और अधिक पौंड और डॉलर कमा लेंगे।"

"आप यह सब अपने उपन्यास में लिख पाएंगे?" मैंने पूछा। "क्यों नहीं लिख पाऊंगा?" मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, "आप लोग जिस तरह हमारे लेखक इमर्सन, ह्विटमैन और थोरो को पढ़कर लाभान्वित हुए हैं, उसी तरह हमारे देश के मार्टिन लूथर किंग जूनियर आपके देश के महात्मा गांधी से अहिंसा और सत्याग्रह की सीख लेकर और उसे अमल में लाकर शहीद हो गए हैं। अब उनके नाम पर सरकारी अवकाश देकर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया जाता है। अमरीकी सरकार चाहे

जितनी भी निरंकुश हो लेकिन हम अमरीका में स्वाधीन हैं। हम मुहिम न छेड़ते तो अमरीकी सरकार क्या वियेतनाम छोड़कर चली जाती ?"

उसके बाद जरा रुककर अपना कथन जारी रखा, "भारत के तमाम लोग जिस तरह महात्मा गांधी या अपने प्राइमिनिस्टर का नाम नहीं जानते, उसी तरह तमाम अमरीकी इमर्सन, हिटमैन और थोरो का नाम नहीं जानते। इसमें कुछ दोष भी नहीं है। यही वजह है कि जब मैंने लिविया को मिसेज सुलताना से बातचीत के दौरान भारत-विभाजन के समय की कहानी सुनी तो उसी क्षण मैंने तय किया, भारत के उसी युग की कहानी अपनी नई पुस्तक में लिखूंगा।

"मिसेज सुलताना ने भी मुझसे कहा था, उन दिनों मैं कम उम्र की थी इस-लिए कुछ समझ में नहीं आया था। मेरे चलते इतने काण्ड हो चुके हैं, मैं यह जान ही पाती कैसे ? जब बड़ी हो गई तो यह सब सुनने को मिला। उन कहानियों को सुनने के बाद मन में यही इच्छा जगती रही कि किसी दिन किसी उपन्यासकार से यदि जान-पहचान हो जाए तो उसे अपनी जिन्दगी की सारी घटना बताऊंगी और उस पर एक उपन्यास लिखने को कहूंगी, ताकि लोग मेरे पिताजी का दुःख समझ सकें कि मेरे पिताजी का निजी दुःख उन दिनों के तमाम लोगों का दुःख बन जाए और दूसरी-दूसरी जिन लड़कियों के पिता के दुःख से लोग परिचित नहीं हैं, वे उन पिता के दुःख की याद में आंसू के दो बूंद बहा सकें।"

"इसके बाद ?"

जीवन क्या कभी 'इसके बाद' की परवाह करता है ? वह तो इतिहास के रथ के पहिए की तरह ही निरन्तर घूमता रहता है। करतार सिंह और प्रेमजिन्दर सिंह उन दिनों उस रथ को निर्दयतापूर्वक खींचता रहे थे। इससे किसकी हानि हो रही है, यह देखने की जिम्मेदारी उनकी नहीं थी। चाचा की जगह जमीन-जायदाद सारा कुछ उत्तराधिकार के रूप में उन्हें मिलना ही चाहिए। माना, अभी उन्हें एक ही सन्तान है। बाद में यदि एक और सन्तान हो जाए तो फिर क्या होगा ? उसके बाद यदि और एक सन्तान हो···? ऐसा होना असंभव नहीं है।

दर्शन सिंह तनवीर को गोद में लिए जब घर लौटा तो देखा, उसका घर सूना है। बाबा सुखजिन्दर सिंह भी उनके साथ थे।

उन्होंने कहा, "लगता है, पुलिस तुम्हारी बीवी को पकड़कर ले गई और ले जाकर किसी सरकारी लंगरखाने में छोड़ आई है।"

"सरकारी लंगरखाना कहां है बाबा ?" दर्शन सिंह ने पूछा।

"सरकारी लंगरखाना क्या एक ही है ? दिल्ली में तलाश करने पर पता चल जाएगा कि तुम्हारी बीवी को कहां रखा है।"

मुहल्ले के जितने लोग उसके थे, उन्होंने कहा, "अरे सरदार, इतने दिनों तक बगैर शादी किए तुम मजे में थे। परेशानी में फंसने के लिए शादी करने क्यों गए ?

और शादी करनी ही थी तो मुसलमान लड़की से शादी करने क्यों गए ? अपनी जात की लड़की तुम्हें नहीं मिली ? हम लोगों की जात की लड़की की इतनी कमी है ? हमसे क्यों नहीं कहा ? हम तुम्हारे लिए एक अच्छी सिख लड़की का जुगाड़ कर देते ।"

दर्शन सिंह इसका क्या जवाब दे ! दर्शन सिंह की गोद में तनवीर है । नासमझ तनवीर । अपने बाप की गोद में है, इसलिए उसे कोई चिन्ता नहीं है ।

दर्शन सिंह खड़े-खड़े रो दिया ।

तनवीर ने अपने बाप को जीवन में कभी रोते नहीं देखा था । बाप को रोते देख पता नहीं क्यों, वह भी रोने लगी ।

तनवीर को रोते देख दर्शन सिंह की रुलाई थम गई । अपनी पगड़ी उतार उसने तनवीर की आंखें पोंछ दीं । बोला, "तू क्यों रही है बिटिया ? तेरे रोने का सबब क्या है ?"

मुहल्ले के लोगों ने कहा, "जाओ भाई, घर जाकर थोड़ा आराम करो । तुम्हारी तनवीर को भूख लगी होगी । उसे पहले खाना दो । जाकर रसोई पकाओ ।"

दर्शन सिंह बोला, "जिस घर में हसीना नहीं है उसमें क़दम रखना मुझसे गंवारा नहीं हो रहा है भाई साहब !"

उन लोगों ने कहा, "अरे भाई मेरे, समझ लो तुम्हारी बीवी मर गई है । किसी की बीवी की मौत नहीं होती क्या ? कितने ही लोगों की बीवियों की मौत होती है । शुरू-शुरू में वे रोते-धोते हैं, फिर एक दिन सब कुछ भूल जाते हैं । बहुतेरे लोग शादी भी कर लेते हैं । दुनिया में रहना है तो परेशानियों का मुक़ाबला करना ही होगा । घबराने से कहीं काम चलता है ?"

जो आदमी मुसीबतों में फंसता है वही मुसीबतों की चुभन महसूस करता है । और लोगों को इतना अहसास क्यों कर होगा ? वे सिर्फ़ उपदेश ही दे सकते हैं । उपदेश और मौखिक सांत्वना । इसके अलावा कुछ भी नहीं । बहरहाल, वे कितनी देर तक उसके पास रहेंगे ? एक-एक कर सब लोग अपने-अपने काम पर चले गए । लोगों के लिए वक्त क़ीमती है । परन्तु दर्शन सिंह क्या करे ? वह क्या लेकर रहे ? उसका अपना कौन है ? किसके पास जाकर वह फरियाद करे ?

लेकिन उसकी लड़की उसके पास है । उसकी भी तो देखभाल करनी है । उसे भूख लगेगी तो खाने के लिए हठ करेगी । नींद आएगी तो सोएगी । वह अपनी मां की कमी महसूस नहीं कर सकेगी । चन्द दिन बीत जाएंगे तो वह मां को बिलकुल भूल जाएगी । दर्शन सिंह भी तो अब अपने मां-बाप को भूल चुका है । लेकिन इस समय ?

आखिरकार दर्शन सिंह ने घर के अन्दर क़दम रखा । तनवीर को बग़ल में रख उसे अपनी दोनों भैंसों को भी दुहना पड़ा । चूल्हा सुलगाकर दूध खौलाया ।

चाय बनाई। तस्वीर को भी चाय पिलाई।

उसके बाद खाना पकाने बैठा। बहुत दिनों से उसे यह काम अपने हाथ से नहीं करना पड़ा है। इतने दिनों से हसीना ही यह सब करती आई है। घर भर झाड़ बुहारती, चाय बनाती, खाना पकाती। आज वह नहीं है। इसीलिए आज इतने कामों के दौरान भी दर्शन सिंह को महसूस हुआ कि उसका मकान, उसका जीवन बेमानी है। बेमानी और सूना।

खेत से आदमी खबर लेकर पहुंचाने आया। दर्शन सिंह के कंधे पर बहुत सारे कामों का बोझ है। और दिन वह खेतिहर मजदूरों को [illegible]। काम करने में कोताही करने पर उनसे कैफियत पूछता। आदेश देता और आदेश का ठीक से पालन हो रहा है या नहीं, इस पर निगरानी रखता।

मगर आज दर्शन सिंह ने कहा, "तबीयत ठीक नहीं है। तुम लोगों से जो बन पड़े, करो।"

खेत में गेहूं की फसल है। गेहूं के पौधों ने सारे खेतों को [illegible] है। मगर भाड़ में जाए गेहूं और गेहूं के खेत। उसे किसी चीज की जरूरत नहीं। हसीना ही चली गई तो फिर खेत-खलिहान, गेहूं और [illegible] लेकर [illegible] क्या करेगा? यह किसके लिए करे।

उस दिन गुरुद्वारा में सूचना आई कि दर्शन सिंह की बीबी हसीना की खबर मिली है।

समाचार मिलते ही दर्शन सिंह दौड़ा-दौड़ा बाबा के पास आया और पूछा, "मेरी हसीना कहां है बाबा?"

सुरजिन्दर सिंह ने कहा, "दिल्ली के [illegible] से।"

"वह कैसी है? अच्छी है न?"

"खबर मिली है कि अच्छी है। पाकिस्तान में उसके भाई [illegible] का पता लगाया जा रहा है। पता मिलते ही उसे पाकिस्तान की पुलिस के सुपुर्द कर दिया जाएगा।"

दर्शन सिंह ने पूछा, "बाबा, तो फिर वह मेरे पास नहीं आएगी?"

सुरजिन्दर सिंह बोले, "[illegible] नहीं सकता। हिन्दुस्तान सरकार और [illegible] हुआ [illegible]। इसे [illegible] हुए [illegible] बात [illegible]।"

सब कुछ सुनने के बाद दर्शन सिंह [illegible]

पूछा, "अब मैं क्या करूं बाबा?"

बाबा बोले, "रोने के अलावा करोगे ही क्या ?"

"रोने से मेरी हसीना मिल जाएगी बाबा ?"

बाबा बोले, "यह तो सिर्फ़ बड़े लाट साहब ही बता सकते हैं।"

"बड़े लाट साहब ? वह कौन है बाबा ?"

बाबा बोले, "हमारे हिन्दुस्तान के बाप का बाप।"

"उसका नाम और पता क्या है बाबा ?"

बाबा बोले, "उसका नाम है लार्ड माउण्ट बेटन।"

"उसका पता क्या है बाबा ?"

बाबा बोले, "बेवकूफ़ ईश्वर का कोई पता-ठिकाना हुआ करता है ! ईश्वर तो हर जगह है। जहां भी खोजोगे, मिल जाएगा।"

दर्शन सिंह बोला, "तो फिर मैं दिल्ली जाऊं बाबा ?"

"हां, वहीं जाओ। वहां जाकर तुम जिससे भी पूछोगे वह तुम्हें हिन्दुस्तान के बाबा का पता बता देगा।"

दर्शन सिंह ने पूछा, "दिल्ली जाकर कहां डेरा डालूं ?"

"दिल्ली के गुरुद्वारे में ठहर जाना। वहां फ़िलहाल बहुत भीड़-भाड़ है। वहीं एक किनारे पड़े रहना। वे लोग ही तुम्हें लंगरखाने का पता-ठिकाना बता देंगे। वहां तुम्हारी बीबी का नम्बर तीन सौ चालीस है। इस नम्बर को याद रखना, भूल मत जाना।"

दर्शन सिंह ने कहा, "तीन सौ चालीस ?"

"हां। मैंने खोज-खबर लेकर तुम्हारी बीबी के नम्बर का पता लगाया है। इस नम्बर को कहते ही वे लोग तुम्हारी बीबी को बुला देंगे।"

दर्शन सिंह ने पूछा, "मुझे अपनी बीबी से वे लोग बात करने देंगे बाबा ?"

"हां-हां। और अगर बातचीत न करने दें तो पुलिस को घूस दे देना।"

"मैं पुलिस को घूस दूंगा ?"

बाबा बोले, "दुनिया में हर कोई घूस लेता है। तो फिर दिल्ली की पुलिस घूस क्यों नहीं लेगी ? तुम्हारे लिए डरने की बात नहीं। दिल्ली में आजकल सारा कुछ डावांडोल की स्थिति में है। जो आदमी टेंट से पैसा निकाल सकता है, अभी दिल्ली में उसी का जय-जयकार होता है।

जाओ। सिर्फ़ अपनी बीबी का नम्बर याद रखना—तीन सौ चालीस भूलना मत।"

दर्शन सिंह अब वहां रुका नहीं। वहां से उठकर सीधे अपने घर चला गया। उसके बाद सारा कुछ सहेजने-समेटने में थोड़ा वक़्त लगा। अपने साथ उसे ढेर सारा रुपया ले जाना है। बाबा ने कहा है : टेंट से पैसा निकालने पर आजकल जय-जयकार होता है। पैसा खर्च करने पर आकाश का चांद भी मिल सकता है। अगर

घूस लेकर पुलिस हसीना को छोड़ दे तो इसके वास्ते साथ में मोटी रकम रहना जरूरी है। सन्दूक खोल दर्शन सिंह ने नोटों को गड्डियां पगड़ी के अन्दर छिपाकर रख ली। आधी रकम कुरते के अन्दर की जेब मे रख ली।

रात-भर दर्शन सिंह की आंखों से नींद कतराती रही। तमाम रात यही सोचता रहा कि कैसे वह हसीना को लंगरखाने से छुड़ाकर लाएगा। वह कहां रहेगा, कब वह हसीना को देख पाएगा। हसीना से मुलाकात होने पर उससे क्या कहेगा। हसीना उससे क्या कहेगी।

दर्शन सिंह सवेरे ही जगकर तैयार हो गया है। उसके बाद उसने तनवीर को जगाया।

बोला, "उठ-उठ तनवीर, चल तेरी भाई जी के पास चलेंगे।"

भाई जी के पास जाने की बात सुनकर तनवीर बेहद खुश हुई। उसके भी उत्साह की कोई सीमा नहीं है। वह भी जल्द-से-जल्द तैयार हो गई। और-और दिन उसे जगाने में काफी देर लगती है।

तनवीर बोली, "भाई जी कहां है ?"

दर्शन सिंह बोला, "भाई जी दिल्ली में है जल्दी चलो।"

इसके बाद अन्दर के दरवाजे पर ताला लगाने के बाद बाहर के दरवाजे पर भी ताला लगा दिया और तनवीर को गोद में उठा दर्शन सिंह रास्ते पर निकल आया। आज का दिन उसके लिए खुशियों का दिन है। उसकी इतने दिनों की तकलीफें आज दूर हो जाएंगी, प्रतीक्षा की घड़ी समाप्त हो जाएगी। इतने दिनों के बाद दर्शन सिंह अपनी पत्नी से मिलेगा। अब उसकी तमाम आशा और आकांक्षा की पूर्ति होगी।

था। लेकिन अंग्रेजों के दफ्तरों के कर्मचारियों के लिए जितनी जमीन दरकार थी, उससे हजार गुना ज़मीन आसपास पड़ी हुई थी। काम चलाने के लिए शुरू में जब वहां नया शहर बनकर तैयार हो गया तो भी काफ़ी कुछ जगह खाली ही पड़ी रही। शहर चाहे जितना भी बढ़े, जगह की कभी कमी नहीं रहेगी। ठीक वही बात हुई। लाखों विस्थापित जब पश्चिम पंजाब से दिल्ली आ धमके उनके रहने और शिविर खड़े करने की जगह की कोई कमी नहीं हुई।

इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तान से विस्थापित होकर जो लोग पाकिस्तान चले गए उनकी जगह-ज़मीनों पर विस्थापितों को अधिकार मिल गया। एक तरह से विनियम-व्यवस्था की तरह। जिस तरह हिन्दुस्तान से जितने आदमी पाकिस्तान रवाना हुए उनमें से सभी जीवित अवस्था में पाकिस्तान नहीं पहुंच सके, उसी तरह जो लोग विस्थापित होकर पाकिस्तान से भारत की यात्रा पर निकले, उनमें से सभी जीवित अवस्था में नहीं पहुंच सके।

मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, "अबुल कलाम आजाद साहब ने 'इण्डिया विंस फ्रीडम' में लिखा है . realised that the country was moving towards a great danger. The Partition of india would be harmful not only to Muslims but to the whole country.

[यानी हिन्दुस्तान के बंटवारे से न केवल मुसलमानों की हानि होगी, बल्कि हिन्दुस्तान की भी हानि होगी। ऐसे हालात में हिन्दुस्तान एक बहुत बड़े खतरे के बीच घिर जाएगा।]

लेकिन तब कौन किसकी बात सुनता है ! विपत्ति जब तीव्र से तीव्रतर हो जाती है तो स्वार्थहीन सच्चाई से भरा उपदेश भी लोगों को तीखा और तुर्श लगता है। यही वजह है कि हिन्दुस्तान या पाकिस्तान दोनों में से कोई विस्थापितों के दबाव को बर्दाश्त नहीं कर सका। इस दबाव के फलस्वरूप देश के बंटवारे के पचीस साल के दरमियान ही दोनों देशों को दो-दो बड़ी लड़ाइयों में उलझना पड़ा। उन लड़ाइयों में जो लोग मारे गए वे एक तरह से परेशानियों से मुक्त हो गए, परन्तु जो लोग जिन्दा रह गए उन्हें उसका दंश आज भी महसूस करना पड़ रहा है। और कितने दिनों तक महसूस करना होगा, उसका ब्योरा कोई प्रस्तुत नहीं कर सकता। करना भी मुमकिन नहीं है।

एक दिन भारत छोड़ने के पहले, माउण्ट बेटन ने खुद ही कहा था : "खैर, मेरा मक़सद मुकम्मल हो गया। मुझे मालूम है, पाकिस्तान पचीस बरसों के दरमियान ही टूटकर दो टुकड़ों में बंट जाएगा। उस वक़्त वही होगा, जो हम चाहते थे।"

आज यही हो गया है।

बड़ी शक्तियां हिन्दुस्तान को 1947 ई० के पूर्व तीन प्रतिशत से भी कम के हथियार निर्यात करती थीं लेकिन 1950 ई० से निर्यात की मात्रा सोलह प्रतिशत

हो गई है। जितने दिन बीतते जाएंगे, मात्रा में भी उतनी ही बढ़ोतरी होती जाएगी। उस समय हम पराधीन हो जाएंगे।

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने कहा, "इससे साबित हो गया है कि अंग्रेज यहां रहते तो उन्हें जितना लाभ होता, अब इन दोनों देशों को आजादी देने के बाद वे उससे ज्यादा लाभान्वित हो रहे हैं।"

लेकिन सत्ता ?

देश की स्वतन्त्रता बड़ी है या सत्ता ?

जवाहरलाल नेहरू तब उम्रदार हो चुके थे और सरदार पटेल को भी दो बार दिल का दौरा पड़ चुका था।

और मुहम्मद अली जिन्ना ?

बम्बई के डॉक्टर जाल पटेल ने 1946 के जून महीने में जिन्ना साहब के दिल का जो एक्स-रे फोटो लिया था, 1947 के अक्तूबर में उसी दिल का एक नया फोटो लिया। उस एक्स-रे प्लेट पर देखने को मिला कि जितने भी गोल-गोल धब्बे थे, उनके आकार में बढ़ोत्तरी हो गई है। जिन्ना के अंग्रेज मिलिटरी सिक्रेटरी विलियम बर्नी का कहना है : मिस्टर जिन्ना जब 26 अक्तूबर, 1957 ई० में कराची से मात्र कई दिनों के लिए लाहौर गए तो उस समय उन्हें देखने से लगता था कि उनकी उम्र सम्भवतः साठ साल है। लेकिन जब लौटकर आए तो उन्हें देखकर लगा कि रातों-रात, इन कई दिनों के दरमियान ही उनकी उम्र बढ़कर अस्सी साल हो गई है।

एक ओर है माउण्टबेटन, राइट ऑनरेबल रैडक्लिफ, जवाहरलाल नेहरू, पटेल और मुहम्मद अली जिन्ना सभी सत्ता के भूखे। कौन कितनी सत्ता दे सकता है और कौन कितनी सत्ता हथिया सकता है, यही है उनका ध्येय।

और दूसरी ओर इन सबों के नीचे हैं करोड़ों दर्शन सिंह और हसीना बीबी जैसी औरतें। उन लोगों के बारे में कौन सोचेगा ? कौन दर्शन सिंह को उसकी पत्नी हसीना बीबी सौंपेगा ? किसके पास इतना वक़्त है ? हम अपने सुख-दुख की सोचें या दर्शन सिंह की ? किसकी जरूरत ज्यादा अहम है ?

दर्शन सिंह को अन्ततः दिल्ली के गुरुद्वारे में आश्रय मिल गया। परन्तु सिर्फ़ आश्रय से काम तो चलेगा नहीं। हसीना जहां है वह लंगरखाना कहां है ? इसका पता उसे कौन देगा ?

एक महीने तक दर्शन सिंह दिल्ली की धूल रौंदता रहा। जो भी मिल जाता उससे पूछता, "हुजूर, मुसलमान औरतों का लंगरखाना कहां है ?"

किसके पास इतना वक़्त है कि बूढ़े सरदार जी के सवाल का जवाब दे।

हम शहरी आदमी ठहरे। हम सिर्फ़ अपनी रोजी-रोटी के बारे में सोचते हैं। तुम लोगों की परेशानियों के बारे में सुनने का वक़्त हमारे पास

आखिरकार तांगावाला, रिक्शावाला जो भी सड़क पर मिल जाता, उससे पूछता।

"ऐ भाई साहब, इधर का लंगरखाना कहां है, बता सकते हो ?"

"उखड़े हुए लोगों का ?"

"हां, भाई साहब।"

दर्शन सिंह को नम्बर याद है। बाबा सुखजिन्दर सिंह ने दर्शन सिंह को नम्बर बता दिया है—तीन सौ चालीस।

लाखों विस्थापितों के बीच वह तीन सौ चालीस नम्बर कैसे खोज कर निकालेगा ?

एक तांगेवाले ने दर्शन सिंह की रक्षा की।

वह बोला, "कुछ रुपया खरचना होगा सरदार जी।"

"क्यों, रुपया क्यों खरचना होगा ?"

तांगावाला बोला, "आजकल हर सरकारी मामले में रुपया खरचना पड़ता है। बड़े-बड़े सरकारी अफसर रुपया लिए बग़ैर आजकल मुंह नहीं खोलते।"

दर्शन सिंह बोला, "लेकिन मैं कोई ग़ैरकानूनी दावा पेश नहीं कर रहा हूं। मैं अपनी घरवाली से मिलना चाहता हूं। अपनी घरवाली से मिलूंगा तो इसके लिए भी मुझे रुपया खर्च करना पड़ेगा ?"

तांगावाला बोला, "तो फिर रुपया मत दीजिएगा।"

यह कहकर वह जाने लगा। मगर दर्शन सिंह ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। बोला, "तुम गुस्से में क्यों आ गए भैया ? मैं क्या कह रहा हूं कि तुम्हें रुपया नहीं दूंगा ? कितना रुपया लगेगा, मुझे यही बताओ भाई।"

तांगावाला, ईमानदार आदमी है। बोला, "एक सौ रुपया।"

"एक सौ रुपया ? इतना रुपया लगेगा ?"

"एक सौ क्या ज्यादा रक़म है सरदार जी ? वादा करता हूं, अगर तुम्हें तुम्हारी पत्नी से मुलाक़ात नहीं करा सकूंगा तो तुम्हारी रक़म सूद के साथ तुम्हें वापस कर दूंगा।"

दर्शन सिंह इसके अलावा कर ही क्या सकता है ! हसीना से मुलाक़ात करने के एवज में तांगावाला अगर हजार रुपए की मांग करता तो दर्शन सिंह तैयार हो जाता। हसीना को खरीदने में भी तो उसे पन्द्रह सौ रुपया खरचना पड़ा है। वह सोचेगा कि उसने सोलह सौ रुपए में ही हसीना को खरीदा है। अपनी पत्नी से बढ़कर रुपया-पैसा ही उसके लिए बड़ी चीज है ?

तांगा वाला बोला, "सरदार जी, आप मुसलमान होते तो बात दीगर थी। आप सिख हैं और आपकी बीबी मुसलमान औरत।"

दर्शन सिंह बोला, "लेकिन मैंने उसे गुरुद्वारा ले जाकर और सिख बनाकर

उससे शादी की है। अब वह मुसलमान नहीं है।"

तांगेवाले ने कहा, "आपके यह कहने से सरकार तो मानेगी नहीं सरदार जी। यही वजह है कि सरकार ने उसे मुसलिम औरतों के लंगरखाने में रखा है। वहां मुसलमानों के अलावा और किसी को सरकार घुसने नहीं देती।"

दर्शन सिंह बोला, "ठीक है भाई, मेरे साथ तुम यहां के गुरुद्वारे तक अगर चलने को राजी हो तो तुम्हें अभी तुरन्त रुपया दे सकता हूं।"

आखिर में यही हुआ। उसी के तांगे पर चढ़कर दर्शन सिंह गुरुद्वारा पहुंचा। पहुंचने के बाद गुरुद्वारा के बाबा के पास जमा की हुई रकम में से एक सौ रुपया मांगकर तांगेवाले को दिया।

जाने के दौरान तांगेवाले ने कहा, "कल वह गेट पास निकालकर ला देगा और दर्शन सिंह को ले जाकर लंगरखाना पहुंचा देगा।

दर्शन सिंह बोला, "मेरी बीवी का नाम हसीना है और उसका नम्बर है तीन सौ चालीस। याद रखना भई, मेरा नाम दर्शन सिंह है और मेरी बीवी का हसीना। बीवी का नम्बर तीन सौ चालीस। हमारी लड़की का नाम तनवीर। यह सब याद रखना भैया। नम्बर बताने में गलती न होनी चाहिए।"

तांगावाला रुपया लेकर चला गया। दर्शन सिंह का मन उस समय खुशियों से भरपूर था।

तांगेवाले के जाते ही दर्शन सिंह अपनी तनवीर को गोद में उठाकर उसे प्यार करने लगा। तनवीर छोटी है तो क्या हुआ! एकाएक अपने पिता के चेहरे पर हंसी दमकती देखकर उसे आश्चर्य हुआ। इसके पहले जब भी उसने अपने पिता को देखा है, उसे रोते हुए ही पाया है। तनवीर बार-बार पूछती, "तुम क्यों रो रहे हो दारजी ?"

तनवीर की बात सुन दर्शन सिंह तत्क्षण अपनी आंखें पोंछ लेता। कहता, "कहां, मैं कहां रो रहा हूं ? किसने कहा कि मैं रो रहा हूं ? यह देखो, मैं कितना हंस रहा हूं···।"

लेकिन तनवीर गौर करती कि जब भी उसका पिता अकेला रहता, उस समय वह केवल रोता रहता। रोते रहने पर भी उसे कोई कूल-किनारा न मिल रहा हो जैसे।

आज बात कुछ और ही है। अपने पिता के चेहरे पर हंसी देखकर वह अवाक् हो गयी।

पूछा, "दारजी, आज तुम इतने खुश क्यों हो ? तुम आज हंस क्यों रहे हो ?"

"मैं क्यों कभी हंसता नहीं ?" दर्शन सिंह ने पूछा।

तनवीर बोली, "कहां हंसते हो ? मैं तो तुम्हें सिर्फ़ रोते हुए ही देखती हूं।"

"नहीं पगली ! मैं खुलकर हंसना जानता हूं। यह देखो।"

यह कहकर दर्शन सिंह ठठाकर हंसने लगा। उसकी आवाज़ सुन गुरुद्वारे के दो-चार आदमी उसके कमरे में घुस पड़े। पूछा, "यह क्या ! आज तुम इतने हंस क्यों रहे हो दर्शन सिंह ? आज तुम इतने खुशमिजाज़ क्यों हो ? बात क्या है ?"

इस बात का उत्तर देने के बजाय दर्शन सिंह तनवीर को अपनी छाती से लगाकर उसे चूमने लगा। अपने चुम्बन से तनवीर के गालों को भिगो दिया।

बाहर के आदमी से एक जने ने पूछा, "क्या हुआ भाई, आज यह बूढ़ा इतना हंस क्यों रहा है ? बूढ़े ने क्या बताया ?"

उस आदमी ने कहा, "अरे, दर्शन सिंह की बात को गोली मारो ! वह पागल है, घनघोर पागल !"

सच, उस दिन पागल ही हो गये थे हिन्दुस्तान के लोग। पागल ही नहीं, घोर पागल। सत्ता पर अपना कब्जा जमाने के लिए हर किसी पर जुनून सवार हो गया था, आदमी का खून करने को सभी उतावले हो गए थे। नए देश पाकिस्तान में जो कुछ हो रहा था, भारत में भी वही हो रहा था। एक ही स्थिति थी, एक ही हालात। इसके पहले इतिहास में न तो इतने सारे लोग विस्थापित हुए थे और न ही इतने सारे लोगों की हत्याएं की गयी थीं। इसके अतिरिक्त सत्ता के लिए इतने सारे लोगों के मन में लोभ भी नहीं जगा था। अब तो अंग्रेज़ चले जा रहे हैं, इसलिए उनकी खाली कुर्सियों पर कौन-कौन बैठ सकते हैं, इसी सम्बन्ध में हम लोगों के बीच होड़ लग गयी।

तय हुआ कि जिसे जिस देश में जाने की इच्छा हो, उन्हें जाने दिया जाए। अगर कोई मुसलमान भारत में रहना चाहे तो वह रह सकता है और अगर कोई हिन्दू या सिख पाकिस्तान जाना चाहे तो उसे कोई रोक नहीं सकता। यहां की जो सम्पत्ति है उस सम्पत्ति में से अस्सी प्रतिशत भारत को और बीस प्रतिशत पाकिस्तान को मिलेगा।

इसके अलावा हैं मेजें, कुर्सियां, छाते, टाइप राइटिंग मशीनें, दवातें, बाइसाइकिलें, सोफ़ा-कोच, लकड़ी की अलमारियां, आईने जड़ी लोहे की अलमारियां। सारा कुछ इसी अनुपात में बांटा जाए।

लेकिन यह क्या इतना आसान काम है ?

इन मामूली चीजों के लिए उस समय कितने झगड़े-टण्टे, झड़पें, मारपीट और वाद-विवाद चलने लगे ! किसी भी हालत में कोई खुश होने को तैयार नहीं था।

आदमी उन दिनों पाने के नशे में पागल हो गया था। उसे सारा कुछ पाना ही है। उसके लिए जो भी मूल्य आंका जाए, हम देने को तैयार हैं।

पाकिस्तान के लोग उस समय ताजमहल का बंटवारा करने को इच्छुक थे।

उन्होंने कहा, "उसे तो एक मुगल बादशाह ने बनवाया था। इसलिए इसे तोड़कर इसका आधा हिस्सा पाकिस्तान भेजना होगा।"

सिर्फ़ ताजमहल ही नहीं, नदियों का भी बंटवारा करना होगा। क्योंकि गंगा के किनारे ही वेद और उपनिषदों की रचना हुई थी। उसके साथ हिमालय को भी बांट दो।

बाहर जब इन सब बातों के लिए वाद-विवाद चल रहा था, उस समय लंगर-खाने में भी नियमानुसार रात-दिन काम चल रहा था।

सुबह ठीक सात बजे चाय पीने के लिए उखड़े हुए लोग कतारबद्ध खड़े हो जाते।

एक आदमी नम्बर पुकारता—एक।

एक नम्बरधारी व्यक्ति आगे बढ़ गिलास और कटोरा रख देता।

एक आदमी गिलास में चाय डाल देता और थाली में दो अदद रोटियां और सब्जी।

उसके बाद दो नम्बर की बारी आती। उसे भी चाय डालकर दी जाती और थाली में दो अदद रोटियां डाल दी जाती।

उसके बाद तीन नम्बर की बारी।

तीन नम्बर के भाग्य में भी एक गिलास चाय और रोटी-सब्जी जुटती।

थोड़ा बहुत गैर-कानूनी काम न होता हो, ऐसी बात नहीं। झगड़ा-टण्टा, असन्तोष, आगे-पीछे रहने की शिकायत, अधिक या कम मिलने का भी अभियोग किया जाता। कौन किसको लांघकर आगे चला गया, किसे हड़बड़ी के कारण पीछे खड़े होने को बाध्य होना पड़ा, किसे सोकर उठने में देर हो गयी और वह कतार में खड़ा नहीं हो सका, किसका पेट दो अदद रोटी और सब्जी से नहीं भरता है—ऐसी तरह-तरह की समस्याओं का हल करना पड़ता है अधिकारियों को।

फिर नम्बर पुकारा जाता—"चार!"

"पांच!"

औरतें झट-पट आगे बढ़ आतीं और भोजन की थाली ले वे बगल में खाने चली जातीं। खाने के बाद हाथ-मुंह धोने की बारी आती।

जिन लोगों की सेहत अच्छी है वे सब नियम-कानून मानकर चल सकते हैं। उनकी वजह से कहीं कोई समस्या खड़ी नहीं होती।

मगर जो औरतें बूढ़ी हैं, लंगड़ी, विकलांग हैं, लाठी के बग़ैर चल-फिर नहीं पातीं, जो अन्धी हैं और आंख से देख नहीं पातीं, उनके पास चाय और रोटी कौन पहुंचा देगा?

उन लोगों के लिए अलग से इन्तजाम किया गया है। चायवाला क्रमानुसार

खाना पहुंचा आता है।

"दस।"

दस नम्बर औरत आगे बढ़कर लाइन में खड़ी होती है।

"पन्द्रह।"

हरेक ने अपना-अपना नम्बर जबानी याद रखा है। उनके नाम के बजाय उनके नम्बर का महत्त्व अधिक है। यहां कोई आदमी नहीं, बल्कि नम्बर है।

सभी लोग यहां हमेशा के लिए रहने आए हों, ऐसी बात नहीं। कोई-कोई दो महीना रहकर ही चली जाती है। लाहौर या पाकिस्तान से हिन्दुस्तान के सरकारी दफ्तर में हुक्मनामा आता है। अमुक नम्बर की विस्थापित औरत के रिश्तेदार का पता चल गया है, उसे यहां भेज दिया जाए।

"एक सौ दो।"

जिसके-जिसके सगे-सम्बन्धी का पता चलता है, उन्हें मिलिटरी की पहरेदारी में पाकिस्तान भेज दिया जाता है।

सभी उत्कण्ठित हो प्रतीक्षा करती रहती हैं कि कब उनकी बुलाहट आएगी। कब उन्हें छुटकारा मिलेगा और अपने रिश्तेदारों से मिलने का मौका मिलेगा।

उनमें से कुछ ऐसी औरतें हैं जो धीरज नहीं रख पातीं और लंगरखाने के दफ्तर में जाकर पूछती हैं, "साहब, हमारा हुक्मनामा आया है?"

"आपका नम्बर क्या है?"

तीन सौ नम्बरधारी औरत कहती है, "तीन सौ।"

दफ्तर से जवाब आता है, "नहीं, अभी तक नहीं आया है।"

सिर्फ़ तीन सौ नम्बरधारी ही पूछताछ करती है? नहीं, हर कोई पूछती है। सभी औरतें व्यग्रता के साथ प्रतीक्षा करती रहती हैं कि उनका नम्बर कब आएगा। सभी हर रोज एक ही खबर जानना चाहतीं। "हुजूर, एक सौ दस नम्बर का हुक्मनामा आया?"

लंगरखाने की हर औरत बेचैनी के साथ हुक्मनामे का इन्तज़ार करती। जिसका हुक्मनामा आ जाता है उसे बाक़ी औरतें रश्क़-भरी निगाहों से देखती हैं।

कहती हैं, "उसकी तक़दीर अच्छी है कि लंगरखाने से उसे छुटकारा मिल गया।"

इनके बीच हसीना भी है जो सवेरे के घण्टे की आवाज़ सुनते ही और-और लोगों के साथ चाय और रोटी के लिए लाइन में जाकर खड़ी हो जाती है। उसके बाद दोपहर के वक़्त भोजन की लाइन में। फिर तीसरे पहर चाय की लाइन में। रात के आठ बजे फिर लाइन में। उस समय भी रोटी-सब्जी-दाल दी जाती है। बस, कुछ और नहीं।

उसके बाद सोने की बारी आती है।

लेकिन हसीना की आखों से नींद कतराती रहती है। उस समय वह अपने सम्पूर्ण जीवन की परिक्रमा करती रहती है। खुद से सवाल करती है—ऐसा क्यों हुआ ? किसके पाप के कारण उसकी यह हालत हुई ? वहां वह अपने गांव में थी, पर किसी ने उसके घर में आग लगा दी। उसके अब्बाजान और अम्मीजान जलकर राख में परिवर्तित हो गए। उसका भाई चूंकि लाहौर में था इसीलिए बच गया। मगर हसीना ? हसीना की यह कैसी तक़दीर है ? इसे न तो जिन्दा रहना और न मरना ही कहा जा सकता है—वह आधी जिन्दा और आधी मरी हुई हालत में थी। फिर भी उसी हालत में किसी ने उसे पन्द्रह सौ रुपये में खरीद लिया। और फिर एक साल के दरमियान ही उसके जीवन में अंधेरा उतर आया। उसे पति मिला, उसके बाद एक सन्तान भी। वह पत्नी बनी और फिर मां भी। लेकिन उसके बाद ?

उसके बाद किसकी किस साजिश के कारण उसे इस संगरखाने में आना पड़ा ?

और उसकी तनवीर ? तनवीर तो अपनी मां के अलावा किसी के पास नहीं सोती थी। वह अभी अपने गुरुदासपुर के घर में क्या कर रही है ? वह भी क्या अभी अपनी मां के बारे में सोच रही है ? कौन जाने !

रात में लेटे-लेटे उसका दिमाग़ गरम हो जाता है। ऐसे में वह अपने सिर पर पानी डाल लेती है। तभी उसका माथा ठण्डा होता है।

उस दिन एकाएक दफ़्तर से उसकी बुलाहट आयी।

"तीन सौ चालीस !"

अपना नम्बर सुन हसीना चिहुंक उठी।

फिर क्या उसके भाईजान असगर का पता मिल गया ? कौन जाने ! वह डरती हुई दफ़्तर में पहुंची।

दफ्तर के साहब ने बताया, तीन सौ चालीस से मिलने उसका एक रिश्तेदार आया है।

"कौन ? रिश्तेदार का नाम क्या है ?"

"दर्शन सिंह।"

नाम सुनते ही हसीना के कलेजे को हथौड़े की चोट जैसा कुछ महसूस हुआ। दर्शन सिंह अकेले ही आया है या फिर उसके साथ तनवीर भी आयी है ?

दफ्तर के अधिकारी ने कहा, "जाओ, उस छोर के बरामदे के मेहमान के कमरे में चली जाओ।"

हसीना जिस हालत में थी, उसी हालत में दौड़ती हुई बरामदे की तरफ़ चली गयी।

चारों तरफ़ मिलिटरी का कड़ा पहरा है ताकि कोई ग़ैरकानूनी आदमी या मच्छर तक न घुस सके। खूब होशियार रहना है। ये लोग अब पाकिस्तान की सम्पत्ति हैं। लिहाज़ा इनमें से किसी को कोई भी यहां से भगाकर या उठाकर न ले जा सके, इस पर निगरानी रखनी है।

दर्शन सिंह तनवीर को गोद में लिए खड़ा था।

दूर से आती हसीना पर जैसे ही नज़र पड़ी, तनवीर चिल्ला उठी, "झाई जी, झाई जी···।"

हसीना ने नजदीक जाकर शुरू में तनवीर को ज़ोर से छाती में चिपका लिया। तनवीर के गालों को चूमती हुई कहने लगी, "तनवीर, मेरी बिटिया !"

तनवीर भी अपनी मां को छोड़ना नहीं चाहती है। बोली, "तुम इतने दिनों से कहां थीं झाई जी ? कहां थीं तुम ?"

"मैं यहीं थी तनवीर। आज तक ये लोग मुझे पकड़कर यहां रखे हुए हैं।"

दर्शन सिंह ने पूछा, "तुम कैसी हो ? अच्छी हो न ?"

हसीना ने कहा, "तबीयत तो ठीक ही है। और तुम ? तुम्हारी तबीयत कैसी है ?"

दर्शन सिंह बोला, "ठीक कैसे रहेगी ? तुम नहीं हो तो फिर मेरी तबीयत कैसे ठीक रह सकती है ?"

हसीना बगल की बेंच पर बैठ गयी। दर्शन सिंह को भी बैठने को कहा।

हसीना बोली, "तुम अपनी सेहत का खयाल रखना।"

"सेहत का खयाल रखने से क्या होगा ?" दर्शन सिंह बोला।

हसीना ने पूछा, "यहां कहां ठहरे हुए हो ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "यहां के गुरुद्वारे में।"

हसीना ने पूछा, "इस लंगरखाने का तुम्हें पता कैसे चला ?"

"तुम्हारे नम्बर का पता गुरुदासपुर के बाबा से मिल गया था। मगर तुम्हारे कैम्प का पता लगाने के लिए मुझे एक तांगेवाले को सौ रुपया देना पड़ा। उसी ने यहां आने का मेरे लिए गेट पास बनवा दिया। वह न होता तो तुम्हारा पता ही नहीं चलता।"

हसीना कुछ नहीं बोली। वह सिर्फ़ दर्शन सिंह के हाथ की एक उंगली को सहलाती रही।

दर्शन सिंह बोला, "तुम क्यों नहीं कुछ बोल रही हो ? मैं इतने दिनों के बाद आया···।"

हसीना ने कहा, "क्या बोलूं ?"

दर्शन सिंह ने देखा, हसीना की आंखों से आंसू चू रहे हैं। दर्शन सिंह ने अपने हाथ से उसके आंसू पोंछ दिये। इसके बाद कहा, "इतने दिनों के बाद तुम्हें देख

सका और तुम बिलकुल खामोश हो ! ऐसे में किसी को क्या अच्छा लग सकता है ?"

हसीना बोली, "बात करने में खुद को असमर्थ पा रही हूं।"

दर्शन सिंह बोला, "मैं भी बातचीत करने की शक्ति कहां पा रहा हूं ! बातें करने के दौरान मेरी भी आंखों में आंसू छलक आते हैं ···।"

हसीना ने अपने कुरते से दर्शन सिंह की आंखें पोंछ दीं। बोली, "तुम मर्द हो। तुम क्यों रोने लगे ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "मर्दों का कलेजा क्या पत्थर का होता है ?"

हसीना बोली, "तुम्हारे पास खेत-खलिहान है, रुपये-पैसे हैं। बताओ तो, तुम्हारे पास क्या नहीं है ? फिर तुम रोते क्यों हो ?"

दर्शन सिंह, "मेरे खेत-खलिहान और रुपये-पैसे मेरा पेट भर सकते हैं पर मेरा मन ? मेरा···।"

हसीना बोली, "किसने कहा कि मैं नहीं हूं ? मैं तो हर क्षण तुम्हारे बारे में ही सोचती रहती हूं···। बस, यही सोचती हूं कि कब गुरदासपुर जाऊंगी, कब ये लोग मुझे यहां से रिहा करेंगे।"

"तुम इन लोगों से क्यों नहीं कहतीं कि तुम सिख हो, मुसलमान नहीं ?"

"कहा है, सब कुछ कहा है। मगर कोई मेरी बात मानने को तैयार नहीं। ये लोग सिर्फ यही कहते हैं कि पाकिस्तान में मेरे सगे-सम्बन्धी हैं। सिखों ने भुलावे देकर मुझे सिख बना लिया है। इसीलिए ये लोग मुझे पाकिस्तान भेजने पर उतारू हैं।"

दर्शन सिंह ने कहा, "फिर ? फिर क्या होगा ? फिर क्या ये लोग वाकई तुम्हें पाकिस्तान भेज देंगे ?"

हसीना ने कहा, "भेजने दो, मैं वहां रहने वाली नहीं हूं। पाकिस्तान जाने पर भी मैं भागकर तुम्हारे पास चली आऊंगी। तुम्हें छोड़कर पाकिस्तान जाऊंगी तो मैं जिन्दा नहीं रह सकूंगी। देखना, मैं तुम्हारे पास जरूर ही चली आऊंगी।"

"ठीक कह रही हो ? तुम मुझसे वादा कर रही हो ?"

हसीना बोली, "हां, वादा करती हूं, जरूर चली आऊंगी।"

अचानक घण्टा बज उठा—डिंग-डाग। हसीना बोली, "लो, घण्टा बज गया। अब तुम लोगों को चले जाना है। सवेरे यहां सिर्फ दो घण्टे के लिए मुलाकात करने देते हैं। आठ से दस बजे तक। उससे ज्यादा नहीं।"

"और तीसरे पहर ?"

"तीसरे पहर मुलाकात करने का नियम नहीं है। सुबह ही सिर्फ दो घण्टे तक मिलने-जुलने देता है। उसके बाद नहीं।"

दर्शन सिंह बोला, "दो घण्टा ? मैं तो अभी तुरन्त आया हूं। इसी बीच दो

घण्टे गुज़र गए ? मुझे तो पता ही नहीं चला।"

हसीना ने पूछा, "फिर कब आओगे ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "कब का मतलब ? मैं तो कल ही आऊंगा। ठीक आठ बजे पहुंच जाऊंगा। देर नहीं करूंगा।"

एकाएक तनवीर बोल पड़ी, "मैं तुम्हारे पास रहूंगी झाई जी। मैं यहीं रहूंगी।"

लेकिन इस बीच मिलिटरी के पहरेदार बाहर जाने के तकाज़े करने लगे। जितने भी लोग अपने स्वजनों से मिलने आए थे, सबको बाहर निकाल फाटक बन्द कर दिया।

तनवीर उस वक़्त भी रोती, मां की ओर ताकती हुई पुकारने लगी, "झाई जी, झाई जी···।"

दर्शन सिंह ने चिल्लाकर कहा, "मैं कल ठीक आठ बजे पहुंच जाऊंगा। तैयार रहना।"

अब मिस्टर ग्रिफ़िथ इतना कहने के बाद चुप हो गए। उसके बाद बोले, "दुनिया के इतिहास में इसके पहले कितनी ही बार लोग एक देश से दूसरे देश गए हैं। कभी प्राणों के भय से और कभी आहार के लोभ में। अकाल के समय यानी 1947 में कलकत्ता में क्या हुआ था, इससे सभी परिचित हैं। इस डर से कि कहीं जापानी आकर कलकत्ता पर अधिकार न जमा लें अंग्रेज़ सरकार ने समुद्र में तमाम चावल-दाल-गेहूं फेंककर जापानियों को भूखों मार डालने का उपाय सोचा था। अंग्रेज़ी भाषा में इसे ही स्काचर्ड् अर्थ पॉलिसी (घर-फूंक नीति) कहते हैं। अंग्रेज़ों के इस कलंक का धब्बा अंग्रेज़ों पर न लगे, इस ख़याल से अंग्रेज़ों ने अफवाह फैला दी कि यह कलकत्ता के व्यापारियों की करतूत है कि यह कालाबाजारियों की साजिश के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

इसे साबित करने के लिए, इतिहास के इस कलंक को धोने के लिए अंग्रेज़ों ने कितनी तरह के झूठ का सहारा लिया है, उसका कोई अन्त नहीं। भारत के सभी नामी फ़िल्म-निर्देशकों के द्वारा विख्यात लेखकों की कहानियों और उपन्यास-कथाओं को विकृत कराकर, इस तरह के फ़िल्मों का निर्माण कराया है जिनसे यह साबित हो जाए कि अंग्रेज़ों और अमीरिकियों से बढ़कर भारत का हितैषी दूसरा कोई नहीं है। उन फ़िल्म-निर्देशकों को उन्होंने छिपे तौर पर पैसा दिया है, उन्हें पुरस्कृत किया है। मक़सद बस एक ही है और वह यह कि वे इस सच्चाई का प्रचार करें कि 1947 में भारत के अकाल का माहौल भारतीयों ने ही तैयार किया

था। अंग्रेज भारत की गरदन पर इसलिए सवार थे ताकि अत्याचारी राजा-रजवाड़े और जमींदारों के जुल्म से भारतीयों को छुटकारा दिला सकें। इसके सिवा कोई दूसरा उद्देश्य नही था। यही वजह है कि उन फिल्मों मे अंग्रेजों को मुक्तिदाता के रूप में प्रदर्शित किया गया है। दिखाया गया है, अंग्रेज कितने महान, उदार और विश्व प्रेमी हैं।

और आज का यह दर्शन सिंह, हसीना और सुलताना ? ये लोग ?

ये लोग क्या केवल राजनीति के बलि के बकरे हैं ? इनकी बदकिस्मती के जिम्मेदार क्या सिर्फ मुहम्मद अली जिन्ना, जवाहर लाल नेहरू और पटेल ही हैं ? अंग्रेज नहीं ?

देखिए, भारत के संबंध में हजारों पुस्तकें लिखी गई हैं, परन्तु उन पुस्तकों के किसी पन्ने के किसी कोने में भी सुभाष बोस का नाम है ? कम-से-कम मुझे तो खोजबीन करने पर भी नही मिला।

सुभाष बोस का नाम क्यों नही है ?

लॉर्ड एटली आजादी के बहुत बाद सन् 1956 मे एक बार कलकत्ता आए थे। उन दिनो पश्चिम बंगाल के राज्यपाल थे मिस्टर फणिभूषण चक्रवर्ती। मिस्टर चक्रवर्ती के ही राजभवन मे लार्ड एटली अतिथि के रूप मे टिके थे। भोजन की मेज पर एक दिन मिस्टर चक्रवर्ती ने लार्ड एटली से पूछा था, "अच्छा, एक बात का उत्तर दीजिएगा लार्ड ?"

"कहिए, क्या बात है ?"

"आप लोग 1947 मे भारत छोड़कर चले गए थे। ऐसा कांग्रेस के भय से किया था या महात्मा गांधी के भय से ?"

उस दिन लार्ड एटली ने कहा था, "हम लोग न तो कांग्रेस के भय से और न ही महात्मा गांधी के भय से हिन्दुस्तान छोड़कर गए थे। गए थे तो सुभाष बोस के भय से। क्योंकि सुभाष बोस ने ही हमारी सेना को बिलकुल तोड़ दिया था। हिन्दुस्तान की नौसेना ने भी दो बार विद्रोह किए थे। थलसेना और नौसेना अगर विद्रोह कर बैठे तो फिर हम राज्य कैसे चलाएंगे ? इसी वजह से हमारे लिए चले जाने के सिवा दूसरा कोई चारा नही था।"

मैंने पूछा, "इसके बाद ?"

इसके बाद और क्या ! मैंने देखा है, काम ही आदमी के जीवन की सबसे बड़ी संपदा है। हिन्दुस्तान में सरदार पटेल, जवाहर लाल नेहरू, महात्मा गांधी वगैरह ढेर सारे काम कर गए हैं। उनके कामों की स्वीकृति के हस्ताक्षर प्रत्येक पुस्तक मे हैं। लेकिन सुभाष बोस ? उनके कार्यों की स्वीकृति कहीं नही है। बल्कि उन्हें बौना बनाने के खयाल से ही बराबर लोग कमर कसकर तैयार होते रहे हैं। यहां तक कि एक जर्मन लड़की से शादी करने की उनके नाम से बदनामी फैलायी है। मगर

इससे क्या उनकी कोई हानि हुई है ? बल्कि दिन-ब-दिन उनके कार्यों का पुनर्मूल्यांकन ही होता रहा है।

दर्शन सिंह की ही बात लीजिए। उसके बारे में ही एक बार सोचकर देखें। उसकी त्रासदी के लिए कौन जिम्मेदार है ? बताइए, कौन है ?

दर्शन सिंह दूसरे दिन भी लंगरखाना गया। ठीक आठ बजे सवेरे। साथ में तनवीर है। वह सवेरे से ही मां से मिलने के लिए छटपटा रही थी। रट लगा रही थी, "चलो दारजी, झाईजी के पास चलेंगे।"

हसीना सवेरे से ही तैयार थी। घड़ी की तरफ़ ताकती हुई प्रतीक्षारत थी कि कब आठ बजे। कब घण्टा बजेगा, कब दर्शन सिंह आएगा, कब तनवीर आएगी।

अन्ततः लंगरखाने का फाटक खुलता है और देखने को मिलता है कि हसीना उन लोगों के इन्तजार में खड़ी है।

"आ गए ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "मैं तो पंद्रह मिनट पहले से ही खड़ा हूं। तुम लोगों का घण्टा बहुत देर से बजता है।"

तनवीर इसके पहले ही बाप की गोद से उतरकर मां की गोद में चली गई है।

तनवीर बोली, "इतनी देर क्यों हुई झाईजी ? मैं तो यहां बहुत पहले ही आ गई थी। आज मैं तुम्हारे पास ही रहूंगी।"

उस दिन भी दर्शन सिंह और हसीना खाली बेंच पर बैठे गए। उस दिन भी दर्शन सिंह ने पूछा, "पाकिस्तान से तुम्हारी कोई खबर आई है ?"

हसीना बोली, "नहीं।"

दर्शन सिंह बोला, "जितने दिनों तक खबर न आये उतना ही अच्छा।"

हसीना का डर दूर नहीं होता है। वह क़हती है, "मेरे भाई जान लाहौर में हैं। पुलिस को किसी दिन उसका पता जरूर ही चल जाएगा। तब ? तब क्या होगा, यही सोचती हूं।"

दर्शन सिंह बोला, "मुझ भी बड़ा ही डर लगता है।"

हसीना बोली, "तुम फिक्र मत करो। अगर मुझे पाकिस्तान जाने को मजबूर किया जाता है तो मैं वहां ज्यादा दिनों तक नहीं रुकूंगी। जितनी जल्द हो सके तुम्हारे पास आने की कोशिश करूंगी।"

"ज़रूर आओगी हसीना ? वादा करती हो ?"

"ज़रूर आऊंगी। तुम कुछ और नहीं सोचना।"

दर्शन सिंह ने कहा, "तो फिर तुम तनवीर के सिर पर हाथ धरकर कसम खाओ कि फिर से मेरे पास चली आओगी।"

हसीना ने ऐसा ही किया। बोली, "लगता है, तुम्हें मेरी बात पर यक़ीन नहीं है।"

दर्शन सिंह ने कहा, "मेरे मन की अभी ऐसी हालत है कि अपने-आप पर से भी मेरा विश्वास उठ गया है ? ऐसा क्यों हुआ, बता सकती हो ?"

हसीना सांत्वना भरे स्वर में कहती है, "मैं कैसे बताऊं ! मुझे भी क्या अपने आप पर विश्वास है ? तुम मुझे भूल जाने की कोशिश करो।"

दर्शन सिंह ने कहा, "काश, मैं तुम्हें भूल पाता !"

जवाब में हसीना ने कहा, "तुम बहुत कमज़ोर हो गए हो, इन कई महीनों के दरमियान।"

दर्शन सिंह बोला, "तुम भी बहुत कमज़ोर हो गई हो।"

हसीना कहती है, "मैं तो एक तरह से जेल में ही हूं। लिहाजा मेरा कमज़ोर होना स्वाभाविक है।"

दर्शन सिंह कहता है, "खैर, तुम लौटकर आओगी तो फिर पहले की तरह ही दूध पीना। तब तुम्हारी सेहत बिलकुल ठीक हो जाएगी।"

"घर के आंगन में मैंने अमरूद का जो बिरवा रोपा था, वह कितना बड़ा हुआ ?" हसीना पूछती है।

दर्शन सिंह कहता है, "पता नहीं कितना बड़ा हुआ है ! मेरा ध्यान क्या उस तरफ़ था ? तुम्हारे चले जाने के बाद ही मैं तनवीर को साथ लिए दिल्ली चला आया। घर की खबरों का कोई खयाल ही न रहा। उस बिरवे को शायद बकरी खा गई होगी—देख-रेख करनेवाला आदमी न हो तो ऐसा ही होता है···।"

"और अभी खेत में किस चीज की फसल है।"

दर्शन सिंह कहता है, "अभी तो अरहर बोने का मौसम है। मैं नहीं हूं तो फिर यह सब कौन करेगा ? तुम नहीं हो—मैं किसके लिए यह सब करूं ? कौन खाएगा ?"

हसीना कहती है, "नहीं-नहीं, ऐसा मत कहो। मैं तो फिर लौटकर तुम्हारे पास चली आऊंगी।"

उसके बाद ज़रा रुककर कहती है, "जानते हो अबके अपने घर के सामने अनार का एक बिरवा रोपूंगी। उसमें लाल-लाल फूल खिलेंगे और मीठे-मीठे अनार फलेंगे।"

हाय रे, आदमी ! हाय री आदमी की इच्छा ! एक आदमी कितनी उम्मीद लिए कल्पना का ताजमहल बनाकर तैयार करता है परंतु मुहम्मद अली जिन्ना, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल और लार्ड माउण्ट बेटन ढहाकर मलबे में बदल देते हैं।

थोड़ी देर बाद घंटा बजते ही दोनों जने चिहुंक उठे। ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था।

इसके बाद बैठने का सिलसिला नहीं चल सकता। सरकारी परवाना बड़ा ही

निर्मम, निष्ठुर और कठोर होता है। वह दर्शन सिंह और हसीना के जीवन के सुख-दुख की परवाह नहीं करता। वह बहुत कुछ राइट ऑनरेबल सर सिरिल रेडक्लिफ़ की तरह हुआ करता है। हिन्दुस्तान के मानचित्र पर कैंची चलाने के दौरान किसका शयन-कक्ष, किसका रसोई घर और किसके आंगन का एक हिस्सा कट गया, यह सब देखने की ज़िम्मेदारी उसकी नहीं है। वह सरकारी पैसे के लोभ में विदेश से इस देश में इसलिए आया है कि उसे दो हज़ार पौंड पारिश्रमिक मिलेगा। वह वकील है। मोवक्किल चाहे मरे या ज़िन्दा रहे, इसके लिए वह माथापच्ची क्यों करे ? तुम दुर्गा का नाम लेकर फांसी के तख्ते पर चढ़ जाओ। मुझे मेरा मेहनताना दोगे तो मैं अपील कर तुम्हें रिहा करा दूंगा। दया-ममता करे तो वकील, डॉक्टर और सर रेडक्लिफ़ का काम चल सकता है ?

दूसरी ओर प्रेमजिन्दर सिंह और करतार सिंह भी हाथ-पर-हाथ धरे नहीं बैठे थे। वे लोग भी व्यस्तता में डूबे हुए थे। चाचा के पांच एकड़ खेत-खलिहान, रिहायशी मक़ान और हज़ारों रुपये के लोभ को क्या यूं ही छोड़ दिया जाए ? एक बार किसी तरह लाहौर के असगर अली का पता चल जाए तो काम निकल आए। वे लोग इसकी सूचना फ़ौरन संवद्ध कार्यालय को पहुंचा आएंगे। और एक बार वह पाकिस्तान पहुंच जाती है तो उसे छोड़ेगा ही कौन ! वे लोग उसके जाति-बिरादरी के आदमी हैं। वे लोग उसे वहीं रोककर रख लेंगे।

और दर्शन सिंह ?

वह बुड्ढ़ा अब जिएगा ही कितने दिन ? और अगर ज़िन्दा रह भी जाएं तो उसे और तनवीर को दुनिया से विदा करने में कितने दिन लगेंगे ? मुल्क के किसी भी नर्सिंग होम में भेज देने पर मोटी रक़म के बदले कार्य-सिद्धि का वहां से वचन मिल जाएगा। आजकल विज्ञान के करिश्मे के कारण दुनिया में उस तरह के दोष-हीन दवा और इंजेक्शन का कोई अभाव नहीं है।

उस दिन करतार सिंह और प्रेमजिन्दर सिंह वकील साहब के दफ्तर में पुनः आकर उपस्थित हुए।

वकील साहब बोले, "क्या खबर है ? तुम लोगों की चाची को तो रिफ़्यूजी कैम्प में भिजवाने की व्यवस्था कर दी है।"

प्रेमजिन्दर सिंह बोला, "आपकी मेहरबानी से यह सब हुआ है। मगर पाकिस्तान के चाची के भाई असगरअली का हमें कोई पता नहीं चल रहा है। आपको इसका भी इन्तज़ाम कर देना होगा।"

"मुझे इसका इन्तज़ाम करना है ? मगर इसमें तो बहुत खर्च होगा।"

"खर्च-वर्च जो लगेगा, हम देंगे।"

वकील साहब बोले, "यह कोई भारत की खबर नहीं है कि खत डालते ही जवाब मिल जाए या टेलीफ़ोन कर खबर का पता लगा लिया जाए वह तो एक बारगी फॉरेन कंट्री है। मिलिटरी की मदद बग़ैर खबर नहीं मंगाई जा सकती है।"

करतार सिंह बोला, "आप सब कुछ कर सकते हैं। सब कुछ किया है तो फिर यह काम भी आपको ही करना है। हम लोगों का यही अनुरोध है। फ़िलहाल कितना खर्च करना पड़ेगा ?"

वकील साहब बोले, "अभी तुरन्त कैसे बताया जा सकता है ? वे लोग बेहद शराब पीते हैं। पियक्कड़ों की बात पर मैं यक़ीन नहीं करता। तब हां, अभी एक हज़ार रुपया दे जाओ। देखा जाए, क्या कर सकता हूं।"

दर्शन सिंह के भतीजों ने एक हज़ार रुपया दे दिया। घर जाकर अपनी पत्नियों के गहने बेचकर एक हज़ार रुपया वकील साहब को दे आये। वकील साहब ने आश्वासन दिया, जल्द-से-जल्द वह इसका इन्तज़ाम कर देगा। दर्शन सिंह के भतीजे खुश होकर अपने-अपने घर चले गए।

पहले प्रेमजिन्दर सिंह और करतार सिंह के बीच कोई खास अच्छा संबंध नहीं था। कहा जा सकता है कि वे एक-दूसरे से अक्सर भेंट मुलाक़ात भी नहीं करते। लेकिन जिस दिन दर्शन सिंह ने शादी कर ली, उसी दिन से दोनों भाइयों में गहरा प्रेम हो गया। तब वे एक समान दुखी थे। चाचा की संपत्ति पाने के वास्ते दोनों एक जैसे उतावले हो गए। दोनों की जेबें खाली हैं। दोनों अभाव का जीवन जी रहे हैं। बाद में दोनों ने अपनी-अपनी पत्नी के गहने बेचकर वकील को रुपया दिया। फ़ायदा होगा तो दोनों को और अगर नुक़सान उठाना पड़ा तो दोनों का ही नुक़सान होगा।

लेकिन पाकिस्तान के असगरअली का पता चल जाता है सारा नुक़सान फ़ायदे में बदल जाएगा।

फिर भी सिर्फ़ वकील पर ही निर्भर करने से कहीं काम चल सकता है ? दूसरे-दूसरे दफ़्तरों में भी जाकर खोज-पड़ताल करनी होगी। दिल्ली शहर में अब नए-नए कितने ही दफ़्तर खुल गए हैं। कहां क्या हो रहा है, इसका अता-पता चलना आम लोगों के लिए मुश्किल है। दिल्ली की सड़कों पर अभी तमाम लोगों के सिर पर खादी की सफ़ेद टोपियां लहरा रही हैं। जिस आदमी ने ज़िन्दगी में कभी खादी का कुरता टोपी नहीं पहनी थी, वह भी अब खादी का कपड़ा, कुरता और सिर पर खादी की टोपी पहने है।

पंडित जवाहर ने किसी दिन कल्पना तक न की थी कि उनके जीवन-काल में भारत स्वतंत्र हो जाएगा।

15 अगस्त की रात में उन्होंने अपने एक नजदीकी दोस्त से कहा था, "जानते

हो, आज से दस साल पहले लंदन में लार्ड लिनिलिथगो से बहस छिड़ गई थी। मैंने कहा था : तुम देख लेना साहब, दस साल के दरमियान हिंदुस्तान अवश्य ही स्वाधीन हो जाएगा।

"मेरी बात सुनकर लिनलिथगो ने कहा था। बेकार की बात है मिस्टर नेहरू। मेरे जीवन-काल में हिन्दुस्तान स्वाधीन होनेवाला नहीं है—यहां तक कि तुम्हारे भी जीवन-काल में स्वाधीन नहीं होगा।

यही वजह है कि उस रात नेहरू ने अपने भाषण में कहा था—At the dawn of history India started on her unending quest and the trackless centuries are filled with her striving, and the grandeur of her Success and her failures. Though good and ill-fortunes alike, she has never lost of that quest or forgotten the idial which gave her strength. We end today a period of ill fortune and India discovers again.

इसका मतलब यह कि इतिहास के उषा-काल में ही भारत ने अपनी अंतहीन यात्रा की शुरुआत की थी और इस यात्रा का उद्देश्य था उसके अनंत प्रश्नों के समाधान की खोज। वह यात्रा कितनी ही सदियों की सरहदें लांघ चुकी है—उन सदियों की जिनका अंत कभी सफलता और कभी विफलता में हुआ है। चाहे सौभाग्य की घड़ी हो या दुर्भाग्य की, उसने अपनी खोज का सिलसिला जारी रखा है और अपने आदर्श को नहीं छोड़ा है—उस आदर्श को जो बराबर उसे शक्ति प्रदान करता रहा। आज उसके दुर्भाग्य की अवधि समाप्ति पर पहुंच गई है और भारत को पुनः स्वयं की खोज करने का मौक़ा मिला है।

इधर एक ओर जहां इस भाषण के स्वर ने पूरी दुनिया को नशे में सराबोर करके रखा है, वहीं दूसरी ओर करतार सिंह और प्रेमजिंदर सिंह तमाम दफ्तरों का चक्कर काटते हुए और अपने चाचा से बदला लेने का प्रयास करते हुए कह रहे हैं, "बताओ, तुम्हें कितना रुपया चाहिए ? मेरे चाचा को तबाह कर दो। उसकी पूरी जायदाद हमें दिला दो। हमारी चाची को पाकिस्तान भेजने का इन्तज़ाम कर हमारी क़िस्मत में तबदीली ला दो।"

बहुत कोशिश करने के बाद एक दलाल से उनकी एकाएक मुलाक़ात हो गई। उसने कहा, "वह सारा इन्तज़ाम कर देगा, मगर उसे कुछ रुपये देना होगा। कुछ खर्च-वर्च करना पड़ेगा।"

"कुछ रुपये का मतलब—कितने रुपये ?"

"शुरू में दो हज़ार रुपया। उसके बाद मांगने पर और रुपये देने का वादा करना होगा।"

इस तरह के लुभावने प्रस्ताव को ठुकराना उचित नहीं है। उस समय भारत

दलालों से भर गया था। मतलब निकालने के लिए उस समय दलाल ही फरिश्ते थे। जितने दिनों तक अंग्रेज थे उतने दिनो तक उन्होंने शोषण के लिए उसी अनुपात में दलाल भी रखे थे। लेकिन ज्यों ही भारत छोड़कर उनके जाने की तिथि निश्चित हुई, न जाने, कहा से लाखों दलाल निकलकर बाहर चले आए। तब, जाहिर है, हर मामले में दलालो का ही बोलबाला था। तुम्हे राशन कार्ड चाहिए तो दलाल को जाकर पकड़ो। तुम्हारा काम पूरा हो जाएगा तुम्हें परमिट या लाइसेंस चाहिए तो दलालो की शरण मे जाओ। तुम्हे सीमेंट, लोहा या मकान बनाने के सरो-सामान कंट्रोल में चाहिए तो दलाल का दरवाजा खटखटाओ। और तो और, तुम इलाज कराने के लिए अस्पताल मे बेड पाने को परेशान हो तो सीधे जाकर दलाल को पकड़ो। इससे भी मुश्किल काम है, लंदन, अमरीका या पाकिस्तान जाने का वीसा और पासपोर्ट प्राप्त करना। दलालों को पकड़ने से यह सब भी मिल जा सकता है। दलाल को पकड़ने से तुम आदमी का खून कर पाकिस्तान भागकर चले जा सकते हो।

इस हालात से लोग तग आ गए। कहने लगे, "इससे तो अंग्रजों का शासन ही अच्छा था साहब ! उस समय दलालो का इतना ज़ोर-जुल्म नही था। यह तो ऐसा लग रहा है जैसे अंग्रेजों की हुकूमत की जगह दलालों की हुकूमत कायम हो गई है !"

जाहिर है, पाकिस्तान जाने का चोर-रास्ता था और उस रास्ते से जाने में किसी को अड़चन का मुकाबला नहीं करना पड़ता था। चोर-रास्ते से जाने के लिए दलालो की सहायता आवश्यक थी। दलाल की माग पूरी कर दो और वह तुम्हें उस पार के दलाल के सुपुर्द कर पाकिस्तान अवश्य ही पहुचा देगा।

दो हजार रुपया देने के बजाय दलाल को पकड़ना ही सरल है। ये लोग ऐसा कौशल जानते हैं कि कही कोई तुम पर किसी तरह का सन्देह नहीं करेगा। बस इतना ही करना होगा कि अपने सिर के बाल और दाढ़ी-मूछ तुम्हें साफ करा लेनी है, जिससे कि कोई यह समझ न सके कि तुम सिख हो।

प्रेमजिंदर सिंह को इसमें कोई आपत्ति नही है।

उसने आगे बढ़कर इस जिम्मेदारी को अपने कंधे पर उठा लिया। बोला, "मैं अकेले ही किला फ़तह कर लूंगा। गुरुदासपुर के उस पार ही स्यालकोट है। एक बार स्यालकोट पहुंच जाऊं तो तो फिर लाहौर पहुंचने में किसी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। मैं असगर अली के मुकाम का पता अवश्य ही लगा लूगा।"

अंततः यही तय हुआ प्रेमजिंदर आगा-पीछा देखे बिना पाकिस्तान रवाना हो गया।

रुपये की महिमा का सचमुच कोई अंत नही। जो काम असाध्य है, आदमी

की सामर्थ्य के परे है, उसे भी रुपया आसान बना देता है और इसका ज्वलंत प्रमाण है प्रेमजिंदर सिंह। कुछ मिलाकर हज़ार-एक रुपया खर्च हुआ। इसीसे असगरअली का पता चल गया। अगसरअली उस समय लाहौर में नौकरी कर रहा था। प्रेमजिंदर सिंह सीधे उसके दफ्तर जाकर हाज़िर हो गया।

"यहां असगर अली साहब है ?"

एक आदमी ने कहा, "हां, हैं। आप कौन हैं ?"

प्रेमजिंदर सिंह बोला, "मैं उनका रिश्तेदार हूं। मुझे एक बार उनके पास ले चलिए।"

आखिर में असगर अली से मुलाक़ात हुई।

"आपको क्या चाहिए ?" असगर अली ने पूछा।

प्रेमजिंदर सिंह बोला, "आप मुझे नहीं पहचानते होंगे। मैं आपकी बहन की वजह से आपसे मिलने आया हूं।"

"मेरी बहन ?"

"हां आपकी बहन, जिसका नाम हसीना है।"

"हसीना ? वह जिंदा है ?"

प्रेमजिंदर सिंह ने कहा, "हां; सिखों ने आपका घर जला दिया था। उस आग की चपेट में आकर आपके अब्बा और अम्मी जलकर खाक हो गए। लेकिन हसीना जली नहीं, वह जिंदा है।"

असगर अली बोला, "मुझे पता चला था कि मेरे अब्बा, अम्मी और हसीना आग की लपट में फंसकर मर चुके हैं। यही वजह है कि मैंने खोज-बीन नहीं की। हसीना जिंदा है, यह बात पहले-पहल आपकी ही ज़ुबान से सुन रहा हूं। वह कहां है ?"

"दिल्ली के एक लंगरखाने में।"

"अच्छी तरह से है ?"

प्रेमजिंदर सिंह बोला, "हां, अच्छी है। मगर आपसे मिलने को हमेशा रोती-बिलखती रहती है।"

"ऐसी बात है ?"

प्रेमजिंदर सिंह बोला, "मैं भी मुसलमान हूं। मेरा जाना-पहचाना एक रिश्तेदार भी उस कैंप में है। मैं उससे मिलने गया था। तभी हसीना ने मुझे आपका पता दिया। बोली, कि आपसे मिलकर कहूं कि उसे पाकिस्तान भिजवाने का इंतज़ाम करा दे।"

असगर अली ने पूछा, "मैं उसे कैसे पाकिस्तान लाऊंगा ?"

प्रेमजिंदर सिंह ने कहा, "आप अपना पता एक क़ागज़ पर लिखकर मुझे दें। मैं ऐसा कोई इंतज़ाम कर दूंगा जिससे कि इंडिया गवर्नमेंट उसे पाकिस्तान

भेज दे। मैं अपने रिश्तेदार को भी यहां ला रहा हूं। साथ ही आपकी बहन को भी लाने का इंतज़ाम कर दूंगा।"

असगर अली यह सुनकर बहुत ही खुश हुआ। तत्क्षण एक काग़ज़ पर अपना नाम और पता लिख दिया।

बोला, "आपका लाख-लाख शुक्रिया। आपने मेरी जो भलाई की है उसे मैं ताउम्र नहीं भूलूंगा।"

प्रेमजिंदर सिंह ने उसे जो खुशखबरी दी है उससे असगर अली का मन आनंद-पुलक से भर गया।

बोला, "इसके पीछे मेरा कोई अपना स्वारथ नहीं है असगर अली साहब। अपनी बिरादरी के एक मुसलमान की जो मैं भलाई कर सका, इसके लिए मुझ पर अल्लाह रहम करेंगे। मैं चूंकि खुद मुसलमान हूं इसलिए किसी मुसलमान को तकलीफ़ में देखता हूं तो मुझसे बर्दाश्त नहीं होता अली साहब।"

उसके बाद प्रेमजिंदर सिंह उठकर खड़ा हो गया।

बोला, "फिर मैं चलता हूं असगर साहब। आदाब !"

असगर अली भी उसे विदा करने के लिए उठ खड़ा हुआ था। बोला, "एक प्याली चाय लीजिए न। इतनी तकलीफ़ उठाकर आप मेरे पास पहुंचे…।"

"नहीं असगर साहब ! यहां चाय पीने बैठ जाऊंगा तो इण्डिया वापस जाने में देर हो जाएगी। मुझे जितनी देर होगी, उन लोगों को कैंप से छुड़ाने में उतनी ही देर हो जाएगी।"

यह कहकर प्रेमजिंदर सिंह खुशियों से फूला न समाता हुआ बाहर निकल आया।

उसके बाद जिस चोर-रास्ते से प्रेमजिन्दर सिंह भारत से पाकिस्तान गया था, उसी से पाकिस्तान से स्यालकोट होता हुआ गुरुदासपुर पहुंच गया। प्रेमजिंदर सिंह के पाकिस्तान जाने और वहां से इतनी आसानी से लौट आने की बात का पता न तो लार्ड माउन्टबेटन को चला और न जवाहर लाल नेहरू या सरदार पटेल को। दर्शन सिंह और हसीना को भी नहीं। अगर किसी को पता चला तो वह है प्रेमजिंदर सिंह और उसका दलाल।

उस दिन भी सवेरे आठ बजने के बहुत पहले से ही दर्शन सिंह तनवीर को अपनी गोद में लिए लंगरखाने के इन्तज़ार खड़ा था। आहिस्ता-आहिस्ता और भी बहुत सारे लोग आकर वहां इकट्ठे होने लगे। सभी का उद्देश्य एक ही था। सभी अपने-अपने रिश्तेदारों से आखिरी बार मिल लेना चाहते हैं। पाकिस्तान चले जाएंगे तो फिर दुबारा मुलाक़ात नहीं होगी।

कोई अपनी बहन से मिलने आया है। मुसलमान होने के बावजूद वह भारत में रह गया है। क्योंकि उसकी बहुत सारी जगह-ज़मीन और जायदाद भारत में है।

वह सब छोड़कर चला जाएगा तो सारा कुछ हाथ से निकल जाएगा। मगर उसका बहनोई पाकिस्तान में रहता है। वहां वह नौकरी करता है। बहन को वहां भेजना है। इसीलिए बहन इस लंगरखाने में है। जो लोग लंगरखाने में हैं, सरकार उन्हें अपने खर्च पर पाकिस्तान भेज देगी। किसी को अपनी जेब से एक भी पैसा खर्च न करना होगा। सारा खर्च दोनों देशों की सरकारें वहन करेंगी। मसलन जिस प्रकार रुपया-पैसा, प्लेन, जहाज़, मेज, कुरसी, क़लम से लेकर एक पिन तक का बंटवारा किया गया है, उसी तरह आदमी के बंटवारे का हक भी दोनों सरकारों को ही है। जो जहां जिस देश में जाकर रहना चाहता है, सरकार उसी देश में जाने और रहने की उसकी ज़िम्मेदारी उठाएगी। कोई इसमें रुकावट डाल नहीं सकेगा। माउन्ट बेटन, जिन्ना, जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल ने मिलकर इसी तरह का एक सामूहिक समझौता किया है।

उस दिन भी फाटक खुलते ही दर्शन सिंह गेट पास दिखाकर अन्दर घुस पड़ा। साथ ही बहुत सारे लोग भी गेट पास दिखाकर अन्दर घुसे।

और-और दिनों की तरह ही दर्शन सिंह से मिलने को हसीना भी उसी स्थान पर खड़ी थी, जहां हर रोज़ रहती थी। तनवीर भी और-और दिनों की तरह मां की गोद पर चढ़कर बैठ गयी।

दर्शन सिंह ने खाली बेंच पर बैठकर पूछा, "आज तुम कैसी हो ?"

"पहले की तरह ही। और तुम ?"

दर्शन सिंह बोला, "मैं भी वैसा ही हूं। रात में किसी भी हालत में नींद नहीं आती। तुम्हें नींद आती है ?"

हसीना बोली, "नहीं, कैसे सोऊं ? यहां लोग कितना शोर-गुल करते हैं ! एक-एक कमरे में चालीस-पचास औरतें सोती हैं ? बहुतेरी औरतें रात-भर चिल्ला-चिल्लाकर रोती रहती हैं।"

"क्यों, रोती क्यों हैं ?"

हसीना कहती है, "रोएगी नहीं ? उस औरत के सामने उसके मां-बाप और बच्चों को कत्ल कर दिया है। एकमात्र वही औरत जीवित है। रुलाई क्या यों ही आती है ? वह औरत अब तक जिन्दा है, यही क्या काफ़ी है ? खाना-पीना छूती ही नहीं, सिर्फ़ रोती है, रोती रहती है। हिन्दुओं और सिखों को कितनी गालियां देती है ! हम उससे कुछ कह नहीं पाते।"

केवल हिन्दुओं और सिखों को गालियां देती हैं ? नहीं, नेहरू और गांधी जी को भी गालियां देती है।

उन्हें अगर सड़क पर छोड़ दिया जाए और कहीं से चाकू मिल जाए तो सबसे पहले वे गांधी जी की हत्या कर डालेंगी। उसके बाद नेहरू की। और वे लोग यदि नहीं मिलेंगे तो मुल्क के तमाम लोगों की हत्या कर डालेंगी। ऐसा करने पर भी

उनका हृत्या का नशा दूर नहीं होगा। ऐसे में यातना बर्दाश्त करने में स्वयं को असमर्थ पाकर ये खुदकुशी कर लेंगी।"

"पाकिस्तान से कोई खबर आयी है ?"

हसीना कहती है, "नहीं। अभी तक नहीं आयी है। मुझे लगता है, शायद कोई खबर नहीं आएगी।"

दर्शन सिंह कहता है, "खबर न आना ही अच्छा है। मगर किसी दिन अगर खबर आ जाए तो ?"

हसीना कहती है, "मेरे भाई जान बेशक लाहौर में हैं। लेकिन उन्हें मालूम है, हम सबों को जलाकर मार डाला गया है। मैं भी जलकर खाक हो गयी हूं।"

दर्शन सिंह को यह सुनकर थोड़ा-बहुत आश्वासन मिलता है। कहता है, "फिर ये लोग शायद तुम्हें पाकिस्तान नहीं भेजेंगे और तुम्हें रिहा कर दिया जाएगा।"

हसीना कहती है, "फिर तो जान में जान आ जाए ! यहां रहना कितना तकलीफ देह है कैसे बताऊं ! जब यहां सभी औरतें मातमी रुलाई रोने लगती हैं तो उस वक्त उनसे कुछ कह भी नहीं पाती। बर्दाश्त कर लेती हूं। सोचती हूं, उनसे तो ज्यादा मैं सुखी हूं। मेरे पास कम-से-कम सिर टिकाने की एक जगह है। लेकिन उनके पास तो वह भी नहीं है।"

दर्शन सिंह कहता है, "मैं भी तो यही सोचता हूं। मैंने कभी कोई पाप नहीं किया, किसी की हानि नहीं की, फिर मुझे इतना क्यों भोगना पड़ रहा है ?"

थोड़ी देर बाद दर्शन सिंह फिर कहता है, "मान लो, तुम चली जाती हो तो ऐसी हालत में फिर लौटकर आओगी न ?"

हसीना वादा करती है, "जरूर लौट आऊंगी। यह तुम क्या कह रहे हो ? मैं पाकिस्तान में कहां रहूंगी ? क्यों रहूंगी ? मैं तो अब सिख हूं। देख लेना, मैं जरूर वापस आ जाऊंगी। मुझे तुमसे कोई छीन नहीं सकता। तुमने ऐसी कल्पना क्यों कर ली ?"

हसीना की बात सुन दर्शन सिंह आश्वस्त हुआ। उसके मन में दुबारा आशा के अंकुर उग आते हैं। वह फिर से मन-ही-मन सपनों का स्वर्ग गढ़ लेता है। सोचता है, वह और जगह-जमीन खरीदेगा, भैंसें खरीदेगा, खेत-खलिहान खरीदेगा। और'''।

मिस्टर एडमंड ग्रिफिथ ने कहा, "आदमी कुछ सोचता है और होता कुछ और है। राजनीति ऐसी ही चीज है। राजनीति सगे-संबंधियों को दूर फेंक देती है। जरूरत पड़ने पर भाई, दोस्त, स्त्री, पुत्र और जमाता वगैरह को दुश्मन बना देती है। फिर कभी जरूरत पड़ती है तो पराए को भी अपना बना लेने का अभिनय करती है।"

दर्शन सिंह के साथ भी यही बात हुई।

एक दिन अचानक खबर आयी, इस लंगरखाने की तीन सौ चालीस नंबर विस्थापित को पाकिस्तान भेज देना है।

हुक्मनामा सुन हसीना अवाक् और जड़ हो गयी।

पूछा, "क्यों ? मैं पाकिस्तान क्यों जाऊंगी ?"

जवाब मिला, "आपके भाई असगर अली साहब ने पाकिस्तान सरकार से शिक़ायत की है कि उनकी बहन हसीना बेगम को दर्शन सिंह नामक एक सिख ने अपने गुरुदासपुर के मक़ान में रोक रखा है, इसलिए उसे असगर अली के पास भेज दिया जाए।"

इस खबर को सुन हसीना के सिर पर जैसे बिजली गिर पड़ी। फिर उसका क्या होगा ? वह दुबारा अपने घर लौटकर नहीं आ सकेगी ? दर्शन सिंह की क्या हालत होगी ? तनवीर का क्या होगा ?

उस दिन लंगरखाने के दफ्तर में जाकर हसीना रोने लगी।

बोली, "हुज़ूर, मुझे पाकिस्तान नहीं भेजिए। मैं भारत में ही रहूंगी। यहां मेरे पति और लड़की हैं। उन्हें छोड़कर मैं पाकिस्तान जाना नहीं चाहती हुज़ूर !"

दफ्तर के अधिकारी ने कहा, "यह कैसे हो सकता है ? मेरे पास जो आदेश आया है, उसका पालन करना मेरे लिए ज़रूरी है। मैं सरकारी मुलाजिम हूं।"

हसीना बोली, "अब मैं मुसलमान नहीं हूं हुज़ूर। मैं सिख बन गयी हूं। यक़ीन कीजिए, अब मैं मुसलमान नहीं हूं। आप लोग वहां जाकर पता लगा लें हुज़ूर।"

कहावत है, हाकिम-हुक्काम पसीज सकता है, लेकिन हुक्म नहीं टल सकता है। यहां भी यही बात हुई। फिर भी हसीना हार मानने को तैयार न हुई। उसने खाना-पीना बन्द कर दिया। सुबह चाय पीने के लिए जहां थाली-गिलास लिए लाइन लगाते हैं, वहां सभी लोग आए। लेकिन तीन सौ चालीस नंबर नहीं आयी। उसके बाद दोपहर में जब खाने के वक्त सभी आए, उस समय भी तीन सौ चालीस नंबर नहीं दिखी। उसने उस दिन खाना नहीं खाया, उस ओर किसी का ध्यान नहीं गया।

दर्शन सिंह उस दिन भी तनवीर को गोद में लिए आया। दूसरे-दूसरे दिन फाटक खुलते ही हसीना पर उसकी नजर पड़ती। हसीना भी दर्शन सिंह और तनवीर को देखने के लिए अपलक खड़ी रहती।

लेकिन उस दिन हसीना वहां नहीं दिख पड़ी।

ऐसा तो नहीं होता था। हसीना कहां गयी ? वह बीमार है क्या ? या उसे पाकिस्तान भेज दिया गया ?

दफ्तर जाकर दर्शन सिंह ने पूछा, "हुज़ूर, मेरी औरत कहां है ? वह दिख नहीं रही है।"

अधिकारी ने पूछा, "तुम्हारी औरत का नंबर कितना है ?"

"तीन सौ चालीस।" दर्शन सिंह ने कहा।

दफ्तर में क्या एक ही खाना है ! लंगरखाने में सैकड़ों औरतें हैं। उन खातों उन लोगों के खाने-पीने, रहने और इलाज आदि का हिसाब लिखा हुआ है। उ हिसाब को देखने के लिए काफ़ी समय की ज़रूरत पड़ती है। यह सब क्या ए मिनट में बताया जा सकता है ?

अधिकारी ने कहा, "बाद में आना सरदार जी, अभी फुर्सत नहीं है।"

उस दिन दर्शन सिंह हसीना से मिल नहीं सका। घण्टा भी बज गया। तमाम लोग अपने-अपने स्वजनों से विदा लेकर बाहर निकल आए।

दर्शन सिंह एक बार और कोशिश करने के खयाल से दफ्तर के अधिकारी के पास पहुंचा।

बोला, "एक बार देखिए न हुज़ूर, कि तीन सौ चालीस का क्या हुआ ? आज मुलाक़ात क्यों नहीं हुई ? तीन सौ चालीस को क्या पाकिस्तान भेज दिया गया ? या फिर वह बीमार है ?"

दफ्तर के बड़े अधिकारी को गुस्सा आ गया। बोला, "कल आना। आज घण्टा बज चुका है। अब दफ्तर बन्द हो गया। कल आना।"

दर्शन सिंह तनवीर के साथ फिर आया। आठ बजने के बहुत पहले से ही लाइन में आकर खाकर खड़ा हो गया। उस दिन भी भरपूर ख़ुशामद और मिन्नतें कीं।

बोला, "एक बार तीन सौ चालीस के पास खबर भेज दें हुज़ूर ! वह मेरी औरत है हुज़ूर ! मेरी गोद में उसकी लड़की है हुज़ूर ! एक बार मुलाक़ात करा दें हुज़ूर…!"

बहुत देर तक खुशामदें करने के बावजूद किसी के दिल में दया-ममता नहीं जगी। सभी व्यस्तता की साकार मूर्ति हैं।

आखिर में एक सरदार जी पर नज़र पड़ते ही दर्शन सिंह ने उसके पैर पकड़ लिये। उसके बाद उसने जब अपने सारे दुखों का ब्योरा विस्तार के साथ प्रस्तुत किया तो उस अधिकारी ने कहा, "अच्छा, तुम ज़रा रुको। मैं अन्दर जाकर देख ता हूं कि तीन सौ चालीस नंबर कहां है और कैसी है।"

यह कहकर वह अन्दर चला गया।

बाहर दर्शन सिंह पहले ही की तरह तनवीर को गोद में थामे, धड़कते कलेजे से ज़ार करने लगा। खबर आने में बहुत देर लग गयी।

आखिर में जब हसीना आयी तो उसे देखकर दर्शन सिंह हैरत में आ गया। हसीना का चेहरा कैसा हो गया है ! उसे नर्स जैसी एक औरत बांह थामे ले आयी। उसमें चलने-फिरने की ताक़त नहीं रह गयी है, और-और दिनों उसके चेहरे पर हंसी भी नहीं है। रुलाई से उसकी आंखें छलछला रही

हैं। वह लड़खड़ा रही है। वह अच्छी तरह खड़ा भी नहीं हो पा रही है।

दर्शन सिंह ने पूछा, "तुम्हें यह क्या हो गया हसीना ? दो दिन आने पर जब तुमसे मुलाक़ात न हुई तो मैं वापस चला गया। तुम्हारा चेहरा ऐसा क्यों हो गया है हसीना ? यह देखो, यह तुम्हारी तनवीर है। अपनी तनवीर की ओर एक बार निहारो, अपनी तनवीर को एक बार गोद में ले लो।"

नर्स बोली, "बीवी जी कई दिनों से कुछ खा-पी नहीं रही है। रात-दिन सिर्फ़ रोती रहती है, रोती रहती है। किसी की बात नहीं सुनती।"

दर्शन सिंह ने पूछा, "क्यों हसीना, तुम खाना क्यों नहीं खाती हो ? इतना क्यों रोती हो ? तुम्हें क्या हुआ है ? पहले तो तुम ऐसी नहीं थी। पहले तुम मुझसे कितना गपशप करती थीं ! तनवीर को गोद में ले कितना प्यार करती थी ! आज तुम्हें यह क्या हो गया ?"

हसीना रोते-रोते बोली, "मेरा क्या होगा ?"

दर्शन सिंह हसीना की बात समझ नहीं सका। बोला, "तुम्हारा क्या होगा—कहने का मतलब ? तुम क्या-क्या कहना चाहती हो, मैं समझा नहीं।"

हसीना ने कुछ कहना चाहा, परन्तु उसके मुंह से बोल नहीं फूटे। दर्शन सिंह बार-बार आग्रह करने लगा, "बताओ, बताओ न, तुम क्या कहना चाहती हो ?"

हसीना के मुंह से जब बहुत कष्ट के साथ शब्द बाहर आए, "दफ्तर से मुझे पाकिस्तान भेजने का हुक्म जारी हो गया है।"

यह सुनकर दर्शन सिंह अचंभे में आ गया। बोला, "सचमुच ?"

इतनी देर बाद नर्स बोली, "यह सुनने के बाद से ही बीवी जी ने खाना-पीना और बोलना-चालना बन्द कर दिया है। सोती भी नहीं है। बस, सिर्फ रोती है और रोती है।"

दर्शन सिंह बोला, "ऐसा करने से किसी दूसरे की कोई हानि नहीं होगी, सिर्फ़ तुम्हारी ही सेहत बिगड़ती जाएगी। तुम उदास मत होओ। और, अगर पाकिस्तान जाना ही पड़ रहा है तो इसमें हानि ही क्या है ? जो कानून है उसे तो मानना ही होगा। सरकार ने जो कानून बनाया है, लोगों को वह कानून मानना ही होगा। ये लोग कानून तोड़ नहीं सकते।"

हसीना दर्शन सिंह की बातें बहुत देर तक ध्यान से सुनती रही। उसके बाद बोली, "मैं तनवीर और तुम्हें छोड़कर वहां कैसे रहूंगी ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "वहां तुम्हें कौन रहने को कहता है ? तुम वहां ज्यादा दिन नहीं रहोगी। दो दिन वहां रहने के बाद बता देना कि अब तुम मुसलमान नहीं बल्कि सिख बन गई हो। तुम्हारे पति और लड़की सिख हैं। तब तुम मेरे पास चली आओगी। हम जैसे थे फिर वैसे ही एक साथ रहने लगेंगे।"

यह सुनकर हसीना के चेहरे पर तबदीली आ गई। लगा, उसे जैसे उम्मीद की

हल्की-सी किरण दिखाई पड़ रही है।

बोली, "मुझे वे लोग पकड़कर तो नहीं रखेंगे ?"

दर्शन सिंह ने उसे ढाढस बंधाया, "नहीं-नहीं, वे लोग तुम्हें व्यर्थ ही पकड़कर क्यों रखेंगे ? देखना, वे लोग तुम्हें जरूर ही छोड़ देंगे।"

इसके बाद जरा रुककर बोला, "वहां जाते ही मुझे खत डाल देना, समझी ? तुम्हारा पता-ठिकाना मुझे मालूम हो जाएगा तो फिर मैं भी खत लिखूंगा। अब तुम्हारा डर खत्म हुआ न ? अब तुम खाना खाने से इनकार मत करना। लो, जरा अपनी तनवीर को गोद में ले लो।"

हसीना की आंखों के आंसू धीरे-धीरे सूखते जा रहे हैं। उसने तनवीर को गोद में उठा लिया और चूमते-चूमते उसके मुंह और कपाल भिगो दिया। अब वह गोद से उतरना ही नहीं चाहती।

ठीक उसी समय एकाएक विदा का घंटा बज उठा। दर्शन सिंह ने तनवीर को हसीना की गोद से अपनी गोद में उठा लिया। उसी क्षण लंगरखाने का फाटक बन्द हो गया और हसीना आंखों से ओझल हो गई।

कलकत्ता से स्वामी मदनानन्द ने लार्ड लुई माउन्ट बेटन को जो जरूरी तार भेजा था, दिल्ली में सचमुच वही घटित हुआ है। और सिर्फ दिल्ली ही नहीं, संपूर्ण भारत में यही घटित हुआ है। मुसलमान पर नजर पड़ते ही हिन्दू उसकी हत्या कर देते और मुसलमानों की नजर हिन्दुओं पर पड़ती है तो वे हिन्दुओं की हत्या करने में झिझक का अनुभव नहीं करते। भारत के राशिफल में जो-जो भविष्यवाणी की गई थी, वह सब सही साबित हो रही थी।

दिल्ली ही नहीं, पंजाब में भी वह सब सही साबित हो रहा था। खासतौर से पंजाब में। लाहौर से जो सब स्पेशल ट्रेनें दिल्ली पहुंच रही थीं, उनमें एक भी आदमी जिन्दा नहीं मिल रहा था। कौन उन अभागों की हत्या कर उन्हें डिब्बों में ही रखकर चले गए हैं, उनका पता नहीं चल रहा था। आदमी के बदले केवल मुर्दे पहुंचते। इधर भारत से भी जो ट्रेनें उखड़े हुए लोगों को लेकर लाहौर पहुंचतीं, उन ट्रेनों के डिब्बों में सिर्फ मुसलमानों की लाशें ही मिलतीं। उन लाशों के इर्द-गिर्द मक्खियां भनभनाती रहतीं—एक भी जिन्दा आदमी की कहीं कोई निशानी नहीं मिलती।

इतिहास के इसी विकृत परिवेश में औरतों के एक दल को लेकर एक स्पेशल रेलगाड़ी दिल्ली से खुलेगी। लार्ड माउण्ट बेटन ने रेलवे के अधिकारियों को विशेष

सतर्कता बरतने का आदेश दिया है ताकि पहले जैसी वारदातों की पुनरावृत्ति न हो सके।

ट्रेन मिलिटरी का आदमी चलाएगा। चारों तरफ़ बन्दूकधारी मिलिटरी रहेगी। स्टेशन के इर्द-गिर्द किसी भी बाहरी आदमी को फटकने नहीं दिया जाएगा।

एक-एक का नम्बर पुकार कर उन्हें लंगरखाने से ट्रक पर चढ़ाया गया। सबों को बुर्के पहना दिए गए हैं। एक-एक का नम्बर पुकारा जा रहा है और बुर्का पहने एक-एक औरत ट्रक पर सवार हो रही है। इस तरह उन्हें चढ़ाओ कि सूर्य भी देख न सके।

आखिर में पुकारा गया—तीन सौ चालीस।

बुर्का पहने तीन सौ चालीस नम्बर की औरत आगे बढ़कर ट्रक पर सवार हुई।

दूर—काफ़ी दूर खड़े बहुत सारे लोगों की भीड़ इस दृश्य का जायजा ले रही थी। भीड़ में से एक सिख ज़रा आगे बढ़कर खड़ा था। उसकी गोद में एक बच्ची थी।

उस आदमी ने बग़ल के आदमी से पूछा, "कितने नंबर की पुकार हुई भाई साहब ?"

बग़ल के आदमी ने कहा, "तीन सौ चालीस···।"

अब वह आदमी खुद को काबू में न रख सका। बच्ची को गोद में थामे ज्यों ही उसने थोड़ा और आगे बढ़ने की कोशिश की, मिलिटरी के पहरेदार ने उसे बंदूक से एक टहोका लगाया। वह सिख तत्क्षण जमीन पर गिर पड़ा। उसकी गोद की लड़की छिटककर उसकी बग़ल में गिर पड़ी। थोड़ी-सी देर और हो जाती तो दोनों जने भीड़ में कुचलकर मर जाते। मिलिटरी का पहरेदार बन्दूक़ तानकर चिल्ला उठा, "होशियार, होशियार !"

उसके बाद जब अंधेरा कट गया और पूरब के आसमान में उजास फैलने लगा तो धीरे-धीरे आदमी की भीड़ छंटने लगी। लोग-बाग अपने-अपने मुकाम की ओर चल दिए।

लेकिन वहां एक ऐसा आदमी था जो वहां से हिला-डुला नहीं।

गोद की लड़की के साथ वह बहुत देर तक गर्द-गुबार पर बैठा रहा। मानो उसके अन्दर जैसे उठकर खड़े होने की उस समय ताक़त न हो।

लड़की ने एक-दो बार पुकारा, "दारजी।"

"अयं।"

दर्शन सिंह को मानो इतनी देर बाद होश आया। कई दिनों से रात में उसे नींद नहीं आ रही थी। तनवीर को कहीं पता न चल जाए, इस भय से अपनी मुख-

मुंह को स्वाभाविक रखने की कोशिश की। [illegible] [illegible] और [illegible] की तस्वीर झुलसे, "तुम्हें क्या हुआ बाबाजी ?"

दर्शन सिंह एक सवाल कर बस बकार देखा ! [illegible] तरह कहेगा [illegible] [illegible] दुश्मन पर भी न आए।

इस बीच दर्शन सिंह ने स्वयं को संभाल लिया है। [illegible] की ओर देखकर एक बार हंसने की कोशिश की। धूप की तपिश बढ़ती जा रही है। सड़क पर लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही है और उसके साथ ही आतंक भी बढ़ता जा रहा है जीवन जाने का आतंक, दंगा का आतंक और जीवन संघर्ष का आतंक। [illegible] के बाद दिल्ली के लोगों के मन में इस तरह का संत्रास कभी पैदा नहीं हुआ था। जो रात किसी तरह गुजर जाती है मगर दिल्ली के लोगों का दिल [illegible] [illegible] नहीं चाहता। उस वक्त शोर-गुल तेज हो जाता है—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मुसलमान हैं, कहां सिख और हिन्दू हैं। कोई मुसलमान रह जाएगा तो दिल्ली अपवित्र हो जाएगी। दूसरी ओर शोर-शराबा मच जाता है कोई हिन्दू या सिख रह जाएगा तो पाकिस्तान नापाक हो जाएगा।

अचानक किसी ने पीछे से उसका नाम लेकर पुकारा।

"बाबा, बाबाजी !"

दर्शन सिंह ने पीछे की तरफ मुड़कर देखा परंतु जाना पहचाना कोई व्यक्ति नजर नहीं आया।

"कौन ? किसने मुझे पुकारा ?"

"मैंने बाबाजी। मैं [illegible] हूं बाबाजी।"

एक आदमी ने सामने आकर कहा।

दर्शन सिंह आनंद से आत्म-विभोर हो गया।

बोला, "[illegible], तू है !"

"आप कैसे हैं बाबाजी ? मुझे बहुत दिनों से कोई खबर नहीं मिली थी।"

यह कहकर दर्शन सिंह के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रणाम करने का अभिनय किया।

[illegible]

[illegible]

शुरू में प्रेमजिन्दर सिंह ने सोचा था, वह अपने चाचा से मुलाक़ात नहीं करेगा।

लेकिन बाद में सोचा, मुलाक़ात करना ही अच्छा रहेगा। बहुत देर बाद जब उसका चाचा अपनी लड़की को लेकर सड़क पर जाने लगा तो उसने पीछे से पुकारा, "चाचा !"

दर्शन सिंह शुरू में उसे पहचान ही न सका। जिससे बहुत दिनों से भेंट-मुलाक़ात न हुई तो उसे कोई कैसे पहचानेगा ! लिहाज़ा जब पैरों की ओर झुककर उसने अपना नाम बताया तो दर्शन सिंह ने उसे गले से लगा लिया।

प्रेमजिन्दर बोला, "आप कैसे इतना दुबला गए हो चाचाजी ?" दर्शन सिंह उसकी बात सुनकर रो दिया और बोला, "दुबला न होऊंगा तो क्या होऊं ? मुझे कौन-सी तकलीफ़ है इससे तुम लोग वाकिफ नहीं हो ?"

"कौन-सी तकलीफ़ है ?"

दर्शन सिंह अपनी दुख-भरी कहानी शुरू से अन्त तक कह गया। उसके बाद बोला, "यह देखो, यह रही तनवीर। यह उसी हसीना की लड़की है। आज हम लोगों को छोड़ पाकिस्तान चली गई। यह देखने के वास्ते ही मुंह-अंधेरे तनवीर के साथ उससे मिलने आया था, मगर तुम्हारी चाची से मुलाक़ात नहीं हुई।

प्रेमजिन्दर ने पूछा, "चाची को पाकिस्तान क्यों ले गए ? शादी करने के पहले तो चाचीजी गुरुद्वारा जाकर सिख बन गई थीं।"

दर्शन सिंह ने कहा, "यह बात मैं किससे कहने जाऊं ! और सुनेगा ही कौन। तेरी चाची से मामूली मुलाक़ात करने के वास्ते गेटपास के मद में मुझे दो सौ रुपया घूस देना पड़ा है।"

प्रेमजिन्दर ने पूछा, "किसे घूस देना पड़ा ?"

"और किसको— कुत्ते की औलाद दलाल को। वह न होता तो तेरी चाची से मुलाक़ात ही न हो पाती।"

प्रेमजिन्दर अपने चाचा के दुख पर क्या कहे, समझ में नहीं आया। उसके बाद बोला, "आपने दलाल को दो सौ रुपए दिए फिर भी चाची जी को पाकिस्तान जाने पर मजबूर किया ? फिर इतना रुपया घूस देने पर आपको कौन-सा फ़ायदा हुआ ?"

दर्शन सिंह बोला, "मैं बूढ़ा आदमी हूं। मेरी देख-रेख करने वाला कोई नहीं है। मैं अकेला आदमी हूं। क्या करूं, बताओ तो ? किसी से सलाह-मशविरा करूं, वैसा कोई भी आदमी मेरे पास नहीं है।"

प्रेमजिन्दर सिंह बोला, "आपने मेरे पास कोई ख़बर तक न भेजी ? मैं अभी ज़िन्दा हूं, मेरा भाई ज़िन्दा है। हम लोगों का पता तो आपको मालूम ही था।"

दर्शन सिंह ने कहा, "उस वक्त मेरा दिमाग़ ख़राब हो गया था। क्या करूं,

कुछ समझ में नहीं आ रहा था, खैर अब तुमसे मुलाक़ात हो गई। अच्छा, यह तो बताओ, मैं क्या करूं? पाकिस्तान जाऊं?"

प्रेमजिन्दर बोला, "आप व्यर्थ ही तकलीफ क्यों उठाइएगा? पासपोर्ट लेना होगा, वीसा लेना होगा। तरह-तरह के झमेले हैं। वह सब क्या आप संभाल लीजिएगा?"

"मैं नहीं करूंगा तो कौन करेगा? मेरा है ही कौन?"

प्रेमजिन्दर बोला, "क्यों, मैं जो हूं।"

"तू करेगा?"

प्रेमजिन्दर बोला, "जरूर करूंगा। तब हां, आप तो जानते ही हैं चाचाजी, कि आज पूरा मुल्क दलालों से भर गया है। हर काम के लिए घूस देना पड़ता है। बिना रुपया निकाले कोई किसी तरह का काम करना नहीं चाहता।"

दर्शन सिंह बोला, "जितना लगेगा, देना ही पड़ेगा। मुझे रुपया देने में एतराज नहीं है। बताओ, कितना रुपया लगेगा?"

प्रेमजिन्दर ने पूछा, "आप अभी कहां ठहरे हुए हैं?"

दर्शन सिंह ने कहा, "बड़े गुरद्वारे में। वहां मेरा नाम बताते ही लोग मुझे बुला देंगे।"

प्रेमजिन्दर बोला, "ठीक है। मैं दलाल से बातचीत कर आपसे रुपया ले जाऊंगा।"

दर्शन सिंह ने कहा, "आना लेकिन जरूर। मैं उम्मीद लेकर तेरी खातिर बैठा रहूंगा।"

प्रेमजिन्दर सिंह चला गया। दर्शन सिंह भी रफ्ता-रफ्ता गुरुद्वारे की ओर क़दम बढ़ाने लगा। चलने में उसे जैसे बहुत तकलीफ़ हो रही हो। लग रहा था, जैसे कोई उसके जिस्म से कलेजे को उखाड़ कर चला गया हो। साथ ही उसका हृदय भी वीरान जैसा लग रहा है।

लेकिन कुछ दूर जाने के बाद उसे खयाल आया कि उसने प्रेमजिन्दर का पता पूछा ही नहीं। वह यदि फिर न आए तो? वह यदि पासपोर्ट और वीसा का जुगाड़ न कर सके तो? हो सकता है अपने काम के झमेले में फंसकर चाचा की बात भूल जाए। उससे बहुत बड़ी ग़लती हो गई। हसीना के बारे में सोचते रहने के कारण असली बात उसके ध्यान से उतर गई।

तनवीर ने एकाएक पुकारा, "दारजी!"

इतनी देर के बाद दर्शन सिंह यथार्थ की दुनिया में लौटकर आया।

बोला, "क्या है बिटिया, तू क्या कहना चाहती है?"

तनवीर ने पूछा, "मेरी झाईजी कहां हैं दार जी? आज मुझे तुम झाई जी के पास क्यों नहीं ले गए?"

दर्शन सिंह बोला, "ले जाऊंगा बिटिया। तू और मैं दोनों ही झाईजी के पास चलेंगे।"

"झाई जी कहां हैं ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "झाई जी दो दिन के लिए बाहर गई हैं।"

"बाहर कहां ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "पाकिस्तान।"

"मैं पाकिस्तान जाऊंगी झाई जी के पास।"

दर्शन सिंह ने कहा, "छिः-छिः, रो मत। रोने से लोग निंदा करेंगे। हम दोनों पाकिस्तान चलेंगे। पाकिस्तान से हम तेरी झाई जी को गुरुदासपुर ले आएंगे।"

"चलो न, दारजी पाकिस्तान।"

"चलेंगे, जरूर चलेंगे, ज़रा धीरज रखो। इतनी जल्दी क्या पाकिस्तान जाया जा सकता है ? वह बहुत दूर है।"

तनवीर ने कहा, "चाहे दूर ही क्यों न हो, चलो।"

दर्शन सिंह ने कहा, "ज़रा धीरज रखो। पहले नहा-धोकर खाना खा लें, तब चलेंगे।"

"नहीं दार जी, अभी चलो।"

सच कहा जाए तो आदमी का बचपन ही सबसे अच्छा होता है। उम्र बढ़ते ही कष्ट का सिलसिला बढ़ जाता है। तनवीर नहीं समझती कि पाकिस्तान का मतलब क्या है। पाकिस्तान विदेश है। कोई झट से चाहे तो विदेश नहीं जा सकता, यह समझने की तनवीर की अभी उम्र नहीं हुई है। न होना ही बेहतर है। वरना उसे जिस तकलीफ का अहसास हो रहा है, तनवीर को भी होता।

"दार जी, पाकिस्तान चलो न।"

दर्शन सिंह ने कहा, "चलूंगा। पहले साफ़-सुथरा कपड़ा पहन लूं, तब न जाऊंगा। इस तरह के मैले-कुचैले कपड़े पहने रहने से कौन वहां जाने देगा ? तुम्हें भी अच्छा कपड़ा पहना दूंगा, तब न···। वरना सभी निंदा करेंगे।"

तनवीर ने पूछा, "झाई जी पाकिस्तान क्यों चली गईं दार जी ?"

दर्शन सिंह इसका क्या जवाब दे। बोला, "पाकिस्तान में तुम्हारी झाई जी का बड़ा भाई रहता है, इसी वजह से वहां गई है। भाई से मिलने के बाद फिर यहां चली आएगी। यहां आकर बगीचे में तुम्हारे लिए एक अमरूद का पौधा लगाएगी।"

"अमरूद का पौधा ?"

"हां, उस पेड़ पर चढ़कर तू अमरूद तोड़कर खाएगी। इसके अलावा अनार का भी एक पौधा लगाएगी।"

तनवीर ने कहा, "मैं अनार खाऊंगी दार जी।"

दर्शन सिंह ने कहा, "हां-हां, तुम्हारे लिए ही तो अम्मा पाकिस्तान से वापस

आकर अनार का पौधा लगाएगी। वह अनार सिर्फ़ तुम खाओगी, और कोई नहीं खाएगा।"

तनवीर ने कहा, "मैं भाई जी को अनार दूंगी दार जी।"

"भाई जी को दोगी ? देना।"

यह कहते हुए दर्शन सिंह तनवीर को लेकर गुरुद्वारे की ओर चल दिया।

दिल्ली, पंजाब, मद्रास, मैसूर, कलकत्ता, गुवाहाटी वग़ैरह स्थानों में लोगों ने शोर-गुल और हुल्लड़बाजी मचा दी है।

कलकत्ता में घड़ी ने ज्यों ही सुबह के आठ बजाए, धर्मतल्ला के मोड़ से पश्चिम की तरफ़ हज़ारों लोग लाट साहब के भवन में घुस पड़े। जिस कमरे में लाट साहब सर फ्रेडरिक बारोज सोते थे उस कमरे के बिस्तर पर चढ़, रास्ते के लड़कों ने उछल-कूदकर नाचना शुरू कर दिया है। जिन्हें अपनी जिन्दगी में सोने को एक चटाई तक न मिली हो, उस दिन गद्दे पर लेटकर उन्होंने अपनी साध पूरी कर ली। चारों तरफ़ जो बड़े-बड़े आकार के तैलचित्र थे उन्हें छाते की मूठ से गोद-गोदकर फाड़ रहे हैं। एक घण्टा पहले तक लाट साहब की मेम साहब वहीं, उसी कमरे में लेटी हुई थी। अब उस कमरे के अन्दर भूत-प्रेतों का नाच शुरू हो गया। उस दिन किसी ने बस-ट्राम का टिकट नहीं कटाया। रेलगाड़ियां और-और दिनों की तरह ही चलती रहीं—मगर बेटिकट मुसाफिरों को लेकर।

हम इतने दिनों के बाद आजाद हुए हैं। लिहाजा हम ट्राम-बस-ट्रेन का किराया क्यों दें ? अगर किराया देंगे तो फिर हम आजाद क्यों हुए ?

उस दिन भारत के सभी कारागारों के दरवाजे खोल दिए गए। जाओ, तुम सब लोग जेल से बाहर निकल जाओ। आज तुम स्वतन्त्र हो। आज तुम सभी की सजा रद्द कर दी गई है।

और जिन्हें फांसी का हुक्म मिला है, उनका क्या हुआ ?

उनकी भी सजा माफ़ कर दी गई। चारों तरफ पटाखे बजने लगे।

बंबई में भी यही दृश्य देखने को मिला। लाखों लोग उतावलेपन के साथ घुस पड़े अंग्रेजों के निष्प्राण प्रतिनिधि ताजमहल होटल के नाच घर के अन्दर।

टेट देहात के किसान-मजदूर लड़के ही रास्ते पर निकल पड़े हैं। लड़के बच्चे और औरत को अपने साथ ट्रेन में शहर ले आए हैं। उस दिन उन लोगों के लिए किसी क़ानून की पाबन्दी नहीं थी। अगर वे लोग कोई ग़ैर-क़ानूनी काम भी कर बैठें तो कोई कुछ नहीं कहेगा। पुलिस यद्यपि है परन्तु उसका रहना और न रहना एक जैसा है। पुलिस वाले कुछ नहीं कहेंगे। क्योंकि वे लोग भी तो आज

आज़ाद हैं। काम न करने पर भी उन्हें हर महीने वेतन मिलता रहेगा।

अब देश में एक भी अंग्रेज न रहेगा। आज से तमाम चीज़ों की क़ीमतों में गिरावट आ जाएगी। खाने-पीने-पहनने-रहने की किसी को फिक्र नहीं करनी होगी। अब हमारे लड़के बच्चों को नौकरी की मांग करते ही अच्छी-से-अच्छी नौकरी मिल जाएगी।

और भारत के बाहर पाकिस्तान में क्या हो रहा था ?

पाकिस्तान तो दो हैं—एक पश्चिम पाकिस्तान और दूसरा पूर्व पाकिस्तान। पश्चिम पाकिस्तान में तब हर जगह उत्सव और उल्लास का माहौल था। 15 अगस्त रमजान के त्योहार का आखिरी शुक्रवार है। उस समय भी तय नहीं हुआ था कि पाकिस्तान का झंडा और राष्ट्रीय गीत क्या होगा। उसके बदले पाकिस्तान में सिर्फ़ मुहम्मद अली जिन्ना के फोटो ही चारों तरफ़ टांगे गए हैं। बाज़ार, राह-बाट सभी जगह जिन्ना साहब के फोटो।

और पूर्व पाकिस्तान में ? जिन्ना साहब ने ग़लती से भी उस देश की जमीन पर कभी पैर नहीं रखा है। वहां सिर्फ़ जिन्ना साहब की तसवीर से ही कामचलाऊ उत्सव का आयोजन हो रहा है।

एक मात्र दिल्ली के एक गुरुद्वारे में ही दर्शन सिंह के मन में उत्सव की कोई हलचल नहीं है। वहां केवल विरह और विसर्जन का रोदन है। चारों तरफ़ पूरे देश में जो आनन्द छाया हुआ है, वह दर्शन सिंह को बेसुरा जैसा लग रहा है। वह तनवीर को गोद में लिए अपनी हसीना के लिए सिर्फ़ रो रहा है।

उसके अतिरिक्त और एक व्यक्ति हसीना को याद कर रहा है। वह है तनवीर।

तनवीर बीच-बीच में पूछती है, "पाकिस्तान नहीं चलोगे दार जी ?"

दर्शन सिंह उसे झूठ-मूठ का आश्वासन देता है, "जाऊंगा बिटिया, अब हम चलेंगे।"

"कब जाओगे ?"

दर्शन सिंह को खुद मालूम नहीं कि वह कब पाकिस्तान जा सकेगा। कब प्रेमजिन्दरसिंह पाकिस्तान जाने का पासपोर्ट और वीसा लाकर देगा। वह दर्शन सिंह से दो बार पांच-पांच सौ रुपये ले गया है। उसके बाद से उस पर नज़र ही नहीं पड़ी है। इतने दिनों तक वह खुद कोशिश करता तो हो सकता है पासपोर्ट और वीसा का जुगाड़ हो चुका होता।

मगर प्रेमजिन्दर सिंह उससे कह गया है, थोड़ी देर हो रही है क्योंकि हजारों आदमी पाकिस्तान जाने की कोशिशें कर रहे हैं। जो लोग मुसलमान हैं उन्हें जल्द से जल्द पासपोर्ट की ज़रूरत है। केवल हिन्दू और सिखों के मामले में देर हो रही है।

दर्शन सिंह को प्रेमजिन्दर की बातों पर अविश्वास नहीं हुआ था। प्रेमजिन्दर कोई दलाल नहीं है। दलाल होता तो दर्शन सिंह को ठग लेता। प्रेमजिन्दर सिंह उसका सगा भतीजा है। वह किसको ठग सकता है। उस पर विश्वास रख दर्शन सिंह राह की ओर ताकता रहता।

दर्शन सिंह दहलीज़ के लिए बाहर के कमरे के पास ही बैठा रहता है। प्रेमजिन्दर सिंह को दूर से देखकर ही दर्शन सिंह तैयार हो जाता। सुबह से शाम और शाम से रात तक कितने ही लोग आते जाते हैं और बाहर से अन्दर आते हैं। दर्शन सिंह उन सब लोगों को गौर से देखता है। सभी लोग उसके लिए अनजाने-अनपहचाने हैं। वह किसके लिए इन्तजार कर रहा है, इसका पता नहीं दिख रहा है।

बीच-बीच में उसे गुरदासपुर की भी याद आती है। गुरदासपुर की याद आते ही उसके मन को एक प्रकार की अजीब बेचैनी होती है। वह कहाँ क्या है, वह है, कौन जाने! उसके खेत और खलिहान हैं। ... हान के कानों में गूँजता रहता। कभी-कभी उसे वहाँ जाना रहता, रहता।

लेकिन कब?

हसीना जिस दिन से उसके जीवन में आई है उसी दिन से उसके जीवन में एक प्रकार का फेर-बदल आ गया है।

उस दिन सहसा किसी ने आकर पुकारा, "चाचा, चाचा!"

दर्शनसिंह हड़बड़ा कर उठ बैठा।

"कौन प्रेम? तू आ गया? आ गया! मैं तेरे लिए ही यहां बैठा हुआ हूं।"

प्रेमजिन्दर बोला, "लीजिए, यह रहा आपका पासपोर्ट। और यह वीसा। मैं सब का जुगाड़ करके ले आया हूं।"

दर्शन सिंह के आनन्द की कोई सीमा न रही। और, उसके पाकिस्तान जाने की मुराद पूरी हो जाएगी। वह व्यर्थ ही इतने दिनों से चिन्ता में था। बोला, "कैसे पाकिस्तान जाऊंगा?"

प्रेमजिन्दर बोला, "इसके लिए आपको चिन्ता नहीं करनी है। मैं खुद आपको ट्रेन पर बिठाकर सरहद पार करा दूंगा। आप फिक्र मत करो।"

दर्शन सिंह ने पूछा, "कितना रुपया खर्च करना पड़ा?"

प्रेमजिन्दर बोला, "आपने जितना दिया था, उससे बहुत कम लगा। यह रहा बाक़ी रुपया। आपने दो दफे कुल मिलाकर एक हजार रुपया दिया था। उनमें से तीन सौ रुपया बचा है। दलाल और रुपये की माग कर रहे थे। मैंने नहीं दिया। यह लीजिए।"

प्रेमजिन्दर ने उसकी ओर सौ रुपये के तीन नोट बढ़ा दिए। दर्शन सिंह बोला, "यह रुपया तू ही रख ले प्रेमजिन्दर। तू ने मेरे लिए भरपूर मेहनत की है।

तू ही इसे रख ले।"

प्रेमजिन्दर ने नहीं लिया। बोला, "नहीं-नहीं, मैं क्यों लूं? आपकी मेहनत की कमाई मैं क्यों लूं?"

दर्शन सिंह ने कहा, "तू ने भी तो बहुत मेहनत की है। मैं तुझे चाय पीने की खातिर दे रहा हूं।"

प्रेम को इंसान ही कहना चाहिए। किसी भी हालत में रुपया नहीं लिया।

एकाएक तनवीर ने पुकारा, "दार जी!"

तनवीर की पुकार सुन दर्शन सिंह की नींद टूट गई। बोला, "कौन? कौन है?"

तनवीर बोली, "तुम नींद में किससे बातें कर रहे थे?"

बात तो सही है! प्रेमजिन्दर कहां चला गया? उसके पाकिस्तान जाने का पासपोर्ट और वीसा कहां चला गया? कहीं कोई भी नहीं है। फिर क्या वह सपना देख रहा था? अगर सपना ही था तो यह कैसा सपना है!

तनवीर बोली, "दार जी, बारिश होने वाली है। चलो, अन्दर जाकर सोएं।

दर्शन सिंह लड़की का हाथ थामे अन्दर चला गया। तब सचमुच ही झमाझम पानी बरसना शुरू हो गया था।

मिस्टर ग्रिफिथ अब चुप हो गए।

मैंने पूछा, "फिर?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ बोले, आदमी की जिन्दगी इस तरह की होती है। खासकर एशिया के लोगों की। हज़ारों साल पहले योरोप के लोगों को जब विज्ञान की जानकारी प्राप्त नहीं हुई थी, उस समय एशिया के लोगों के जीवन में सभ्यता की लहर आई थी। उसकी तमाम अच्छाइयों को यहां के लोगों ने खुलकर अपनाया था। एशिया के लोगों का विश्वास था, भोग में शान्ति और सुख नहीं है, सुख और शान्ति अनासक्ति और वैराग्य में है।

योरोप में ही पहले-पहल एक और क़िस्म की क्रान्ति की शुरुआत हुई थी। उस क्रान्ति का नाम है औद्योगिक क्रान्ति। 1690 ई० में इंगलैण्ड में पहली मशीन का आविष्कार हुआ। इंगलैण्ड में टॉमस सैवरी नामक एक सज्जन ने स्टीम इंजिन का आविष्कार किया—खदान से पानी निकालने के लिए। उसी समय से इंगलैण्ड का विजय अभियान शुरू हुआ। उस स्टीम इंजिन के आविष्कार होने के बाद और भी अनेक क़िस्मों की मशीनों का आविष्कार होना शुरू हो गया। नाव के बदले पानी में कल-पुर्जेवाला जहाज चलने लगा। एशिया में उस समय भी पाल तनी

नौकाएं चल रही थीं। उस समय भी एशियावासी मनुष्यों की आध्यात्मिक मुक्ति की बातें सोच रहे थे। सोच रहे थे, किस प्रकार इस मर्त्य लोक से अमर्त्य लोक में पहुंचेंगे। किस तरह मनुष्य निर्वाण प्राप्त कर चिर शान्ति के पथ की खोज करेंगे।

लेकिन टॉमस सैवरी के द्वारा ईजाद की गई स्टीम इंजिन तब आदमी के भौतिक सुख की खोज में व्यस्त थी। लगातार, अनवरत। इंगलैण्ड छोटा देश है, परन्तु उसकी दृष्टि, बहुत दूर टिकी है। बहुत दूर के देशों की खोज के लिए उसमें अदम्य उत्साह है। वह उस मशीन के सहारे अपने यहां के लोगों की सुख-सुविधा में वृद्धि लाएगा। दूर के देशों से संपत्ति लाएगा। उस सपदा से वह एक ऐसे साम्राज्य का निर्माण करेगा जहां कभी सूर्यास्त नहीं होगा। इसी तरह एक दिन एशिया अंग्रेजों के चंगुल में फंस गया और तभी से शोषण की शुरुआत हुई।

इसी तरह शोषण का सिलसिला चलाने के लिए दलालों का भी एक दल बनाया गया। अंग्रेजी की शिक्षा देकर उन्हें योग्य बनाया गया ताकि शोषण करने में उन्हें सहूलियत हो। अंग्रेज एशिया से जो सब सामान खरीदकर अपने देश भेजते हैं, उनका लेखा-जोखा रखने के लिए, उनके बारे में जानने-समझने के लिए आदमी की जरूरत है। लिहाजा उन लोगों को अंग्रेजी भाषा की तालीम देने की जरूरत पड़ी। वे लोग अंग्रेजों के गहरे मित्र बन गए। उनका एक दूसरा नाम रखा गया दलाल। वे ही लोग परीक्षा में सफल होकर आई० सी० एस०, आई० पी० एस० और आई० ई० एस० हुए।

लेकिन उन दलालों में से कुछ लोगों को अंग्रेजों की चालाकी समझ में आ गई। वे हैं अरविन्द, गांधी और सुभाष बोस।

उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ मुहिम छेड़ दी। उन्होंने ही कहा :

तुम्हारी चालाकियां हम समझ गए हैं। अब हम तुम्हारा जय-जयकार नहीं करेंगे। जो अरविन्द दलाल बनने को इंगलैण्ड गया था, वही एशिया लौटने के बाद अंग्रेजों को खदेड़ने के लिए बम बनाने लगा। जो गांधी दलाल बनने को इंगलैण्ड गया था, स्वदेश लौटने के बाद उसीने विलायती कपड़ों के बहिष्कार का आन्दोलन छेड़ दिया और अंग्रेजों को भारत छोड़ने की धमकी दी। जो सुभाष बोस दलाली करने को इंगलैण्ड गया था, वही एशिया वापस आने के बाद आई० सी० एस० की नौकरी छोड़ नेताजी बन गया और सैनिकों को अंग्रेजों के खिलाफ भड़काने में लग गया।

इसी सुभाष बोस से अंग्रेजों को घोर अपमानित होना पड़ा। सुभाष बोस के द्वारा घोर अपमानित होने के कारण ब्रिटिश सरकार ने जाने के दौरान भारत पर कुठाराघात करते हुए कहा, "अच्छा ठीक है, आज हम जा तो रहे हैं जरूर, मगर भारत को इस प्रकार छोड़कर जाएंगे कि कभी तुम लोग सिर ऊपर उठाकर नहीं चल सकोगे। हम इस तरह भारत छोड़कर जाएंगे कि तुम्हें हमेशा-हमेशा के लिए

हम पर निर्भर करना पड़े। अभी हम भले ही इण्डिया को दो टुकड़े में बांटकर जा रहे हैं किन्तु इस तरह की स्थिति पैदा कर जाएंगे कि भविष्य में भारत टुकड़े-टुकड़े में बंट जाए। तब तुम्हारा असम, पंजाब, दार्जलिंग वग़ैरह भारत से अलग हो जाएंगे। सुभाष बोस चिर दिन जीवित तो रहेगा नहीं। लेकिन हम साम्राज्यवादी चिर दिन रहेंगे। देखना है, तुम लोग किस तरह शान्ति का जीवन जीते हो। देखना है, तुम्हारे पास कितनी आर्थिक शक्ति और जनशक्ति है।

"उसके बाद ? दर्शन सिंह का क्या हुआ ? उसके बारे में बताइए। उसका पासपोर्ट आया ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने कहा, "नहीं। प्रेमजिन्दर सिंह उससे एक हज़ार रुपया लेकर चंपत हो गया।"

यही है रिवाज। आदमी की ज़िन्दगी में जब मुसीबत आती है तो केवल दुर्जन ही उसके सम्पर्क में आते हैं। दर्शन सिंह को जब कहीं किसी दिशा में उम्मीद की रोशनी दिखाई न पड़ी तो उसने अपने काम का बीड़ा स्वयं अपने कन्धे पर उठाया। कुछ न कर पाने की वजह से दर्शन सिंह तब जान देने या लेने पर उतारू हो गया था। चाहे जैसे भी हो उसे पाकिस्तान जाना है। अगर पासपोर्ट-वीसा का जुगाड़ न कर पाएगा तो वह सरहद लांघ ग़ैर-कानूनी तरीके से जाएगा। हसीना के पास बग़ैर गए, हसीना को बग़ैर देखे वह ज़िन्दा नहीं रह पाएगा। हसीना के बिना वह अपनी यह ज़िन्दगी कैसे जिएगा ?

ऐसे में एक दिन उसकी मुलाक़ात अचानक एक व्यक्ति से हो गई। उसने कहा, "अरे, आपने यह बात पहले ही क्यों नहीं बताई ?"

दर्शन सिंह ने पूछा, "क्यों, पहले बताने से क्या होता ?"

"पहले बताते तो मैं सारा इन्तजाम कब का कर चुका होता।"

दर्शन सिंह ने पूछा, "कैसे तुम पाकिस्तान जाने का इन्तज़ाम कर देते ?"

यह आदमी भी दलाल है। बोला, "पहले मैं बहुत सारे सिखों को पाकिस्तान भेज चुका हूं। मैं···।"

"ये किस मक़सद से पाकिस्तान गए हैं ?"

"वे लोग काफ़ी कुछ जमीन-जायदाद पाकिस्तान में छोड़ आए थे। उसी का बन्दोबस्त करने गए हैं।"

उसी आदमी ने रास्ता बता दिया। सबसे जो जरूरी काम था वह छद्म रूप धारण करना। सिर के बाल, दाढ़ी और मूछें कटानी होंगी।

दर्शन सिंह ने ऐसा ही किया। लेकिन ऐसी हालत में गुरुद्वारे में टिकने नहीं दिया जाएगा। दलाल ने ही रहने की एक जगह का इन्तजाम कर दिया। पैसा फेंकने से दिल्ली में क्या नहीं मिलता !

इसके बाद जो सबसे कठिन काम है, दर्शन सिंह ने वही किया। वह पुरानी

दिल्ली की जामा मस्जिद एक दिन जा पहुंचा ।

मौलवी साहब ने पूछा, "तुम्हें क्या चाहिए ? कौन हो तुम ?"

दर्शन सिंह बोला, "मैं एक सिख हूं ।"

"क्या चाहिए ?"

"मैं मुसलमान बनना चाहता हूं मौलवी साहब !"

दो-चार और बातें होने के बाद निश्चित दिन किया गया । वह जुम्मे का दिन था । उसी दिन वह दर्शन सिंह के बदले जमील अहमद हो गया ।

जमील अहमद ने पाकिस्तान हाईकमिश्नर के पास पहुंच एक दरख्वास्त पेश करते हुए कहा, "हुजूर, मैं मुसलमान हूं । मेरा नाम है जमील अहमद । मेरी औरत हसीना बीबी पाकिस्तान में है । मैं उससे मिलना चाहता हूं । मुझे पाकिस्तान जाने का पासपोर्ट चाहिए ।"

जमील अहमद को दो हफ्ते के बाद आने को कहा गया ।

एक हफ्ते के बाद जब जमील अहमद पहुंचा तो उसे बताया गया, अनुमति नही दी जा सकती है ।

उसके बाद उसने वीसा के लिए दरख्वास्त दी मगर उसे भी नामंजूर कर दिया गया ।

अब उपाय ?

उपाय की तलाश उसी आदमी ने ही कर दी ।

दिल्ली से गुरुदासपुर तक रेलगाड़ी से जाना होगा । वहां की सरहद पर एक आदमी मिलेगा । जैसे ही अपना नाम बताएगा वह पक्का इन्तजाम कर देगा । उस पार की सीमा के अधिकारियों और इस पार की सीमा के अधिकारियों के बीच एक प्रकार का गुप्त अलिखित समझौता है । दुनिया की तमाम सरहदों में जिस प्रकार की व्यवस्था है, भारत और पाकिस्तान की सरहदों में भी वही व्यवस्था है । यहां भी पैसा फेंकने से सारा काम हो जाता है ।

जमील अहमद किसी बाधा का सामना किए बिना पाकिस्तान पहुंच गया ।

तनवीर को गोद में थामे उसने सारा रास्ता तय किया । तनवीर बीच-बीच में सिर्फ यही पूछती, "हम कहां जा रहे हैं दार जी ?"

जमील अहमद कहता, "पाकिस्तान ।"

"पाकिस्तान में मेरी झाई जी हैं न दार जी ?"

"हां बेटी, हम तो तुम्हारी झाई जी के पास ही जा रहे हैं ।"

तनवीर बोली, "हम पहुंचेंगे तो झाई जी चौंक पड़ेंगी ।"

"हां, चौंक पड़ेंगी । नजर पड़ते ही दौड़ती हुई आएगी और तुम्हें गोद में उठा लेगी । गोद में उठाकर तुम्हें लाड़ करेगी, जी-भर चूमेगी ।"

तनवीर बोली, "मैं झाई जी की गोद में नहीं जाऊंगी ।"

"क्यों ?"

"झाई जी मुझे अपने साथ पाकिस्तान क्यों नहीं लाई ? मुझे अकेली छोड़कर क्यों पाकिस्तान चली गई। मुझे गुस्सा नहीं आएगा भला !"

जमील अहमद ने कहा, "झाई जी पर गुस्सा नहीं करना चाहिए बेटी ! तुम्हारी झाई जी क्या अपनी मर्जी से गई हैं ? उसे पुलिस जबरन ले गई है। तुम्हें याद नहीं कि जाने के दिन तुम्हारी झाई जी कितनी रो रही थी ! खाना न खा-खाकर वह बिल्कुल कमजोर हो गई थी। उसकी तो जाने की मर्जी ही नहीं थी। तुम्हें छोड़कर झाई जी क्या कभी जा सकती है ?"

तनवीर बोली, "तो फिर झाई जी का कोई दोष नहीं है। झाई जी को देखते ही मैं उन्हें भरपूर प्यार करूंगी, खूब चूमूंगी।"

बचपन में आदमी क्षण-भर में ही जिस प्रकार गुस्से में आ जाता है उसी प्रकार क्षण-भर में खुश भी हो जाता है।

जमील अहमद अपनी लड़की के साथ लाहौर जानेवाली ट्रेन में बैठ गया। उनके साथ कितने ही लोग चल रहे हैं। एक-दूसरे को कोई पहचानता नहीं है। थोड़ी-सी जान-पहचान होते ही एक-दूसरे का नाम-धाम और परिचय पूछता है।

पूछता है, "आप कहां जाएंगे साहब ?"

जमील अहमद कहता है, "लाहौर। और आप ?"

"मैं पेशावर जाऊंगा। आपका नाम ?"

"जमील अहमद।"

"आपका मुल्क ?"

"भारत। गुरुदासपुर जिला।"

"भारत की क्या खबर है जमील साहब ?"

"बहुत ही बुरी।" जमील अहमद कहता है।

"सुनने में आया हैं, गांधी जी को मौत के घाट उतार दिया गया।"

जमील अहमद ने कहा, "हां।"

"किसने खून किया मियां साहब ? मुसलमानों ने ?"

"नहीं, हिन्दुओं ने।"

आदमी बोला, "ठीक किया जनाब ! उस आदमी ने जिन्ना साहब को बहुत सताया था। पाकिस्तान के एक दुश्मन का खात्मा हो गया। अच्छा ही हुआ।"

चन्द लमहों के बाद आदमी ने पूछा, "और सुभाष बोस ? सुना है, सुभाष बोस जिन्दा है। आपको कुछ मालूम है मियां साहब ?"

"नहीं, मालूम नहीं है।" जमील अहमद ने कहा, "कोई कहता है, मर गया और कोई कहता है जिन्दा है।"

आदमी बोला, "उस काफिर का मरना ही बेहतर है। अंग्रेज बहादुर से दुश्मनी

मोल लेने से वैसा तो होना ही।"

गाड़ी जैसे ही किसी स्टेशन पर रुकी, चायवाला चिल्लाने लगा, "चाय गरम, गरम चाय।"

बहुतों ने चाय खरीदी। बग़लवाले ने पूछा, "आप चाय पिएंगे मियां साहब?"

"नहीं।" जमील अहमद ने कहा।

दरअसल दर्शन सिंह को ज्यादा बोलना अच्छा नहीं लग रहा था। बग़ल में तनवीर लेटी हुई है। उसको किसी बात की चिन्ता नहीं है। आदमी का बचपन ही अच्छा हुआ करता है। बड़ा होते ही दुख-तकलीफ़ का अहसास होता है। उम्र बढ़ने पर ही दर्शन सिंह के जीवन में झंझटों की शुरुआत हुई है। उस दिन से अब से उसके जीवन में हसीना आई है।"

"मियां साहब!"

"जी!" जमील अहमद ने कहा।

"भारत में क्या अब भी मुसलमान हैं या फिर सारे मुसलमान पाकिस्तान चले आए हैं?"

जमील अहमद ने कहा, "हैं; अब भी बहुत सारे मुसलमान हैं।"

"मुसलमान भारत में कैसे हैं? उन्हें डर नहीं लगता?"

जमील अहमद ने कहा, "डर किस बात का?"

आदमी बोला, "सुना है हिन्दू मुसलमानों के मकान जला रहे हैं।"

जमील बोला, "नहीं मियां साहब, मैं भी तो मुसलमान हूं। मेरा मकान किसी ने नहीं जलाया है।"

"हो सकता है, अब तक न जलाया हो। मगर काफ़िरों पर क्या यकीन किया जा सकता है मियां साहब? वे लोग सब कुछ कर सकते हैं।"

जमील अहमद बोला, "यह तो आप ठीक ही कह रहे हैं मियां साहब! काफ़िरों पर विश्वास नहीं किया जा सकता है।"

आदमी बोला, "सबसे बदमाश हैं सिख। मैंने तो जनाब, अपने हाथ से बारह सिखों का ख़ून किया है और बीस सिखों का मकान जला डाला है। आपने चन्द हिन्दुओं को मारा है या नहीं मियां साहब!"

जमील अहमद बोला "कोशिश की थी, मगर मार नहीं सका।"

सिवा इसके वह कहता ही क्या! दूसरी बात है, इस तरह की बातें करना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। तब पूरे डिब्बे में यही गुफ़्तगू चल रही थी। एक ही तरह की बातचीत, एक ही सन्दर्भ। कब सुबह हुई, कब शाम और कब रात— इसका उसको पता ही न चला।

बीच-बीच में एक प्रश्न उसे बेध रहा था। दिन अनजाने-अनपहचाने लोगों के

बीच वह आ गया है ! यह भी तो एक नया देश है। सगा भतीजा होने के बावजूद प्रेमजिन्दर सिंह अगर इतना सारा रुपया ठगकर ले जा सकता है तो फिर नए देश के अनजाने-अनपहचाने लोग उसे ठगने की कोशिश नहीं करेंगे, यह कैसे कहा जा सकता है ?

मेल ट्रेन एक दिन सवेरे लाहौर स्टेशन पर आकर रुकी। मुसाफिर ट्रेन से उतरने लगे। दर्शन सिंह तनवीर को पुकारने लगा, "अरी उठ, उठ।"

लड़की बहुत सो चुकी है। नींद टूटते ही पूछा, "झाई जी कहां हैं, दार जी ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "अब हम लोग तुम्हारी झाई जी के पास चलेंगे। फिक्र मत करो।"

तनवीर ने कहा, "तुमने तो कहा था, पाकिस्तान पहुंचते ही झाई जी मेरे पास दौड़ती हुई आएंगी, मुझे प्यार करेंगी। झाई जी कहां हैं ? झाई जी आ क्यों नहीं रही हैं ?"

दर्शन सिंह ने लाहौर शहर का नाम-भर सुना था, वहां कभी आया नहीं था। सड़क कितनी चौड़ी हैं ! कुली, रिक्शावाले, तांगेवाले आगे बढ़कर आए। दर्शन सिंह के पास असबाब नहीं है। सिर्फ बिस्तर का एक बंडल है जिसके अन्दर एक अंगोछा, कपड़े-लत्ते और एक बदना है।

एक आदमी ने स्टेशन के क़रीब की एक मस्जिद का पता बताया। उन दिनों सबसे निरापद स्थान था मस्जिद।

वहां जाकर इमाम साहब से दर्शन सिंह ने किसी एक ऐसे सस्ते होटल का पता जानना चाहा जहां वह कुछ दिनों तक ठहर सके।

"आप कहां से आ रहे हैं ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "भारत से।"

"आप मुसलमान हैं ?"

"जी हां, मेरा नाम जमील अहमद है।"

"यहां किसलिए तशरीफ ले आए हैं ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "असगर अली साहब मेरे रिश्तेदार हैं। मैं उनसे मिलने आया हूं।"

इमाम साहब ने उसे एक सस्ती सराय का पता बताया।

दर्शन सिंह ने उसी सराय में तनवीर के साथ डेरा डाला। सराय एक गली के अन्दर एकान्त स्थान में है। रहने-खाने का खासा अच्छा इन्तज़ाम है। बाहर के रास्ते के शोर-शराबे की आवाज़ वहां तक नहीं पहुंचती है।

सराय का मालिक भला आदमी है। वहां पहुंचते ही बोला, "आइए मियां साहब ! कहां से आना हो रहा है ? इण्डिया से ?"

"जी हां।"

"कितने दिन ठहरेंगे ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "ज्यादा-से-ज्यादा पन्द्रह दिन से एक महीने तक। पैसे कुछ कम लीजिएगा मियां साहब ! मैं ग़रीब आदमी हूं। जान बचाने की खातिर पाकिस्तान आना पड़ा है।"

सराय के मालिक ने कहा, "ठीक है, आप हमारी जात-बिरादरी के आदमी हैं। आपसे मैं ज्यादा पैसा नहीं लूंगा। आपके पास इण्डिया का रुपया है न ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "जी हां।"

"ठीक है। आप कमरे के किराए और दो वक़्त के खाने के मद में हर रोज़ इण्डिया के चार रुपए दीजिएगा।"

दर्शन सिंह ने कहा, "ठीक है।"

इसके बाद उसने दर्शन सिंह की ओर सराय का खाता बढ़ा दिया। बोला, "अब आप अपना नाम लिख दीजिए मियां साहब !"

दर्शन सिंह ने बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा—जमील अहमद, गुरुदासपुर, इण्डिया।

मिस्टर ग्रिफिथ बोले, "देखिए, कहां का आदमी और किस काम से एकाएक कहां आ धमका। कभी जो उसका अपना देश था वही रातों-रात उसके लिए विदेश हो गया। वहां आने के लिए पासपोर्ट और वीसा की जरूरत पड़ती है। वहां जाने से अपने देश का रुपया अचल हो जाता है।

भारत-भाग्य विधाता का यह एक विचित्र परिहास है।

1947 ई० के अप्रैल माह में भी लुई माउण्ट बेटन, जवाहर लाल नेहरू या गांधी जी को उस बात की जानकारी न थी जिस बात की जानकारी 1946 ई० के जून महीने में एक डाक्टर को थी। बंबई के डाक्टर जाल आर० पटेल ने उस खबर को सबकी आंखों से बचाकर अपनी लैबोरेटरी में रख दिया था।

जब 1946 ई० के मई महीने में डाक्टर पटेल को पहले-पहल उस बीमारी का पता चला तो उसने जिन्ना साहब को सावधान कर दिया था। कहा था, "होशियारी से रहिए जिन्ना साहब, आप अगर अल्कोहल और सिगरेट पीना कम न करेंगे तो फिर आप दो महीने से ज्यादा जिन्दा न रहेंगे। आपके सीने में जो बीमारी दिख रही है, वह बहुत सीरियस है।"

"सीरियस क्यों है ? मुझे कौन-सी बीमारी है ?"

डाक्टर पटेल ने कहा था, "तपेदिक।"

"उससे क्या होगा ?"

डाक्टर पटेल ने कहा था, "आपने अगर शराब और सिगरेट पीना बन्द न किया तो फिर आप एक या दो महीने से ज़्यादा ज़िन्दा नहीं रहेंगे। अगर आप ज़िन्दा रहना चाहते हैं और पाकिस्तान बनाना चाहते हैं तो आपको हर क़िस्म के नशे को छोड़कर आराम करना होगा।"

यह बात सुन, बिना किसी ओर दृष्टि दौड़ाए जिन्ना साहब ने कहा था, "आराम ? पाकिस्तान न बना सका तो लंबी उम्र लेकर क्या करूंगा ? अगर किसी दिन पाकिस्तान बन जाएगा तो फिर मैं आराम करूंगा। उसके पहले किसी सैनिटोरियम में जाऊंगा तो मेरे दुश्मन हिन्दुओं को इसका पता चल जाएगा। मेरे क़ब्र में जाने तक के दिन का वे इन्तज़ार करते रहेंगे। कहेंगे : पहले शैतान की औलाद जिन्ना की मौत हो जाए तब हम आज़ादी की मांग करेंगे। उसके पहले नहीं।"

सच, नेहरू, पटेल और गांधी जी को अगर पता होता कि जिन्ना कुछ ही दिनों का मेहमान है तो हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए वे इतने उतावले नहीं होते। वे आज़ादी के लिए इतने आन्दोलन नहीं करते और न ही इतना दबाव डालते।

लेकिन नेहरू तब उतावले थे। नेहरू जी ने बहुत दिनों तक जेल की सज़ा काटी थी। फिर वे कितने दिनों तक इन्तज़ार में रहते ? पटेल को दो बार दिल का दौरा पड़ चुका था। वे भी कितने दिनों तक प्रतीक्षा करते रहेंगे ? और जो आदमी उनका सबसे बड़ा शत्रु था, वह सुभाष बोस तब नहीं था। वह आदमी अगर ज़िन्दा होता तो हमारे लिए थोड़े-बहुत डर की बात थी। क्योंकि हमारे बदले जनता उन्हें ही प्रधानमंत्री के पद पर बिठाती। लिहाज़ा हमारे रास्ते से हटकर उन्होंने हमारे लिए रास्ता साफ़ कर दिया है। अब हमें जल्द-से-जल्द आज़ादी दे दो।

यह सच है कि सुभाष बोस ज़िन्दा रहते तो हिन्दुस्तान का बंटवारा नहीं होता और यह भी सच है कि जिन्ना साहब के एक्स-रे प्लेट की बात फैल जाती तो हिन्दुस्तान के बंटवारे की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

ऐसे में दर्शन सिंह से हसीना की शादी नहीं हुई होती और न ही हसीना को पाकिस्तान जाना पड़ता।

इसके अलावा इतनी झंझटों का मुक़ाबला कर दर्शन सिंह को पाकिस्तान भी नहीं आना पड़ता।

यहां भी सराय में एक आदमी से उसका परिचय हुआ। आदमी ने पूछा, "आपका नाम क्या है मियां साहब ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "जमील अहमद।"

"आपका यहां कौन-सा काम है ?"

दर्शन सिंह बोला, "अपनी बीवी की तलाश में···।"

"आपकी बीवी ?"

"हां।"

"आपकी बीवी क्या भारत से भागकर पाकिस्तान चली आई है ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "हां जी।"

"क्यों भाग आई है ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "क्यों भाग आई है, यही जानने मैं पाकिस्तान आया हूं। आने का मकसद है यहां उसकी तलाश करना। देखिए न मियां साहब, वह अपनी इस लड़की को भी छोड़कर चली आई है। आप उसके बारे में कुछ पता बता सकते हैं ?"

आदमी बोला, "पाकिस्तान क्या कोई छोटी-सी जगह है ? यहा कहां, किस जिले, किस गाव में है, यह जानना भी तो जरूरी है। यह सब जाने बगैर पहचानूंगा कैसे ?"

दर्शन सिंह को भी यह बात मालूम थी। सिर्फ नाम बताने से ही काम नही चलेगा। उसके सगे-संबंधी और रिश्तेदारों में से किसी का नाम बिना बताए उसका पता कैसे चलेगा ?

सराय में तरह-तरह के आदमी तरह-तरह के कामों से आते हैं। कोई आकर कुछ दिनों तक ठहरता है और फिर चला जाता है। इसके अतिरिक्त यह एक नया देश है, इसके नियम-कानून भी नए सिरे से तैयार किए जा रहे हैं। यहा के बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो भारत से आए हैं। उनकी खुराक का इन्तजाम करना होगा, उनके लिए रहने की जगह का इन्तजाम करना होगा, नौकरी का इन्तजाम करना होगा। कोई अन्याय करे तो उसे सजा देनी है। पाकिस्तान के नए जमाने के लोगों को समझाना होगा कि स्वाधीनता का अर्थ स्वेच्छाचारिता नहीं, स्वाधीनता का अर्थ है दायित्व में वृद्धि। सुयोग-सुविधा के उपभोग के निमित्त कुछ कर्तव्यों का भी पालन करना होगा।

दर्शन सिंह को अचानक हसीना के बड़े भाई की याद आ गई। हसीना का कोई भाई पाकिस्तान मे था। उसका क्या नाम था !

पूरे दिन और पूरी रात सोचते रहने के बाद उसे नाम याद हो आया।

तनवीर सिर्फ यही पूछती रहती है कि उसकी झाईजी कब आएगी।

दर्शन सिंह उसे सांत्वना देता है, "आएगी बिटिया, आएगी। पहले झाईजी की तलाश करने दो। झाईजी को अभी तक मालूम नहीं है कि तुम पाकिस्तान आई हो। ज्यों ही झाईजी सुनेगी कि तुम आ चुकी हो, वह दौड़ती हुई तुम्हारे पास चली आएगी।"

तनवीर पूछती है, "झाईजी के आने पर मैं क्या बोलूगी ?"

"तुम्ही बताओ कि क्या कहोगी ?"

तनवीर कहती है, "मैं झाईजी से बातें ही नही करूंगी।"

"क्यों ?"

तनवीर कहती है, "क्यों करने जाऊं ? मुझे क्या गुस्सा नहीं आता ?"

"क्यों झाईजी पर तुम्हें गुस्सा क्यों है ?"

"झाईजी मुझ से छिपकर क्यों यहां चली आईं ? झाईजी क्या मुझसे कहकर आई हैं ?"

दर्शन सिंह कहता है, "बात तो सही है। चूंकि वह तुम्हें बताए बग़ैर चली आई है, इसलिए तुम झाईजी से बातें नहीं करना।"

उसके बाद तनवीर को अपनी बग़ल में लिटाकर दर्शन सिंह उसे सुलाने की चेष्टा करता है। तनवीर की आंखों में धीरे-धीरे नींद उतर आती है। लेकिन दर्शन सिंह की आंखों से नींद कतराती रहती है। कहां वह गुरुदासपुर और कहां यह पाकिस्तान ! एक बारगी विदेश। सड़क, सराय, बस, हर जगह लोग उसे सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। सन्देह की दृष्टि से क्यों देखते हैं, कौन जाने ! वे क्या पहचान लेते हैं कि वह मुसलमान नहीं बल्कि सिख है।

बहुतेरे लोग उससे पूछते हैं, "आपका कौन-सा मुल्क़ है मियां साहब ?"

"इंडिया ?"

दर्शन सिंह कहता है, "हां साहब !"

"इंडिया में कहां ?"

दर्शन सिंह कहता है, "फरीद कोट।"

कभी वह फिरोजपुर, कभी फ़रीदकोट और कभी गुरुदासपुर बताता है।

एक आदमी ने एक दिन कहा, "गुरुदासपुर ?"

दर्शन सिंह बोला, "हां जी, क्यों ?"

आदमी बोला, "हमारे दफ़्तर में एक आदमी काम करता है, उसका भी घर गुरुदासपुर है। उसके अम्मा-अब्बा वग़ैरह को हिन्दुओं ने जलाकर मार डाला है।"

"उसका नाम क्या है ?"

आदमी बोला, "उसका नाम असगर अली है। उसके एक बहन थी जो बच गई थी।"

"उसका नाम क्या है ?"

"हसीना। अब वह पाकिस्तान चली आई है।"

दर्शन सिंह का मन खुशियों से भर गया। बोला, "वह कहां है, बता सकते हैं मियां साहब ?

आदमी बोला, "आप हसीना के बारे में पूछ रहे हैं ?"

"जी हां।"

"हसीना जैसे ही पाकिस्तान आई, उसकी शादी हो गई।"

"शादी हो गई है ? आपको अच्छी तरह मालूम है ?"

"हां मियां साहब, अच्छी तरह। असगर अली साहब ने मुझे सारा कुछ बताया है। यहां आते ही हसीना बीबी की शादी हो गई।"

"शादी कहां हुई है ?"

"गुजरानवाला में।"

दर्शन सिंह ने कहा, "जनाब, आप मेहरबानी कर असगर अली साहब से मेरी जान-पहचान करा दे सकते हैं ?"

"क्यों नहीं !"

आदमी बोला, "मैं इस कागज पर अपने दफ्तर का नाम-पता लिख देता हूं। आप इस पते पर कल सुबह दस बजे के बाद चले आएं। मैं उनसे आपकी मुलाक़ात करा दूंगा।"

बस, इसीसे आरम्भ हुआ। दूसरे दिन असगर अली साहब से मुलाक़ात हुई। दर्शन सिंह ने अपना परिचय दिया।

"आपका नाम ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "मेरा नाम है जमील अहमद।"

असगर अली ने पूछा, "आप किसकी तलाश में पाकिस्तान आए हैं ?"

"अपनी बीबी की।"

"आपकी बीबी कौन है ?"

"बेगम हसीना।"

असगर अली ने कहा, "हसीना जैसे ही यहां पहुंची उसकी शादी हो गई है जनाब !"

दर्शन सिंह ने कहा, "लेकिन हसीना तो मेरी बीबी है। मैंने उससे शादी की है।"

यह कहकर कुरते से एक तह किया हुआ कागज निकालकर दिखाया। बोला, "देखिए जनाब, यह है मेरा सर्टिफ़िकेट। दिल्ली की जामा मसजिद के द्वारा दिया गया सर्टिफ़िकेट। इसमें मेरा और मेरी बीबी का नाम लिखा हुआ है। देखिए, लिखा हुआ है—जमील अहमद, उसकी बीबी हसीना।"

असगर अली मन-ही-मन कुछ सोचने लगा।

उसके बाद बोला, "मगर हसीना की तो फिर से शादी हो गई है।"

दर्शन सिंह की आंखें छलछला आईं। बोला, "मुझसे तो हसीना की पहले ही शादी हो चुकी है। मैं तो अभी जिन्दा हूं। फिर उसकी दुबारा शादी कैसे हुई ? मैंने तो उसे अब तक तलाक़ नहीं दिया है जनाब ! ऐसे में उसकी यह शादी ग़ैर कानूनी है।"

असगर अली क्या कहे, उसकी समझ में न आया।

दर्शन सिंह ने कहा, "हसीना कहां है, बताइए न जनाब ! मैं उससे जाकर पूछूंगा।"

असगर अली साहब ने कहा, "गुजरानवाला में।"

"उसके नए खाविन्द का नाम-ठिकाना बता दीजिए।"

असगर अली ने कहा, "आप नाम-ठिकाना लेकर क्या करेंगे ?"

"मैं उससे मुलाकात करूंगा।" दर्शन सिंह ने कहा।

"और वही अगर आपसे मुलाक़ात न करे ? अगर वे लोग आपको दुतकार कर भगा दें ?"

"भगा देंगे तो मैं अदालत में जाकर मामला दर्ज कराऊंगा।"

"किसके खिलाफ़ मामला दर्ज कराएंगे ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "हसीना के उस शौहर के खिलाफ़। मैं कहूंगा कि यह शादी ग़ैर कानूनी है। उसकी शादी जबरन कराई गई है। दरअसल उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ उसकी शादी कराई गई है। पाकिस्तान बना है तो इसका मायने यह नहीं कि वहां कानून नहीं रहेगा, वहां इंसाफ़ न होगा। सिर के ऊपर अल्लाह मियां नहीं हैं क्या ?"

असगर अली इसका क्या जवाब दे, समझ नहीं आया।

दर्शन सिंह हसीना की गुजरानवाला की ससुराल का पता लेकर सराय लौटकर चला आया। तनवीर को वह सराय में ही रख आया था। दर्शन सिंह ज्यों ही वापस आया, सराय का मालिक बोला, "आप अब तक कहां थे मियां साहब ? आपकी लड़की ने रोते-रोते सबको बेहाल कर दिया। अभी उसे कुछ खाने को दिया तो खाकर सो गई है।"

दर्शन सिंह की ज़बान से एक भी शब्द नहीं निकला। उसका चेहरा देखकर सराय का मालिक हैरत में आ गया। पूछा, "आपको क्या हुआ है मियां साहब ? आपकी तबीयत नाशाद है क्या ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "नहीं मियां साहब, बात ऐसी नहीं है। तबीयत ठीक है। आप एक काम कर दे सकते हैं ?"

"क्या ?"

"एक अच्छा-सा वकील ठीक कर दे सकते हैं ?"

"वकील ?"

"हां।"

"क्यों नहीं ? ज़रूर ठीक कर दूंगा। मगर उसके पहले आप क्या कुछ खाएंगे नहीं ? सवेरे तो आपने नाश्ता भी नहीं किया था। आप सुबह-सुबह निकल गए थे। पहले आप खा-पीकर ज़रा आराम कर लें।"

दर्शन सिंह के मस्तिक में तब तरह-तरह की चिन्ताएं जग रही थीं।

"गुजरानवाला यहां से कितनी दूर है मियां साहब !"

"गुजरानवाला ? क्यों ? आप गुजरानवाला जाएंगे ? यहां से शेखपुरा जाना होगा और वहां से गुजरानवाला···?"

मिस्टर एडमंड ग्रिफिथ बोले, "देश का बंटवारा 1947 ई० के 15 अगस्त में हो चुका था और यह वारदात है 1957 के जनवरी महीने की। इतने दिनों के दरमियान इतिहास के मानचित्र के रंग मे कई बार परिवर्तन आ चुका है। कश्मीर के कारण भारत और पाकिस्तान मे लड़ाई हुई है। जिस आदमी ने गांधी जी हत्या की थी, उसे भी फांसी पर चढ़ा दिया गया है। रूस की राजधानी मास्को मे तब विजय लक्ष्मी पंडित राजदूत थी। उन्होंने अपने कार्यालय में एक शोक-पुस्तिका रख दी।

1948 ई० की 30 जनवरी। अचानक सारी दुनिया एक समाचार सुनकर चिहुंक उठी। किसी ने महात्मा गांधी को गोली मारकर उनकी हत्या कर दी है। आकाशवाणी से जवाहर लाल नेहरू की आवाज़ आई—The light has gone out of our lives and there is darkness every where. Our beloved leader, Bapu, as we called him, the father of the nation, is no more. The light has gone out, I said, and yet I was wrong. For the light shone in this Country was no ordinary light...that light will still be seen . the world will see it and it will give solace to innumerable hearts. For that light represented something more than the immediate present. It represented the living the eternal truths, *reminding us of the right drawing us from error, taking the ancient country of freedom.*[1]

फ्रांस के प्रधानमंत्री ने पेरिस में लिखा—All those who believe in the brotherhood of men will mowen Gandhi's death···[2]

---

1. हमारे जीवन का प्रकाश बुझ गया और चारों तरफ अंधेरा रेंग रहा है। हमारे प्रिय नेता, जिन्हें हम बापू कहते थे, जो हमारे राष्ट्रपिता थे, अब दुनिया में नहीं रहे। लेकिन मेरा यह कहना गलत है कि प्रकाश बुझ गया। क्योंकि यह प्रकाश जो हमारे देश में देदीप्यमान था, वह कोई साधारण प्रकाश नहीं था···वह प्रकाश अब भी दिखाई पड़ेगा···दुनिया इसका अवलोकन करेगी और वह असंख्य हृदयों को दिलासा देगा। क्योंकि वह प्रकाश तात्कालिक वर्तमान से भी आगे के कुछ का प्रतिनिधित्व करता था। वह जीवन्त शाश्वत सच्चाइयों का प्रतिनिधित्व करता था—उन जीवन्त शाश्वत सच्चाइयों का जो हमें सही का स्मरण दिलाती हैं और गलतियों से अलग रखती हैं, तथा जो इस प्राचीन देश को स्वतंत्रता के पड़ाव तक ले आई है।

2. आदमी के भाईचारे में जिन्हें विश्वास है वे निश्चय ही गांधीजी की मृत्यु पर शोक मनाएंगे।

लाहौर में मोहम्मद अली जिन्ना ने कहा—There can be no Controversy in the face ot death. He was one of the greatest men produced by the Hindu Community.[1]

रूस की राजधानी मास्को शहर के भारतीय दूतावास में भारतीय राजदूत श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित सुवह से शाम तक शोक-पुस्तिका खोलकर रखे रहीं, लेकिन स्तालिन के मंत्रीमंडल के किसी सदस्य ने उस शोक-पुस्तिका पर हस्ताक्षर नहीं किये।

व्यतिक्रम और इतिहास का निर्माण किया केवल कलकत्ता के अंग्रेजी भाषा के एक दैनिक समाचार-पत्र हिंदुस्तान स्टैण्डर्ड ने। संपादकीय पृष्ठ बिलकुल खाली था, वहां कुछ भी लिखा हुआ नहीं था। सिर्फ़ बीच में चारों तरफ़ मोटा बोर्डर देकर लिखा हुआ था—Gandhiji has been killed by his own people for whose redemption he lived. The second crucification in the history of the world has been enacted on a Friday—the same day jesus was done to death one thousand nine hundred and fifteen years ago. Father forgive me.[2]

गांधी जी की हत्या क्यों की गई ?

यह बात इतिहास में लिखी हुई है। जो इसे जानना चाहता है, वह इतिहास की पुस्तक पढ़े। हम दर्शन सिंह के जीवन के संदर्भ में लिख रहे हैं। दर्शन सिंह का क्या हुआ, यहां यही वता रहा हूं।

कई दिनों से दर्शन सिंह गुजरानवाला की सड़कों की धूल छान रहा था। जिस किसी से मुलाक़ात होती, उसीसे पूछता, "अजीज़ुर रहमान का घर कहां है, वता सकते हो भाई ? अजीज़ुर रहमान···?"

अजीज़ुर रहमान कौन है, यह कौन वता सकता है ? दुनिया में हज़ारों अजीज़ुर रहमान हैं। वह क्या करता है ? उसके किस काम के कारण हम उसे पहचानेंगे ? उसके किस काम के कारण उसे हम याद रखेंगे ? उसने क्या कोई स्मरणीय कार्य किया है ? कोई त्याग या कोई परोपकार ? या फिर जिन्ना साहव की तरह कोई नया देश वनाया है ?

---

1. मृत्यु के सामने कोई वाद-विवाद नहीं हो सकता। हिंदू जाति ने जितने महान व्यक्ति पैदा किए हैं, वह उनमें से एक था।

2. गांधी जी की हत्या उनके अपने ही आदमी के द्वारा, जिनके उद्धार के लिए वे जीवन जी रहे थे, कर दी गई। विश्व के इतिहास का यह दूसरा क्रूसारोपण एक शुक्रवार को देखने को मिला—ठीक उसी दिन जिस दिन एक हज़ार नौ सौ पंद्रह वर्ष पहले ईसामसीह की हत्या कर दी गई थी। पिता, हमें क्षमा करो !

दिन-भर दर्शन सिंह सड़कों की धूल छानता रहता। भूख लगने पर किसी सराय में बैठ खाना खा लेता है। उसके बाद शाम होने पर अपनी तनवीर के पास वापस चला आता है।

सराय का मालिक दिन-भर उसकी देख-रेख करता है। खाना मांगने पर खाना देता है, रोने लगती है तो उसे खिलौने देकर बहलाता है। रोती है तो कहता है, "मत रोओ मुन्नी। तुम्हारे अब्बा अभी आएंगे, तुम्हारे लिए खिलौने खरीद कर ले आएंगे।"

सचमुच दर्शन सिंह दिन-भर के बाद जब सराय लौटकर आता तो वह अपनी लड़की के लिए खिलौना खरीदकर ले आता, चाकलेट आदि सामान भी खरीदकर ले आता।

लेकिन कब तक उसे बहलाकर रखा जा सकता है! उसके बाद फिर वही एकदम सवाल करती है, "झाईजी कहां है दार जी? झाईजी कब आएंगी। मेरी झाईजी?'

दर्शन सिंह अपनी लड़की को पहले की तरह ही सांत्वना देता है, "अब तुम्हारी झाईजी आएगी। तुम्हारी झाईजी अवश्य ही आएगी।"

लेकिन उसकी झाईजी के आने का कोई लक्षण दिखाई नहीं पड़ता है।

दर्शन सिंह हर दरवाजे की कुंडी खटखटाता है। पूछता है, "यह क्या अजीजुर रहमान का घर है?"

सभी कहते हैं, "नहीं-नहीं, यह अजीजुर रहमान का घर नहीं है।" बहुत सारे घर के लोगों से इसी तरह का व्यवहार और उत्तर मिलता है। दर्शन सिंह इसमें ऊब महसूस नहीं करता। लेकिन राहगीर इससे ऊब महसूस करते हैं। जहां कहीं दर्शन सिंह कुछ लोगों का मजमा देखता है, वहीं पहुंच जाता है। पूछता है, "आप लोग अजीजुर रहमान साहब को पहचानते हैं मियां साहब?"

वे लोग सवाल के बदले सवाल करते हैं, "कौन-से अजीजुर रहमान साहब? यहां तकरीबन एक हजार अजीजुर रहमान हैं। वे क्या इसी मुहल्ले में रहते हैं?"

दर्शन सिंह कहता है, "किस मुहल्ले में रहते हैं, यह मुझे मालूम नहीं है मियां साहब! हां, इतना जरूर मालूम है कि गुजरानवाला में ही रहते हैं।"

"अरे, गुजरानवाला क्या छोटा-मोटा है! वे क्या करते हैं, यही बताइए।"

दर्शन सिंह कहता है, "उनकी नई बीवी का नाम है हसीना बेगम। हसीना बेगम'''।"

"कौन-सी हसीना बेगम?"

दर्शन सिंह कहता है, "वह मेरी बीवी है मियां साहब। हसीना मेरी बीवी है। अजीजुर रहमान ने उससे शादी की है। मैं उसी अजीजुर रहमान साहब की तलाश कर रहा हूं।"

"अपनी बीवी से आपका क्या तलाक़ हो चुका है ?"

दर्शन सिंह कहता है, "नहीं मियां साहब, मैंने अपनी बीवी को तलाक नहीं दिया है। मेरी बीवी इंडिया से पाकिस्तान चली आई थी। कहा था, वह फिर मेरे पास लौटकर चली आएगी। मगर यहां के अजीज़ुर रहमान साहब ने ग़ैर-क़ानूनी तरीके से उससे शादी कर ली है। मैं अपनी उसी बीवी की तलाश में पाकिस्तान आया हूं। बताइए, अब मैं क्या करूं मियां साहब ? क्या करूं ?"

उन लोगों ने पूछा, "आप किस तरह पाकिस्तान आए ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "जैसे और-और लोग आते हैं, उसी तरह आया हूं।"

"पासपोर्ट और वीसा लेकर आए हैं ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "पासपोर्ट और वीसा कहां मिलता है ? कौन मुझे पासपोर्ट देगा ? कौन मुझे वीसा देगा ?"

दो-तीन दिन के दरमियान ही गुजरानवाला में यह बात फैल गई कि जमील अहमद नामक जो आदमी यहां अजीज़ुर रहमान की तलाश में भटक रहा है वह दरअसल एक सिख है और अपना नाम बदलकर यहां किसी मतलब से आया है।

यह खबर अजीज़ुर रहमान के कान में भी पहुंची।

अजीज़ुर रहमान ने अब देर नहीं की। सीधे पुलिस चौकी जाकर खबर पहुंचा आया। उसके दूसरे ही दिन पुलिस ने उसे पकड़कर हवालात में ठूंस दिया।

जमील अहमद पुलिस का पैर पकड़कर रोने लगा। कहा, "मुझे छोड़ दीजिए जनाब। मैंने कोई कुसूर नहीं किया है।"

पुलिस ने पूछा, "तू पाकिस्तान क्या करने आया है ?"

जमील अहमद ने कहा, "मैं अपनी बीवी की तलाश में आया हूं जनाब। यहां के एक आदमी ने ग़ैर-क़ानूनी तौर से मेरी बीवी से शादी कर ली है।"

"वह कौन है ?"

जमील अहमद ने कहा, "सुनने में आया है उसका नाम अजीज़ुर रहमान है। मेरी बीवी से उसने शादी क्यों की जनाब ? मैंने कौन-सा कुसूर किया है ? हमें एक लड़की भी है। मेरी लड़की अपनी अम्मा के पास जाने को बेहाल है। यकीन न हो तो मेरे काग़ज़-पत्तर की छान-बीन कर लें।"

"तेरी लड़की कहां है ? इंडिया में ?"

"नहीं जनाब, वह लड़की मेरे साथ ही पाकिस्तान आई है। वह अभी लाहौर की एक सराय में है। आप वहां जाकर खोज-बीन कर सकते हैं।"

पुलिस उतना कुछ सुनना नहीं चाहती। पुलिसवाले जो करना चाहते हैं, वही करते हैं। चाहे तेरी लड़की यहां हो या बीवी, क़ानून तोड़कर तू विदेश में घुस आया है तो तुझे पकड़ने का हमें पूरा हक़ है।

लिहाजा जमील अहमद को वह रात जेल में ही बितानी पड़ी। जग कर ही

बितानी पड़ी। नींद क्या आसानी से आती है? हर लमहे हसीना की याद आती रही, तनवीर की याद आती रही। सराय में तनवीर क्या खा रही है, कौन जाने! सराय का मालिक भला आदमी है। वह अवश्य ही उसकी देख-रेख करेगा। साथ ही हसीना की भी याद आती है। याद है, दिल्ली के लंगर में बैठकर उसने कहा था : "लौटकर मैं अपने बगीचे में अमरूद का एक पेड़ लगाऊंगी।"

हसीना की कितनी साध थी! वह अमरूद का पेड़ लगाएगी, अनार का पेड़ लगाएगी। वह सब बात वह बिलकुल भूल गई?

सुबह होते ही किसी ने आकर उसे पुकारा। वह जगा हुआ ही था। लिहाजा उसे पुकारने की कोई जरूरत न थी।

जमील अहमद बोला, "साहब, कब मुझे हाकिम के पास ले चलिएगा?"

पुलिस के आदमी ने कहा, "अरे, पहले सुबह तो होने दो। अभी तो रात है।"

जमील अवाक् हो गया। उसने सोचा था, कमरे में अंधेरा भले ही हो लेकिन बाहर प्रकाश फैल चुका होगा। लेकिन सहसा रात इतनी बड़ी क्यों हो गई? रात भी क्या अपनी मर्जी से छोटी-बड़ी होती है?

असल में 15 अगस्त अशुभ दिन है, इस तरह की राय जब सभी ज्योतिषियों ने दी तो माउण्ट बेटन हतप्रभ हो गए थे। उनकी सरकार में तो हर तरह का आदमी है। उनमें से किसी को विज्ञान, किसी को कला और किसी को युद्ध-विद्या की जानकारी है। और भी बहुत तरह के विशेषज्ञों को लेकर उनकी सरकार का गठन हुआ था।

लेकिन ज्योतिष-शास्त्र?

उसी दिन से उनके ऑफिसर एलेन कैंमबेल जॉनसेन को एक और जिम्मेदारी सौंपी गई। वह था ज्योतिष-शास्त्र। तय हुआ कि 15 अगस्त नहीं, बल्कि 14 अगस्त की ठीक आधी रात में भारत आजाद होगा। इससे शायद ग्रह की कुदृष्टि उतनी खतरनाक नहीं होगी, जितनी कुदृष्टि का भय पंडितों को है।

स्वतंत्र भारत के झंडे के बारे में भी सोचना है। यूनियन जैक तो 14 अगस्त की आधी रात में ही उतार देना है। लेकिन उसकी जगह कौन-सी पताका लहराएगी? उसकी शक्ल कैसी होगी?

तीस बरसों से कांग्रेस की जिस पताका के बीच गांधी जी के शिष्य सिर झुकाते चले आ रहे हैं, वही पताका क्या स्वतंत्र भारत की पताका होगी? नहीं ऐसा नहीं हो सकता। कांग्रेस की पताका तिरंगा थी। उसके बीच चरखे का चित्र था। सभी ने कहा, चरखे का चित्र रहना हास्यास्पद है, वह चित्र नहीं रह सकता। वह तो बूढ़े गांधी जी का एक खिलौना है।

विचार-विमर्श के बाद उसे रद्द कर दिया गया। उसकी जगह हिंदू साम्राज्य के प्रतिष्ठाता सम्राट अशोक के धर्मचक्र का प्रतीक एक जोड़ा सिंह और सम्राट

अशोक का धर्मचक्र रहेगा।

एक अनुगत शिष्य ने गांधी जी को यह समाचार सुनाया। कहा, "जानते हैं बापू, आपके द्वारा निर्मित चरखे के चित्र को हटाकर उसकी जगह दूसरा चित्र दिया गया है।"

"कौन-सा चित्र ?"

बात सुनकर गांधी जी कुछ क्षणों तक खामोशी में डूब गए। उसके बाद कहा, "ठीक है, मैं अपनी ज़िंदगी में कभी उस पताका के सामने अपना सिर नहीं झुकाऊंगा। किसी भी हालत में नहीं।"

जो लोग साधारण स्तर के हैं वे बड़े-बड़े विषयों के संबंध में माथापच्ची नहीं करते। वे चाहते हैं, देश चाहे स्वाधीन रहे या पराधीन, इससे उनका कुछ बनता-बिगड़ता नहीं, उन्हें तो बस इतना ही चाहिए कि उनकी सुख-सुविधा ज्यों की त्यों बनी रहे। देश का राजा चाहे अंग्रेज हो या भारतीय, इससे उनका क्या आता-जाता है ?

मसलन, दर्शन सिंह या जमील अहमद को ही लें। दर्शन सिंह को आज़ादी की चाह न थी और न ही उसकी बीवी हसीना को। उसकी लड़की तनवीर ने क्या उसकी चाह की थी ? तनवीर की तब वह सब समझने की उम्र नहीं थी।

फिर ?

फिर आज़ादी किनके लिए आई ? किसकी आज़ादी के लिए करोड़ों आदमियों ने प्राण निछावर कर दिए ? देश आज़ाद होने से किनकी सुख-सुविधा में वृद्धि हुई, किन्हें सुअवसर प्राप्त हुआ ? कौन, कौन हैं वे लोग ?

कचहरी के अन्दर हाकिम के रूबरू खड़े होकर जमील अहमद फूट-फूटकर रो रहा था।

हाकिम ने पूछा, "तुम रो क्यों रहे हो ?"

जमील अहमद ने कहा, "हुज़ूर, मुल्क आज़ाद होने से मेरी कौन-सी भलाई हुई ? अंग्रेजों के शासन-काल में ही मैं अच्छा था।"

"पहले तुम क्या करते थे ?"

जमील अहमद बोला, "मैं सेना में जवान था। बर्मा जाकर मैंने जापानियों के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी है।"

"उसके बाद ?"

जमील बोला, "माउण्ट बेटन साहब हमारे कर्नल थे।"

"उस वक़्त तुम्हारा नाम क्या था ?"

जमील अहमद ने कहा, "सिपाही दर्शन सिंह।"

"अब जमील अहमद नाम कैसे हो गया ?"

"मैंने हुज़ूर मुसलमान लड़की से शादी की है।" दर्शन सिंह ने कहा, "अपनी

मुसलमान बीवी की वजह से मैं मुसलमान हो गया हूं। हमें एक लड़की भी है।"

"तुम यहां कैसे आए?"

जमील अहमद ने कहा, "हुजूर, मेरी बीवी पाकिस्तान चली आई है, इसलिए बीवी से मुलाकात करने के ख्याल से मैंने पासपोर्ट-वीसा पाने की कोशिश की। लेकिन किसी ने मेरी बात नहीं सुनी, मेरी अर्जी का कोई जवाब नहीं दिया। लिहाजा मैं कानून भंग कर पाकिस्तान चला आया। मैंने कुसूर किया है हुजूर ! मैं इसके लिए माफी मांगता हूं। मेरी बीवी मुझे वापस दिला दें, मैं उसे लेकर हिन्दुस्तान लौट जाऊंगा।"

"किसने बताया कि तुम्हारी बीवी यहां है ?"

जमील ने कहा, "असगर अली साहब ने। वे मेरी बीवी के बड़े भाई हैं। उन्होंने बताया, मेरी बीवी जैसे ही यहां आई, गुजरानवाला के अजीजुर रहमान साहब से उसकी शादी हो गई। इसी वजह से मैं अजीजुर रहमान साहब की खोज में गुजरानवाला आया हूं।"

"हसीना बीवी से तुम्हारी शादी हुई है, इसका कोई सर्टिफिकेट तुम्हारे पास है?"

जमील अहमद तमाम कागज-पत्तर अपने साथ ही ले आया था। उसने अपने झोले से यह सब निकाल हाकिम को दिखाया।

हाकिम ने कागज-पत्तर वगैरह देखकर कहा, "अच्छा, ठीक है। यह सब पढ़ने के बाद ही मैं इंसाफ करूंगा।"

जमील अहमद ने कहा, "हुजूर, मेहरबानी कर मुझे जमानत पर रिहा करने का हुक्म दें। मेरी छोटी लड़की लाहौर की सराय में अकेली पड़ी हुई है। मुझे उसके पास जाने की इजाजत दें।"

पुलिस वाले ने आपत्ति की। कहा, "हुजूर, आसामी दरअसल एक दागी आदमी है। पहले यह सिख धर्मावलंबी था। अब मुसलमान महिला पर अपना हक जमाने के लिए मुसलमान हो गया है। उसे जमानत पर रिहा करने से वह और कितना अन्याय करेगा, इसका कोई ठीक नहीं।"

हाकिम का मतलब क्या है, किसी की समझ में नहीं आया। या फिर हो सकता है कि हाकिम भी एक प्रेमी रहे हों। प्रेम को वे मर्यादा देना जानते हैं। इस लिए पुलिस की आपत्ति को नकार कर जमील अहमद को जमानत पर रिहा कर दिया और बताया कि अमुक तारीख को उसकी सुनवाई होगी।

मिस्टर एडमण्ड ग्रिफ़िथ अब रुके। इसके बाद बोले, "इण्डिया आकर मैंने जित ..

परिभ्रमण किया है, मुझे उतना ही आश्चर्य हुआ है। यह कितना विचित्र और आश्चर्यजनक देश है ! यहां जात-पांत का इतना भेद है, फिर भी लोगों में कितनी एकता है ! यहां जितनी विभिन्नताएं हैं, उतनी ही है समता, मैत्री और उदारता। यहां प्रकृति जितनी कठोर है उतनी ही नम्र। मैं दुनिया के तक़रीबन सभी देशों का चक्कर काट चुका हूं, लेकिन किसी भी देश ने मुझे इस तरह आकर्षित नहीं किया है। यहां गांधी जी जैसा आदमी पैदा होता है, साथ ही उसकी हत्या करने वाला आदमी भी जन्म लेता है।

उसके बाद मेरी ओर देखते हुए पूछा, "यहां के लेखक किस विषय पर लिखते हैं ? उनका आदर्श क्या है ?"

"यहां के अधिकांश लोगों का आदर्श अमरीका है।" मैंने कहा।

मिस्टर ग्रिफ़िथ मेरी बात सुनकर चकित हो गए। बोले, "यह क्या ? क्यों ?"

मैंने कहा, "अमरीका यहां के अधिकांश लोगों का आदर्श इसलिए है कि वह धनी-मानी व्यक्तियों का देश है। वहां के लोगों के पास अगाध सम्पत्ति है। यहां के शिक्षितों में से ज्यादातर आदमी रुपया-पैसा चाहते हैं। यहां के राजा, वजीर और मन्त्री अमरीका जाने को पागल हो गए हैं। यहां के मन्त्रियों और राजे-महराजों में से जिनके पास ढेर सारा रुपया-पैसा है, उन्हें मामूली-सी भी बीमारी होती है तो वे इलाज कराने अमरीका दौड़ पड़ते हैं।"

"क्यों ?"

मैंने कहा, "आंशिक तौर पर अपनी प्रेस्टिज के लिए। इलाज कराने के लिए अमरीका जाने पर समाज में उनका सम्मान बढ़ता है। और, आंशिक तौर पर यहां के डाक्टरों के कारण। यहां के डाक्टर अब पैसे के बड़े ही लोभी हो गए हैं।"

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने एक लम्बी सांस ली और बोले, "हम अमरीकी क्रमशः इण्डिया के ऐतिह्य के भक्त होते जा रहे हैं। लार्ड चैतन्य के भक्त होकर हमने माथा मुंड़वा लिया है और भारतीयों की तरह रास्तों में कीर्त्तन करते हैं। 1893 ई० के सितम्बर माह में जब शिकागो के कॉलम्बस हॉल में विवेकानन्द ने भाषण दिया था, उसी समय से हमारी दृष्टि आप लोगों के देश की ओर खिंची है। और उसके बाद से महेश योगी और रजनीश तक कितने ही भारतीयों को अब तक गुरु मानते चले आ रहे हैं, उसका कोई ठीक नहीं। कौन ठग है और कौन सचमुच ही धार्मिक, उसका हिसाब-किताब रखने तक की हमें फुर्सत नहीं मिली है। ऐसा क्यों हुआ है ? इसलिए कि अपने देश के जड़ विज्ञान की बदौलत हम रुपये-पैसे की दृष्टि से बड़े तो हो गये हैं जरूर, लेकिन मन ? मन की दृष्टि से हम अब भी आपकी ओर ही टकटकी लगाकर देख रहे हैं।"

मुझे यह सब बात अच्छी नहीं लग रही थी। पूछा, "उसके बाद दर्शन सिंह

का क्या हुआ, यही बताइए। जमानत पर रिहा होकर दर्शन सिंह ने क्या किया ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने कहा, "यह बात बाद में बताऊंगा। पहले अपने देश के लेखकों के बारे में बताता हूं। वे इस तरह की किताबें लिख रहे हैं जिनकी बदौलत उन्हें करोड़ों रुपये की आमदनी हो रही है। लेकिन उन्हें क्या वह सम्मान प्राप्त हो रहा है जो आज भी डिकेंस, लियो तोलस्तॉय, रोम्या रोला और हमारे देश के वाल्ट ह्विटमैन, इमर्सन, थोरो या आपटन सिनक्लेयर को प्राप्त हो रहा है ?"

मैंने पुनः तकाज़ा किया, "बताइए कि दर्शन सिंह का क्या हुआ ?"

मिस्टर ग्रिफ़िथ कहने लगे, "जमानत मिलते ही दर्शन सिंह अपनी लड़की के पास लाहौर चला गया।"

लड़की भी कई दिनों से अपने पिता के लिए बेचैन थी। बाप के पहुंचते ही लड़की बोली, "दार जी, तुम कहां थे ? तुम्हें न देख पाने के कारण मैं बहुत रोती थी।"

सराय के मालिक ने कहा, "आपकी लड़की बहुत ही रोती थी मियां साहब ! आप कहां गये हुए थे ?"

जमील अहमद ने कहा, "गुजरानवाला के पुलिस के लोगों ने मुझे जेल में रोक रखा था।"

"क्यों ?"

"यह कहकर कि मैं भारत से पाकिस्तान अपनी बीवी को भगाकर ले जाने के इरादे से आया हूं। ग़ैर-क़ानूनी ढंग से पाकिस्तान आया हूं।" जमील अहमद ने कहा।

"उसके बाद क्या हुआ ?"

जमील अहमद ने कहा, "जमानत पर रिहा होने के बाद मैं अपनी लड़की को देखने चला आया। अगले मंगलवार को मुझे दुबारा कोर्ट में हाज़िर होना होगा।"

तनवीर ने उन बातों पर ध्यान नहीं दिया। बोली, "झाई जी क्यों नहीं आयी दारजी ? झाई जी को तुम क्यों नहीं ले आये ?"

दर्शन सिंह बोला, "अब तुम्हारी झाई जी आने वाली है। अबकी मैं झाई जी को तुम्हारे पास ले जाऊंगा।"

तनवीर ने पूछा, "झाई जी ने मेरे बारे में तुमसे पूछा था ?"

"हां," दर्शन सिंह बोला, "तुम्हारे बारे में मुझसे बहुत बार पूछा है।"

अब तनवीर के चेहरे पर मुसकराहट तिर आयी। बोली, "क्या-क्या बोली ?"

"यही कि मेरी तनवीर कहां है ? कहां है मेरी तनवीर ? तुम्हारी झाई जी बार-बार तुम्हारे बारे में ही पूछती रही।"

"तुमने क्या कहा ?"

दर्शन सिंह बोला, "मैंने बताया कि तनवीर हमेशा तुम्हारे बारे में ही बातें करती है। हर वक़्त तुम्हारे पास ही आना चाहती है।"

"यह सुनकर झाई जी क्या बोली ?"

"झाई जी ने कहा : तनवीर को और कुछ दिनों तक इन्तज़ार करने को कहो। मैं कुछ दिन के बाद तनवीर के पास जाऊंगी।"

"झाई जी ने और क्या कहा ?" तनवीर ने पूछा।

"झाई जी ने और कहा कि तनवीर को देखने की मुझे बड़ी ही इच्छा हो रही है। फिर कहा : तनवीर से कहो कि शरारत न करे, रोए-धोए नहीं।"

तनवीर को अब सन्देह हुआ। बोली, "मैं शरारत कहां करती हूं ? मैं कब रोती-धोती हूं ? तुमने झाई जी से क्यों नहीं कहा कि तनवीर कोई शरारत नहीं करती और न ही रोती-धोती है ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "मैंने यह बात कही है। तुम क्या सोचती हो कि मैंने यह सब तुम्हारी झाई जी से नहीं कहा है ?"

"तुमने कहा है ? सच्ची, कहा है ?"

"हां-हां, मैंने बार-बार कहा है कि तनवीर कतई शरारत नहीं करती, कि तनवीर कभी नहीं रोती। मैं जो कुछ खाने को देता हूं, वही खाती है।"

दर्शन सिंह की बात से तनवीर खुश हो गयी। वह चुपचाप अपने बाप के पास लेट गयी और फिर उसकी आंखों में नींद उतर आयी। और तभी दर्शन सिंह हसीना की याद में खो गया। यहां आने के पहले हसीना ने उससे कितनी बातें की थीं और यहां आते ही उसने शादी कर ली। और कुछ दिनों तक इन्तजार नहीं कर सकी! फिर क्या दुनिया में प्रेम का कोई मूल्य नहीं, मुहब्बत की कोई क़ीमत नहीं ?

तनवीर उस समय नींद की बांहों में खोई थी।

दर्शन सिंह आहिस्ता-से बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। उसके बाद सराय के मालिक के पास जाकर कहा, "मियां साहब, ज़रा मेरी लड़की पर निगाह रखिएगा। मैं अपने वकील से मिलकर आता हूं।"

दर्शन सिंह जब अपने खेत-खलिहान के काम में व्यस्त था, उस समय उसके लिए कोई समस्या न थी। उसके पहले जब वह लड़ाई में सिपाही का काम करता था उस समय भी उसे किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता था। उन कामों से चूंकि उसकी आत्मा जुड़ी हुई नहीं थी, इसीलिए हो सकता है उसके सामने कोई समस्या न थी। उस काम में केवल पाने का प्रश्न था। सिपाही की नौकरी करने पर तनख्वाह मिलती थी। मालिक उसका पावना चुका देता तो सम्बन्ध ख़त्म हो जाता। खेत-खलिहान के काम के साथ भी यही बात थी। वह जी-जान से मेहनत करता था ताकि फसल की अच्छी पैदावार हो सके। फसल घर पहुंचते ही

उसे सुकून का अहसास होता।

लेकिन देना ?

पाना तभी सार्थक होता है जब उस पाने के साथ देने का सामंजस्य देना रुपये-पैसे का देना नहीं है, यह देना शरीर की मेहनत नहीं है, यह तो देना है। जो स्वयं को दे सका है उससे बढ़कर सुखी कौन है ? हसीना के दूसरे दिन से ही दर्शन सिंह केवल स्वयं को उसे देता आया है। उससे सि कहा है : "तुम मुझे लो, तुम मुझे स्वीकारो। तुम मुझे स्वीकार कर धन्य करो कृतार्थ करो। उसी दिन से हसीना ने दर्शन सिंह को स्वीकार कर उसे धन्य था, कृतार्थ किया था। कवि की भाषा में कहा जाए तो—देना चाहता, लेना चा कोई। दर्शन सिंह के लिए यही सबसे बड़ी समस्या है। वह हसीना को पाना चाहता, बल्कि देना चाहता है। मुलाकात होने पर वह हसीना से इतना ही अनुरो करेगा—तुम मुझे लो हसीना, मेहरबानी कर एक बार मुझे लो। मुझे लेकर तु मुझे कृतार्थ करो। तुम मुझे स्वीकार लोगी तो मेरा जीवन अधूरा नहीं रहेगा— वह पूर्णता प्राप्त कर लेगा।

मिस्टर प्रिफ़िथ बोले, "यही है भारत। हमारे देश के पुरुष प्रेमिका को पाना चाहते हैं और आपके देश के पुरुष प्रेमिका को देना चाहते हैं। हमारे देश के लोगों के लिए पाना ही महत्त्वपूर्ण है और आप लोगों के देश के लोगों के लिए देना ही महत्त्वपूर्ण। हमारे देश के लोगों को कुछ प्राप्त होता है तो वे दाता को धन्यवाद देते हैं। कहते हैं : थैंक्यू। आप लोगों के देश के लोगों को कुछ प्राप्त होता है तो वे दाता को धन्यवाद नहीं देते। क्योंकि वे देकर ही कृतार्थता का अनुभव करते हैं। इस कहानी में मैं भारत के लोगों के इस पहलू को ही अधिक से अधिक उजागर करूंगा।"

"उसके बाद ?" मैंने पूछा।

उसके बाद अगले मंगलवार को सुनवाई का दिन आते ही जमील अहमद दुबारा गुजरानवाला की कचहरी के कटघरे में आकर खड़ा हुआ।

हाकिम ने जमील अहमद का कागज़-पत्तर लौटा दिया।

जमील अहमद के वकील ने उसकी अर्जी पेश की। अर्जी में लिखा था कि उसकी बीवी का नाम हसीना है। हसीना उसकी ब्याहता औरत है। इसलिए हसीना को उसके पति को लौटा दिया जाए।

हाकिम ने अजीजुर रहमान के नाम सम्मन जारी किया।

उस दिन इतना ही काम हुआ। उसके बाद जमील अहमद कठघरे से उतर हर चला आया।

बाहर तब बहुत सारे लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। भीड़ का कोई भी आदमी जमील अहमद से खुश नहीं है। हरेक ने ऊंगली से उसकी ओर इशारा किया। लोग-बाग कहने लगे, "यह देखो, वह आदमी काफिर है। सिख धर्म के मतानुसार मुसलमान लड़की से शादी की थी। मुसलमान औरत की आबरू लूटने के लिए अब मुसलमान बन गया है। वह काफिर है। काफिर को मुल्क से निकाल दो।"

शहर में शोरगुल मच गया। सड़क के तमाम लोग उसके पीछे-पीछे चलने लगे। दर्शन सिंह जहां कहीं भी जाता, लोग-बाग उसके पीछे-पीछे चलने लगते।

कहते, "ऐ काफिर दर्शन सिंह, ऐ काफिर···।"

जमील अहमद को गुस्सा आता है किन्तु वह तत्काल स्वयं को संयत कर लेता है।

कहीं से एक रोड़ा आकर उसके पास गिर पड़ा।

जमील अहमद क्रोध में आकर चिल्ला उठा, "कौन है ?"

उसे सब लोग मानो पागल समझ रहे हैं। उन्हें पाकिस्तान मिल गया तो लगता है जैसे आकाश का चांद आ गया हो उनके हाथों में। कोई आदमी को आदमी नहीं समझते हैं।

साथ में जमील अहमद का वकील था। उसने कहा, "तुम इतने गुस्से में क्यों आ जाते हो जमील ? तुम जितने ही चिढ़ोगे, वे लोग तुम्हें उतना ही चिढ़ाएंगे।"

जमील बोला, "जनाब, मैंने कौन-सा गुनाह किया है कि वे लोग मुझ पर ढेला चलाते हैं ?"

वकील बोला, "ढेला चलाने दो। ढेला आकर तुम्हारी देह में तो नहीं लगा है।"

"लेकिन ढेला आकर लग जाता तो फिर ? तो क्या होता ?"

वकील साहब ने कहा, "ढेला चूंकि तुम्हारे बदन पर नहीं गिरा है इसलिए कुछ मत बोलो। तुम जितना चिढ़ोगे वे लोग भी उतने ही चिढ़ जाएंगे। चलो, चुपचाप मेरे साथ चलो।"

इसके बाद किसी ने कुछ नहीं कहा। दर्शन सिंह पुनः सराय पहुंचा और उसने तनवीर को गोद में उठ लिया।

उस दिन भी तनवीर ने पूछा, "झाई जी तुम्हारे साथ कहां आईं ?"

"आएगी," दर्शन सिंह ने कहा, "अबके ज़रूर आएगी, देख लेना।"

तनवीर ने कहा, "झाई जी आज क्यों नहीं आयीं ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "झाई जी की तबीयत खराब है। झाई जी को बुखार आ गया है। बुखार उतरते ही चली आएगी। बीमार रहे तो कैसे आएगी भला !"

छोटे लड़के-लड़कियों को भुलाना बड़ा ही आसान है। हर रोज कचहरि
लौटने के दौरान दर्शन सिंह तनवीर के लिए कितनी ही तरह के खिलौने ले आ
है। कितनी ही तरह की खाने-पीने की चीजें खरीदकर ले आता है। लेकिन तनवी
इन सब चीजों से भुलाने में नहीं आती है। उसे तो चाहिए बस अपनी मां। म
मिल जाएगी तो वह और किसी चीज की मांग नहीं करेगी। किसी-किसी दिन वह
फिर रोना शुरू कर देती है। उसकी रुलाई थमने का नाम ही नहीं लेती। कहती,
"तुम मुझसे झूठ बोल रहे हो। हां, मैं जानती हूं।"

ऐसे में दर्शन सिंह उसे कसकर अपनी गोद में दबा लेता है और उसी हालत मैं खुद भी रो देता है। वह इस तरह रोता है जिससे कि तनवीर देख न सके, उसकी रुलाई की आवाज सुन न सके।

सराय के मालिक ने एक दिन दूर से बाप और लड़की की यह आख-मिचौनी देखी थी। निकट आकर बोला, "क्यों मियां साहब, क्या कर रहे हो?—रो रहे हो?"

दर्शन सिंह इशारे से कहता है, "खामोश!"

सराय का मालिक इस सन्दर्भ में कुछ नहीं कहता। सिर्फ यही पूछता है, "वकील साहब ने क्या कहा?"

दर्शन सिंह कहता है, "आपको बाद में सारा कुछ बताऊंगा मियां साहब! अभी लड़की को जरा शान्त कर लूं।"

सराय के मालिक को जमील अहमद की सारी बातों की जानकारी हो गयी है। मगर उसे कैसे सांत्वना दे, यह उसकी समझ में नहीं आता। समझ जाता है, इसके पीछे अजीजुर्र रहमान की साजिश है। लेकिन इसका समाधान कैसे हो, यह बात उसके दिमाग में नहीं आती है।

दुनिया में हर तरह का आदमी रहता है। कोई अच्छा तो कोई बुरा। देश का
जब बंटवारा हुआ तो कुछ अच्छे लोग भारत छोड़कर पाकिस्तान चले गये, साथ
ी कुछ बुरे लोग भी पाकिस्तान छोड़कर भारत चले आए। जवाहरलाल को भारत
ल गया और जिन्ना को उसका पाकिस्तान।

लेकिन किसी को भी उस एक्स-रे प्लेट का पता नहीं चला जो बम्बई के
टर पटेल के पास था।

डॉक्टर पटेल ने जिन्ना को सावधान करते हुए कहा था, "आप इतनी मेहनत
करें मिस्टर जिन्ना। जरा आराम करें। आपके सीने की हालत ठीक नहीं है।
ट और शराब पीने की मात्रा में आपको कमी लानी है।"

जिन्ना साहब ने डॉक्टर पटेल की बातों पर ध्यान नहीं दिया। मिस्टर जिन्ना
वक़्त रहमत अली से कहा था, "वह सब गांजाखोरी का सपना है। पागल
पना के अलावा कुछ भी नहीं। वह नहीं चलेगा।"

वह पागल रहमत अली कहां गया ! वह तब इस धरती पर जीवित नहीं था। लेकिन बहुत दिनों के बाद जिन्ना साहब ने इस बात की चर्चा की तो ब्रिटिश राज ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

उन लोगों ने कहा, "यही तो सुयोग है। इस सुयोग को हाथ से जाने देने से काम नहीं चलेगा। हम किसी दिन भारत छोड़कर आएंगे तो उसे इस तरह छोड़कर आएंगे कि दोनों देश आपस में झगड़ा-टंटा कर लड़ते रहेंगे, हथियार खरीदने के लिए हमारे दरवाज़े पर हाज़िर होते रहेंगे।

और वह एक्स-रे प्लेट ? जिन्ना साहब के सीने का एक्स-रे प्लेट ?

अगर इस बात की जानकारी जवाहरलाल नेहरू को किसी तरह हो जाती तो ? तो फिर क्या होता ? 1947 ई० को 15 अगस्त को देश का बंटवारा होने के बजाय यदि उसे आगे बढ़ाकर नवम्बर महीने तक ले जाया जाता तो पाकिस्तान के प्रस्ताव को वे ज़रूर ही उसी क्षण रद्द कर देते। ऐसा होता तो दर्शन सिंह को भी जमील अहमद बनकर गुज़रानवाला की कचहरी नहीं जाना पड़ता और न ही हसीना की वापसी के लिए दरख़्वास्त देनी पड़ती।

दरअसल पाकिस्तान बनने का सारा श्रेय जिन्ना साहब को नहीं, बल्कि बम्बई के डॉक्टर जाल आर० पटेल को है। उसने उस एक्स-रे प्लेट का भण्डा फोड़ दिया होता तो पाकिस्तान बनाने का जिन्ना साहब का सपना आकाश-कुसुम में परिवर्तित हो गया होता।

आखिरकार बहुत कोशिश करने के बाद जमील अहमद के मुक़दमे की अगली तारीख तय की गई। गुजरानवाला कोर्ट के हाकिम साहब ने हसीना बेगम के नाम सम्मन जारी किया कि अमुक तारीख को उसे धर्मावतार के समक्ष उपस्थित होना है। उस दिन जमील अहमद की अर्ज़ी पर सुनवाई होगी और हसीना बीबी से जिरह की जाएगी।

पूरी कचहरी लोगों से ठसाठस भरी हुई थी।

उस दिन जमील अहमद तनवीर को गोद में लिए कचहरी आया था।

सराय के मालिक ने उसे यह सलाह दी थी। उसने कहा था, "आप अपनी लड़की को गोद में लिए कचहरी जाएं मियां साहब ! तभी मां का मन पसीजेगा। मां कभी अपने पेट की लड़की को देखकर झूठ बोल सकती है ? देखिएगा, तब हाकिम साहब आपकी अर्ज़ी स्वीकार कर लेंगे।"

जमील अहमद साहब ने ऐसा ही किया था।

हसीना एक तरफ़ गवाह के कठघरे में खड़ी है और दूसरी तरफ़ तनवीर को

मेरे से सिर दर्शन सिंह।

हाकिम ने दर्शन सिंह से पूछा, "इसे तुम पहचानते हो? यही तुम्हारी बीवी हसीना है? अच्छी तरह देख लो, फिर कहना।"

तब तक तनवीर की आँखें बेटे पर आ चुकी थीं।

वह चिल्ला उठी, "भाई जी, ओ भाई जी...।"

हसीना ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया।

दर्शन सिंह ने कहा, "हाँ हुजूर, यही मेरी हसीना बीवी है। मैंने इससे ही शादी की थी।"

तनवीर उस समय दर्शन सिंह की गोद से छूटकर माँ की तरफ जाने के लिए छटपटा रही थी। चिल्ला रही थी, "भाई जी, ओ भाई जी, तुम मेरी ओर देखो ऐ भाई जी...।"

हाकिम साहब ने अब हसीना बीवी से पूछा, "तुम भी पहचानती हो? इसकी ओर गौर से देखो।"

हसीना ने सिर उठाकर नहीं देखा। वह जिस तरह नीचे की ओर ताक रही थी, उसी तरह ताकती रही।

हाकिम ने दुबारा आदेश दिया, "बीबी, आप उठाकर इसकी ओर देखो।"

पीछे की तरफ लोगों की फुसफुसाहट होने लगी।

इस पर हाकिम साहब ने [illegible] आवाज की। सारा कमरा पुनः खामोशी में डूब गया।

"देखो, आपकी बच्ची, और ये कौन।"

हसीना ने अब सिर उठाया।

"इनसे तुम्हारी शादी हुई थी?"

हसीना क्या कहे, उसकी समझ में नहीं आया। [illegible]

[illegible]

यह सुनकर दर्शन सिंह को लगा कि उसके सीने की पसलियां टूटकर चूर-चूर हो गई हैं।

मिस्टर ग्रिफ़िथ कुछ देर के लिए चुप हो गए। उसके बाद बोले, "किसी देश के भाग्य के साथ खिलवाड़ करने की खातिर इंपेरियल पावर जितनी तरह की कूट-नीति अपना सकती है, उसे अमल में लाने में ब्रिटिश सरकार को तनिक भी हिचकिचाहट महसूस नहीं हुई। खासतौर से तब जब कि उसने देखा कि गांधी जी के हाथ से नेहरू और पटेल को छीनने में वह सफल हो गई है। तब गांधी जी उनके लिए मृतक के समान थे। गवर्नर जनरल माउन्ट वेटन ही उनके कर्त्ता-धर्त्ता विधाता थे। तब माउन्ट वेटन की बात पर ही नेहरू और पटेल उठते-बैठते थे। माउन्ट वेटन उन्हें जिस तरह नचा रहे थे, वे उसी तरह नाच रहे थे।

सो गांधी भले ही अब मृतक के समान हों, पर उनके पास अब भी आखिरी अस्त्र है। और वह है भूख हड़ताल। उसी हथियार को अमल में लाये।

दो देशों की संपत्ति के बंटवारे के संबंध में एक बखेड़ा पहले ही खड़ा हो चुका था। न केवल रिजर्व बैंक के रुपये-पैसे के बारे में, बल्कि कुर्सी-मेज, सैन्य सामन्त के संबंध में जो सब छोटे-मोटे मनोमालिन्य थे, उनका निबटारा भले ही किसी तरह हो गया, लेकिन पाकिस्तान के पांच सौ पचपन करोड़ रुपये की प्राप्य राशि के संबंध में नए सिरे से झमेला फिर से उठकर खड़ा हो गया।

जिन्ना साहब ने उस रक़म की मांग की। बोला, "यह हमारे हक का पैसा है। वह पैसा हमें देना ही पड़ेगा।"

लेकिन नेहरू और पटेल बोले, "हम वह पैसा नहीं देंगे!"

माउन्ट वेटन तब पाकिस्तान का कोई नहीं था। वह तो इंडिया का गवर्नर जनरल था।

उसने नेहरू से कहा, "आप वह पैसा पाकिस्तान को दे दें, क्योंकि वह पाकिस्तान की प्राप्य राशि है।

नेहरू ने कहा, "नहीं दूंगा।"

"क्यों नहीं दीजिएगा ?"

"अभी इतना अधिक रुपया देने की हालत में हम नहीं हैं।" नेहरू ने कहा।

मिस्टर पटेल का भी यह कहना था। अभी भारत की ऐसी स्थिति नहीं है कि इतना रुपया दे सके।

माउन्ट वेटन ने कहा, "यह तो वादा खिलाफ़ी की बात होगी।"

मिस्टर नेहरू ने कहा, "राजनीति और युद्ध के शब्दकोश में वादाखिलाफ़ी

नामक कोई शब्द नहीं है।"

इस पर लार्ड माउन्ट बेटन ने गांधी जी से बातें कीं।

सारी बात सुनने के बाद गांधी जी बोले, "यह क्या ? जवाहर और सरदार ने ऐसा कहा है ?"

"हां।" माउन्ट बेटन ने कहा।

गांधी जी ने पूछा, "आपने इन लोगों से क्या कहा ?"

कोर्ट के अन्दर दर्शन सिंह ने पूछा, "बोलो-बोलो, तनवीर तुम्हारी लड़की है या नहीं ?"

फिर भी हसीना ने कोई उत्तर नहीं दिया।

हसीना को देखकर लगा, वह बहुत ही भयभीत है। उसे ऐसा अहसास हुआ जैसे ससुराल के तमाम लोग दूसरे-दूसरे लोगों के स्वर में स्वर मिलाकर उसे धमकियां दे रहे हैं। कह रहे हैं : "बोलो-बोलो, हमने तुम्हें जो सिखाया है, वही बोलो। वरना हम तुम्हें जान से मार डालेंगे···।"

हसीना थर-थर कांप रही है। उसके शरीर का हर अंग जड़ अवश जैसा होता जा रहा है। मानो, वह एक ही क्षण में बेहोश होकर कठघरे के बीच गिर पड़ेगी।

"बोलो, यह तनवीर तुम्हारी लड़की है या नहीं ?"

माउन्ट बेटन उस समय भी गांधी जी पर आंख टिकाए हुए थे। पूछा, "कहिए, आप क्या कहना चाहते हैं ?"

दर्शन सिंह ने भी फिर पूछा, "क्यो, मेरी बात का उत्तर क्यो नहीं दे रही हो ?"

हसीना ने उसी तरह सिर झुकाए कहा, "नहीं।"

मिस्टर गांधी बोले, "ठीक है, पाकिस्तान को जिससे कि पाच सौ पचपन करोड़ रुपया मिल जाए, इसका इन्तजाम मैं करूंगा।"

माउन्ट बेटन ने पूछा, "आप कौन-सा इन्तजाम कीजिएगा ?"

मिस्टर गांधी ने कहा, "मैं आमरण अनशन करूंगा। ऐसे हालात में नेहरू और पटेल मेरी बात अमान्य नहीं कर सकेंगे।"

दर्शन सिंह तब भी सवाल कर रहा था, "कहो, यह तनवीर तुम्हारी लड़की है या नहीं ?"

हसीना की जबान से अब आवाज निकली। बोली, "नहीं।"

दूसरे ही दिन गांधी जी ने अपना ऐतिहासिक अन्तिम आमरण अनशन शुरू र दिया।

जवाहर लाल नेहरू और गांधी जी के बीच उसी दिन अलगाव का एक काला परदा गिर पड़ा। साथ ही, दुर्दिन का पूर्वाभास ताक-झांक करने लगा। पूरे देश में गांधी जी के विरुद्ध एक आन्दोलन छिड़ गया। गांधी जी तब आमरण अनशन कर रहे थे।

1948 ई० के जनवरी महीने की 13 तारीख, मंगलवार को ग्यारह बजकर पचपन मिनट पर गांधी जी का अनशन शुरू हुआ। उसके पहले वे अपना दैनंदिन भोजन समाप्त कर चुके थे। तव दिन के साढ़े दस बजे थे। हर रोज की तरह उन्होंने हाथ की वनी दो रोटियां, एक सेव, सोलह औंस बकरी का दूध और तीन खजूर खाए।

पंजाब से आए लाखों हिन्दुओं ने मुसलमानों के द्वारा छोड़कर चले गए मक़ानों और खाली की गई मसजिदों में शरण ली थी। तमाम उखड़े हुए हिन्दुओं में तव मुसलमानों के खिलाफ एक दवा हुआ आक्रोश भड़क उठा था। इस हालात में गांधी जी के अनशन ने पहली बार दुविधा और क्रोध का संचार किया। जिस मुसलमान धर्म के लोगों ने हमें विस्थापित और भिखमंगा वनाया है। हमारे लाखों आदमियों की हत्या की है, उन लोगों को पावना पांच सौ पचपन करोड़ रुपया चुकाना होगा ? हिन्दुओं के लिए गांधी जी को कोई दुश्चिन्ता नहीं है, कोई ममता नहीं है, हिन्दुओं के सगे-संवंधियों के लिए गांधी जी के दिल में कोई सहानुभूति या संवेदना नहीं है। गांधी जी की जाति होने के बावजूद हम पराए हो गए और मुसलमान ही हो गए उनके अपने आदमी ?

इतने दिनों से लोग मानते आए थे कि वे भारत के शुभाकांक्षी हैं, भारत की भलाई ही उनका लक्ष्य है। लेकिन अब देखने में आया कि वे पाकिस्तान के मित्र हैं और मुसलमानों की ही भलाई चाहते हैं।

यह तो बुरी वात है। यह तो हमारी इच्छा के विपरीत है। अतः अभी तुरन्त इसका कोई न कोई उपाय करना होगा। जो आदमी पाकिस्तान को पांच सौ पचपन करोड़ रुपया चुका देना चाहता है वह हमारा शत्रु है। उस शत्रु का चाहे जैसे भी हो हमें विनाश करना है। उस शत्रु का हमें खात्मा करना है।

धरती पर जितनी हत्याएं हुई हैं, उतनी ही आत्म-हत्याएं भी हुई हैं। इसके पहले सुकरात को ज़हर खिलाकर मारा गया है। वह हत्या राजा के द्वारा हुई है। उसके वाद क्रूस से बेधकर ईसा मसीह को मारा गया। उनकी हत्या दूसरे संप्रदाय के लोगों ने की है।

और आत्महत्या ?

बतौर एक सरकारी आंकड़े के दुनिया में हर रोज 7351 आदमी आत्म-

हत्या की कोशिश करते हैं। उनमें से मुट्ठी-भर आदमी ही ज़िन्दा रहते हैं। 1910 ई० में विश्व-विख्यात लेखक लियो तोलस्तॉय ने एक तरह से आत्महत्या ही की थी। इसके पहले फ़्रांस के लेखक ज्यां ज्याक रूसो ने अनेकों की तरह उन्मादग्रस्त होकर आत्म-हत्या की थी। विख्यात लेखक स्टिफ़ ज़्यूग ने ज़हर खाकर सपत्नीक आत्म-हत्या की थी। मरने के पहले वे लिख गए थे, यह पृथ्वी आदमी के रहने के उपयुक्त नहीं है। दुनिया के बहुत सारे प्रतिभाशाली व्यक्तियों के मन की बात यही है।

इस हत्या या आत्महत्या का ठीक-ठीक हिसाब रखना संभव नहीं है।

लेकिन अब ?

अब क्या गांधी की बारी है ? कौन जाने !

गांधी जी के छोटे लड़के देवदास गांधी ने अपने पिता को लिखा : ज़िन्दा रहने पर आप जिस मकसद को मुकम्मल कर सकते हैं, मरने पर आप उस मकसद को मुकम्मल कैसे कर सकेंगे ?

दर्शन सिंह ने सराय के मालिक का एक-एक पैसा चुकाते हुए कहा, "चलता हूं मियां साहब ! अदाब।"

सराय के मालिक ने पूछा, "अब आप कहां जाइएगा ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "और कहा जाऊंगा ! वापस चला जाऊंगा गुरुदासपुर के अपने उसी मकान में।"

"औरतों के चक्कर में अब कभी नहीं पड़िएगा मियां साहब, वे आदमी को बर्बादी के खड्ड में ढकेल देती हैं।" सराय के मालिक ने कहा, "आपने डेढ़ हज़ार रुपया देकर उसे खरीदा, गुंडों के हाथ से बचाकर उसे अपनी घरवाली का दर्जा दिया और आखिर में उसी औरत ने आपके साथ नमक हरामी की !"

बाहर सड़क पर निकलने के बाद दर्शन सिंह समझ नहीं सका कि वह कहां, किस ओर कदम बढ़ा रहा है। उसे अपने मकान का भी ठीक-ठीक पता याद नहीं आ रहा।

छोटी-सी बच्ची तनवीर की आंखें रात-भर रोते रहने के कारण सूज गई हैं। इसके एक दिन पहले अदालत के अन्दर क्या वाकया हुआ है, उसकी समझ में नहीं आया था। दर्शन सिंह से बस इतना ही पूछती रही, "झाई जी हमारे पास क्यों नहीं आई दार जी ? क्यों नहीं आई झाई जी ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "तुम्हारी झाई जी ने बताया कि वह बाद में आएगी। तुमने सुना नहीं ?"

"बाद मे आएगी ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "हां। तुमने सुना नहीं कि तुम्हारी झाई जी ने कहा, वह बाद में आएगी ?"

तनवीर ने कहा, "झाई जी ने मुझे एक बार भी गोद में क्यों नहीं लिया दार जी ? मैंने कौन सी ग़लती की है ?"

अपनी बात का जवाब न पाकर तनवीर ने पुनः रोना शुरू कर दिया। कहने लगी, "झाई जी ने मुझे एक बार भी गोद में क्यों नहीं लिया दार जी ?"

सड़क पर अनगिनत आदमी चल रहे हैं, गाड़ियां चल रही हैं ! उसके चारों तरफ़ कितनी अजीब आवाजें हो रही हैं ! लेकिन अभी दर्शन सिंह न कुछ देख पा रहा है और न सुन पा रहा है। उसके कान में आवाज़ नहीं पहुंच रही है।

"कहो, यह तुम्हारी लड़की है या नहीं ? बोलो, है या नहीं !"

तब भी अदालत के तमाम लोग हसीना की ओर ताक रहे थे।

"बोलो, बोलो···?"

"जानते हो, अबकी अपने घर के आंगन में अमरूद का एक पेड़ लगाऊंगी। और एक अनार का पेड़···।"

"बताओ, मेरी गोद में जो है वह तुम्हारी लड़की है या नहीं ?"

एकाएक दर्शन सिंह को खयाल आया था कि वह अदालत के कठघरे में नहीं बल्कि एक बाजार के बीच से होकर गुज़र रहा है। हसीना कहां गई ? हाकिम साहब कहां गए ? उसका वकील कहां चला गया ? फिर वह क्या पागल हो गया है ?

"झाई जी ने मुझे गोद में क्यों नहीं लिया दार जी ? मैंने कौन-सी ग़लती की है ?"

कब शाम उतर आई, दर्शन सिंह को इसका पता ही नहीं चला। सामने एक कपड़े की दुकान थी। दुकान के सामने सिले-सिलाए सलवार कुरते टंगे हुए हैं।

दर्शन सिंह ने दुकान के सामने जाकर पूछा, "मेरी इस लड़की की माप का कुरता-सलवार है ?"

दुकानदार बोला, "क्यों नहीं रहेगा मियां साहब ? है—यह देखिए।"

दर्शनसिंह ने कहा, "बहुत ही कीमती सलवार-कुरता चाहिए जनाब। कीमती···।"

दर्शन सिंह की बात सुनकर दुकानदार खुश होकर बोला, "कितनी कीमत तक का चाहिए ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "कीमत के बारे में नहीं सोचें। बस, मेरी लड़की को पसन्द होना चाहिए।"

ढेर सारा पैसा देकर दर्शन सिंह ने अपनी लड़की के लिए दामी पोशाक ख़रीदी। उसके बाद देखा, बग़ल में ही एक जेवरात की दुकान है।

तनवीर इस बीच नया सलवार-कुरता पहन मां का शोक भूल चुकी है।

दर्शन सिंह ने तनवीर से पूछा, "तुम गहने लोगी बेटी !"

गहना ! कौन ऐसी लड़की है जो गहना पहनना नहीं चाहती ?

बोली, "तुम मुझे गहना खरीद दोगे दार जी ? गहना पहनना मुझे बहुत-बहुत अच्छा लगता है।"

दोनों हाथों के लिए एक जोड़ा कंगन दर्शन सिंह ने सत्तर-अस्सी रुपये में खरीदा। कंगन पहन तनवीर बार-बार अपने हाथों को देखने लगी।

बोली, "मैं बहुत ही सुन्दर दिख रही हूं दार जी ?"

दर्शन सिंह ने प्यार करते हुए लड़की को कसकर अपनी बांहों में भर लिया और बोला, "हां, तुम बहुत ही खूबसूरत दिख रही हो। बताओ, और क्या लोगी ? तुम्हें और कुछ लेने की इच्छा हो रही है ?"

तनवीर बोली, "तुम मुझे और कुछ खरीद दोगे ?"

दर्शन सिंह बोला, "तुम जो-जो चाहोगी, खरीद दूंगा। जूता लोगी ?"

"हां, जूता लूंगी।" तनवीर बोली।

जूते की एक दुकान में दस रुपये में तनवीर के लिए एक जोड़ा जूता भी खरीद दिया। जूता पाकर तनवीर बहुत ही खुश हुई।

सलवार-कुरता, सोने के कंगन और जूते पाकर तनवीर उस समय मां की बात बिलकुल भूल गई। बोली, "दार जी !"

तनवीर अपने बाप से लिपट कर बोली, "तुम बहुत ही अच्छे हो दार जी ! बहुत ही अच्छे।"

दर्शन सिंह बोला, "तुम और कुछ लोगी बेटी ?"

तनवीर बोली, "तुम मुझे और भी चीजें खरीद दोगे ?"

"हां।" दर्शन सिंह ने कहा, "आज तुम जितनी भी मांगोगी, मैं खरीद दूंगा।"

तनवीर ने पूछा, "क्यों दार जी, आज तुम्हारा क्या है ?"

दर्शन सिंह ने कहा, "आज तुम्हारी सालगिरह है बिटिया ! लगता है, तुम्हें मालूम नहीं है।"

"अच्छा, यह बात है। लगता है इसी वजह से तुमने मेरे लिए सलवार-कुरता खरीद दिया, सोने के कंगन और जूते खरीद दिए।"

दर्शन सिंह अब तनवीर के साथ एक होटल के अन्दर गया। बहुत ही खूबसूरत-सा होटल। अन्दर कुर्सी-मेज पर बैठे बहुत सारे लोग खाना खा रहे हैं। दर्शन सिंह भी तनवीर के साथ खाली मेज-कुर्सी पर बैठ गया। उसके बाद होटल की थाली में कीमती और अच्छी-से अच्छी खाने पीने की चीजें लाने का आदेश दिया।

दर्शन सिंह बहुत दिनों से ठीक से खाना नहीं खा सका था। यहां आने के बाद से तनवीर को भी खाना नसीब नहीं हुआ था। आज उसकी सालगिरह होने के कारण ही उसके पिता ने अच्छे भोजन का इन्तजाम किया है। लेकिन तनवीर इतनी-सी है, वह इतना सारा खाना कैसे खाएगी ?

थोड़ी देर बाद ही उसने कहा, "अब खाया नहीं जा रहा है दार जी। तुम खा लो।"

दर्शन सिंह ने कहा, "मेरा भी पेट भर गया है। मैं भी अब खा नहीं सकूंगा। तुम उन चीजों को पड़े रहने दो।"

होटल के मालिक को बिल का पैसा चुकाकर वह उठकर खड़ा हो गया। शाम लुढ़कते-लुढ़कते रात में परिवर्तित हो चुकी है। तनवीर को गोद में ले दर्शन सिंह फिर सड़क पर निकल पड़ा। पंजाब की रात। उस पर चारों तरफ रोशनी की जगमगाहट। सभी दुकानों के सामने जिन्ना साहब की तसवीर पर फूलों की माला टंगी हुई है।

कई दिनों से गांधी जी के अनशन का सिलसिला चल रहा है। 13 जनवरी, 1947 को इसकी शुरुआत हुई थी। उसके बाद अब छह दिन बीत चुके हैं। बिड़ला भवन के सामने एक खटिया पर थके-मांदे गांधी जी लेटे हुए हैं। उनकी प्रार्थना-सभा में भानु गांधी गीता का पाठ करती है। सभा में हर रोज़ बहुत सारे लोग इकट्ठे होते हैं।

उस दिन मानु बोली, "देखिए बापू, सरदार जी आए हैं।"

सच, सरदार पटेल ही आए थे। उन्होंने झुककर गांधी जी को प्रणाम किया। पूछा, "आप कैसे हैं बापू ?"

गांधी जी ने कहा, "तुम कैसे हो ?"

सरदार पटेल ने कहा, "आपने अनशन किया है। ऐसी हालत में हम कैसे अच्छे रह सकते हैं ?"

गांधी जी ने कहा, "मैंने क्यों अनशन किया है, तुम्हें इसकी जानकारी नहीं है ?"

सरदार पटेल ने कहा, "लेकिन बापू, आप ही बताएं कि अपने देश के इन दुर्दिनों और बदतर हालत में पांच सौ पचपन करोड़ रुपया हम पाकिस्तान को कैसे दें ?"

गांधी जी कुछ नहीं बोले। बहुत देर तक सरदार पटेल के चेहरे की ओर ताकते रहे। उसके बाद बोले, "सरदार, पहले तो तुम ऐसे नहीं थे।"

उसके बाद करवट बदलकर लेट गए। दुबारा सरदार पटेल की ओर मुड़कर नहीं देखा। आहिस्ता-से सरदार पटेल वहां से उठकर चले गए।

लेकिन गांधी जी को देखने वालों की कमी नहीं है। अनगिनत लोग लगातार उनके पास आने की कोशिश कर रहे हैं। वे उनके दर्शन करना चाहते हैं और उन्हें प्रणाम कर चले जाते हैं।

एक दिन चारों तरफ के शोरगुल में वृद्धि हो गई। संपूर्ण दिल्ली असंतोष की आवाज़ से आंदोलित हो उठी है। आवाज़ गांधी जी के कानों में भी पहुंची। पंजाब से लोग विस्थापित होकर दिल्ली पहुंच रहे हैं, असंतोष की मात्रा सबसे ज्यादा उन्हीं

के दिल में है। कनाट सर्कस से शुरू कर दिल्ली के चांदनी चौक इलाके तक स्थानों में विस्थापितों की भीड़ है, वहां के किसी भी व्यक्ति का मन गांधी आमरण अनशन से बेचैन नहीं है। कभी भी अनुताप का कोई नामोनिशान नहीं कोई भी यह नहीं पूछता कि गांधी जी कैसे हैं। सभी कहते हैं, वह बुड्ढा तो दुख-कष्ट के बारे में तनिक भी नहीं सोचता। मुसलमानों के दुख-दर्द के प्रति उसमें ममता है।"

गांधी जी के निकट ही उनके सेक्रेटरी बैठे हुए थे। पूछा, "प्यारेलाल, यहां यह सब किस चीज की आवाज हो रही है ?" प्यारेलाल ने जवाब दिया, "बहुत सारे लोग नारे लगा रहे हैं।" "कितने लोग हैं ? बहुत बड़ा दल है क्या ? वे लोग कौन हैं ?" प्यारेलाल ने कहा, "सब कुछ गंवाकर पंजाब में आए हुए लोगों का दल है।" "वे लोग क्या कह रहे हैं ?"

प्यारेलाल क्या उत्तर दें, समझ नहीं सके। थोड़ी देर तक सोचते रहे। उसके बाद बोले, "वे लोग कह रहे हैं, बुड्ढा मर क्यों नहीं जाता···।"

गांधी जी ने उनकी बातें सुनीं परन्तु अपनी कोई राय जाहिर नहीं की। उसके बाद करवट लेकर लेट गए।

उसके बाद एक दिन सहसा नेहरू का आगमन हुआ। गांधी जी की खटिया पर झुककर बोले, "बापू, हमने एक शांति कमेटी का निर्माण किया है। देश के अन्दर जितनी भी पार्टियां हैं, उनके नेताओं ने हस्ताक्षर किए हैं।"

गांधी जी ने पूछा, "आर० एस० एस० पार्टी ने हस्ताक्षर किया है ?"

पंडित जी बोले, "यह देखिए।"

प्यारेलाल जी बगल में ही थे। वे शांति कमेटी का विवरण पढ़ने लगे। सभी ने स्वीकार किया है, भारत में सिर्फ हिन्दू ही नहीं रहेंगे। यहां हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी वगैरह जितने भी धर्म के अनुयायी हैं, उन्हें एक जैसा अधिकार प्राप्त होगा।

यह सुनकर गांधी जी को प्रसन्नता हुई। बोले, "पाकिस्तान का जो पचपन करोड़ रुपया पावना है उसे चुका दोगे तो ?"

पंडित जी बोले, "हां, मैं वादा करता हूं कि चुका दूंगा।"

सुशीला नैयर उस समय संतरा छीलकर रखे थी। उसे गांधी जी के मुंह में दिया। 18 जनवरी, 1948 में गांधी जी ने अनशन व्रत तोड़ा। आकाशवाणी समाचार दुनिया भर में प्रसारित कर दिया गया।

प्रिंसिप अब रुके। उसके बाद बोले, "तब सर्दियों का मौसम था।

भारत में शीघ्र ही शाम उतर आती है। दर्शन सिंह तनवीर को लिए पैदल चल रहा है। वह किधर जा रहा है, इसका उसे खयाल नहीं है। अचानक दूर एक रेलवे स्टेशन दिख पड़ा।

तनवीर ने कहा, "दारजी, मैं रेलगाड़ी पर चढ़ूंगी।"

दर्शन सिंह के कानों में लड़की की बात नहीं पहुंची। उस वक़्त भी उसके कान में हसीना के शब्द गूंज रहे थे—"नहीं-नहीं, नहीं-नहीं···।"

हर बात के उत्तर में हसीना ने सिर्फ़ 'ना' ही कहा है। उसने कहा है, वह जमील अहमद को नहीं पहचानती है। वह दर्शन सिंह को नहीं पहचानती है, वह तनवीर को नहीं पहचानती है।

फिर तुमने भारत में मुझसे क्यों कहा था कि पाकिस्तान जाने के बाद तुम एक-दो दिन के अंदर ही लौटकर भारत चली आओगी ! क्यों तुमने कहा था कि गुरुदास पुर के अपने घर के आंगन में अमरूद का एक पेड़ लगाओगी ? क्यों कहा था कि आंगन में एक अनार का पेड़ लगाओगी ?

वह सब बात अब तुम क्यों भूल गई ?

क्यों तुमने अपने वचन की रक्षा नहीं की ? क्यों तुम मुझे पहचान नहीं सकीं ? क्यों तुम अपनी तनवीर को पहचान नहीं सकीं ? तनवीर तो तुम्हारी लड़की है। उसने कौन-सी ऐसी ग़लती की है कि तुम उसे भी नहीं पहचान सकीं ?

तनवीर ने कहा, "दार जी, वह देखो, एक रेलगाड़ी आ रही है।"

अब दर्शन सिंह को तनवीर की बातें सुनाई पड़ीं। ग़ौर से देखा, दूर एक गोलाकार प्रकाश का विन्दु दिखाई पड़ रहा है। वह प्रकाश तीव्र गति से उन्हीं लोगों की ओर आ रहा है।

"दार जी, मैं उस रेलगाड़ी पर चढ़ूंगी।"

दर्शन सिंह तनवीर को छाती से कसकर दबाए, प्लेटफ़ार्म से होता हुआ सामने की तरफ़ बढ़ने लगा···।

तब तक ट्रेन फुंफकारती हुई एकबारगी उन लोगों के सामने आ चुकी थी। दर्शन सिंह ने अब देर नहीं की। तनवीर को लिए वह उसी ट्रेन के सामने कूद पड़ा। और, तत्क्षण चारों तरफ़ से लोगों की आवाज़ आने लगी—"गया, गया, गया···।"

मैंने कहा, "उसके बाद ? आप खामोश क्यों हो गए ? बताइए, इसके बाद क्या हुआ ?" लीबिया के बेनगाजी शहर में मिसेज सुलताना के मुंह से कहानी सुनते-सुनते मिस्टर एडमंड ग्रिफ़िथ ने पूछा, "उसके बाद क्या हुआ ?"

उसके बाद ? उसके बाद का भी तो उसके बाद होता है। दिल्ली में गांधी जी भी उसी समय अपनी संध्या-सभा में रामधुन सुन रहे थे—

रघुपति राघव राजाराम
सबको सन्मति दे भगवान।

तत्क्षण कहीं किसी एक कोने से एक गोली आकर गांधी जी के सीने में लगी और वे लुढ़ककर गिर पड़े गिरने के दौरान उनके मुंह से सिर्फ एक ही बात निकली —"हे राम"....।

मिसेज सुलताना बोली, "जानते हैं गोली किसने चलाई थी ?"

मिस्टर ग्रिफिथ बोले, "जिस व्यक्ति ने गोली चलाई थी, उसे तो फांसी पर चढ़ाया जा चुका है।"

मिसेज सुलताना बोली, "यही वजह है कि मैं आपको भारत जाने को कह रही हूं। आप यहां क्यों आए हैं ? आप इंडिया जाइए, पाकिस्तान जाइए, बांग्ला देश जाइए। किताब लिखकर उनकी बातों से सारी दुनिया को परिचित कराइए।"

"उसके बाद दर्शन सिंह और तनवीर का क्या हुआ ?"

मिसेज सुलताना ने कहा, "गांधी जी की जिसने हत्या की है, उसी ने दर्शन सिंह की भी हत्या की है।"

"मतलब ?"

मिसेज सुलताना ने कहा, "अंग्रेजों को बाध्य होकर जिन देशों को छोड़कर जाना पड़ा है, उन देशों को वे दो-तीन टुकड़ों में बांट देने के बाद ही वापस गए हैं। पहले जिस देश को उन्हें छोड़ना पड़ा था वह है भारत। उसे चार-पांच भागों में बांटने के बाद ही वे स्वदेश लौटे हैं। उसके बाद वे ईजिप्ट, वियेतनाम, कोरिया, मलेशिया, निकारागुआ और फ्रांक लैंड, लीबिया छोड़कर गए हैं। तमाम देशों की बर्बादी करने के बावजूद उनकी आशा पूरी नहीं हुई है। 1952 ई० में वे मिस्र के बादशाह फारुख की रक्षा नहीं कर सके। 1971 ई० में पाकिस्तान के याह्या खां की रक्षा नहीं कर सके, 1978 ई० में ईरान के शाह की भी रक्षा नहीं कर सके, 1984 ई० में भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की रक्षा नहीं कर सके और 1985 ई० में फिलिपाइन्स के प्रेसिडेंट मार्कोस को भी नहीं बचा सके। क्यों नहीं बचा सके, इसका कारण जानते हैं ? एक आंकड़ा प्रस्तुत करते ही बात समझ में आ जाएगी —पचास के दशक में ये देश उस देश से बंदूक-राइफल मंगाने में तीन प्रतिशत खर्च करते थे। अब वही रकम बढ़कर 16 प्रतिशत हो गई है। इन देशों को छोड़कर चले जाने से उनकी आमदनी में वृद्धि हुई है। हम लोगों की क्या हालत है ? गांधी और दर्शनसिंह की हत्या करने से उन्हें लाभ ही हुआ है। न जाने, अब किसकी बारी है ! अब किन लोगों के सिर पर उनका कुठार गिरेगा ?"

"लेकिन तनवीर ? तनवीर का अन्ततः क्या हुआ ? वह भी क्या दर्शन सिंह की

तरह ही ट्रेन से कुचलकर मर गई ?"

मिसेज सुलताना ने कहा, "मैं ही वह तनवीर हूं। अब्बाजान जब दिल्ली का बड़ी मसजिद में नाम बदलकर जमील अहमद हो गए तो मेरा नाम भी बदलकर सुलताना आयशा रखा गया था। अब्बा ट्रेन के पहिए के नीचे कुचलकर मर गए। लेकिन पता नहीं कैसे मैं छिटककर दूर गिर पड़ी और जिन्दा रह गई थी। उसके बाद रावलपिंडी के एक भले आदमी ने अपने घर ले जाकर सगी बेटी की तरह मेरा लालन-पालन किया था।

"और आपकी मां ? हसीना बेगम ?"

मिसेज सुलताना ने कहा, "नहीं, उनसे मेरी फिर कभी मुलाकात नहीं हुई। मुझसे किसी तरह मुलाकात न हो सके, इस उद्देश्य से अजीजुर रहमान के परिवार के सदस्यों ने अम्मी को हमेशा के लिए घर के अन्दर बंदी बनाकर रख छोड़ा था।"

अब एयर लाइंस के लाउड स्पीकर से घोषणा की गई—कलकत्ता का फ्लाइट नंबर सेवन वन सेवन रेडी है। पैसेंजर कृपया अन्दर चले आएं।

मिस्टर ग्रिफ़िथ उठकर खड़े हो गए और बोले, "भारत आने के बाद एक मज़ेदार चीज देखने को मिली। जिस आदमी के कारण अंग्रेजों को बाध्य होकर भारत छोड़ना पड़ा, अगर वह आदमी जिन्दा होता तो इंडिया का विभाजन चार-पांच टुकड़ों में नहीं होता, उस आदमी की यादगार कहीं भी देखने को नहीं मिली। किसी पुस्तक में नाम का उल्लेख नहीं है—यह है आप लोगों का इंडिया।

"वह कौन है ?" मैंने पूछा।

मिस्टर ग्रिफ़िथ ने कहा, "सुभाष चन्द्र बोस। अपनी 'द लास्ट कोलॉनी' उपन्यास में मैं उस बात का विस्तार से उल्लेख करूंगा।"

० ० ०